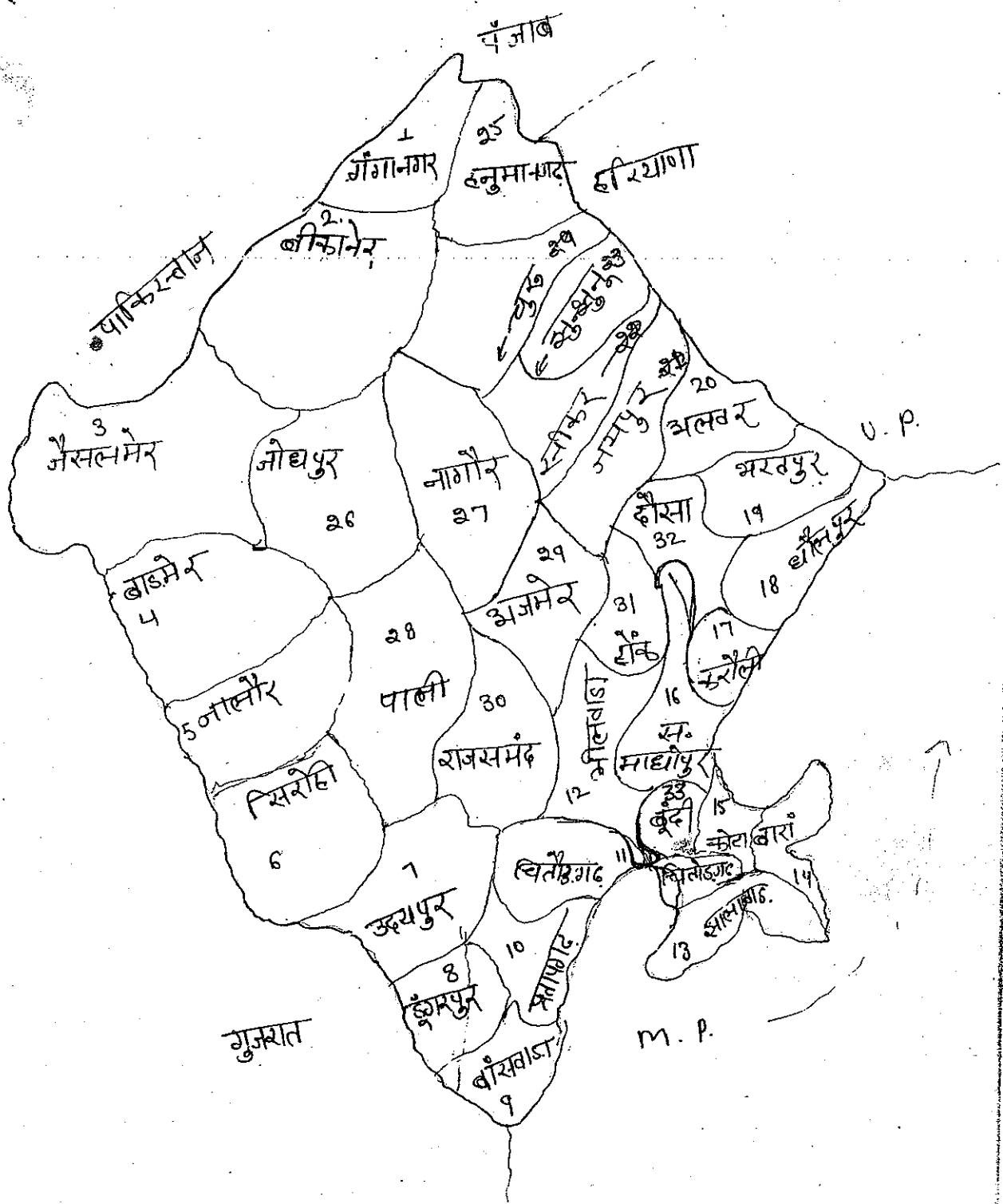


20/1/14



* राजस्थान का भूगोल *

→ राजस्थान का नामकरण →

राजस्थान के लिए सर्वप्रथम 'जॉर्ज थॉमस' के द्वारा 1800 ई. में 'राजपुताना' शब्द का प्रयोग किया गया।

- जिसका उल्लेख हमें विलियम फ्रेंकलिन की पुस्तक 'मिलिट्री मैम्बायर्स ऑफ़ मिस्टर जॉर्ज थॉमस (1805)' में मिलता है।

^{gmp.}
→ राजस्थान के लिए सर्वप्रथम 'राजस्थान' शब्द का प्रयोग 'कर्नेल जेम्स लॉड' के द्वारा 1824 A.D. में अपनी पुस्तक 'द एनलस एण्ड एरीक्यूरीज ऑफ़ राजस्थान' में मिलता है।

हमारे राज्य के लिए सर्वप्रथम राजस्थान शब्द का प्रयोग 25 March 1948 (राजस्थान संघ) को किया गया।

'30 March 1948' को लगभग राजस्थान का एकीकरण पूर्ण हो गया। इस दिन राजस्थान की चार बड़ी रियासतें → जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर व बीकानेर को वृहत राजस्थान में मिलाया।

- इसी कारण 30 March को राजस्थान स्थापना

दिवस के रूप में मनाया जाता है।

'26 January 1950' को हमारे संविधान में हमारे राज्य के लिए 'राजस्थान' नाम दिया गया।

'1 November 1956' को राजस्थान का एकिकरण पूरा हुआ और इस दिन राजप्रमुख के पद को समाप्त किया गया एवं 'राज्यपाल' का पद गठित किया गया।

Imp राजस्थान का प्रथम राज्यपाल →

सरदार गुरुमुख निहाल सिंह



Imp → महाराजा स्वर्ण मानसिंह II ने शपथ दिलवाई

* राजस्थान की आकृति →

विषमकीर्णीय चतुर्भुजाकार (पतंगाकार)
(पतंग के समान)

राजस्थान भारत के उ.प. दिशा में स्थित है, जिसका कुल क्षेत्र 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है, जो कि भारत के कुल क्षेत्रफल का 10.41% (1/10 भाग) है।

Imp - राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है, जो कि 1 नवम्बर 2000 को M.P. से छत्तीसगढ़ के अलग होने

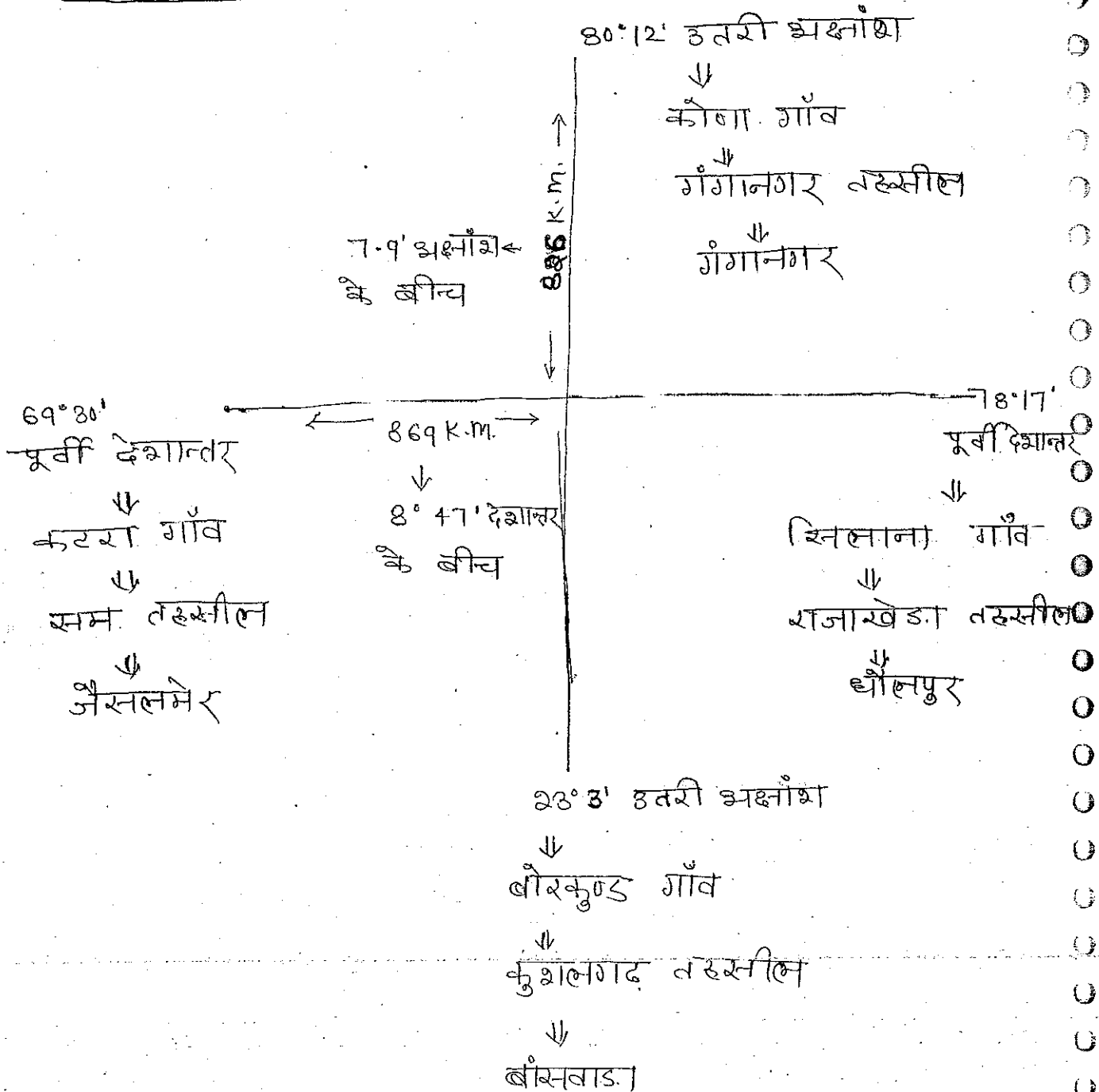
* तेलंगाना → 2 June 2014 को बना

* 9 नवम्बर → उतराखण्ड - U.P. से अलग

* 15 नवम्बर → झारखण्ड →
बिहार से अलग

* 1 नवम्बर → छत्तीसगढ़ →
M.P. से अलग

* राजस्थान की स्थिति →



→ $30^{\circ} 12' - 23^{\circ} 8' = \underline{7^{\circ} 9'}$ अक्षांश

1 डिग्री =
60 मिनट

→ $78^{\circ} 17' - 69^{\circ} 30' = \underline{8^{\circ} 47'}$ देशान्तर

↓

77°

$69^{\circ} 30'$

$8^{\circ} 47'$

$8 \times 4 = 32$ मिनट

$47 \times 4 = 188$ से.

राज. में देशान्तर के
हिसाब से समय →

$= 32 + 3.8 = 35.8$ मिनट का
समय

* राजस्थान का विस्तार →

→ कुल रथलीय सीमा = 5920 K.M.

\downarrow
1070 K.M.

↓

अन्तर्राष्ट्रीय सीमा

↓

Imp. 'रेड क्लिफ रेखा'

↓

• गंगानगर

• बीकानेर

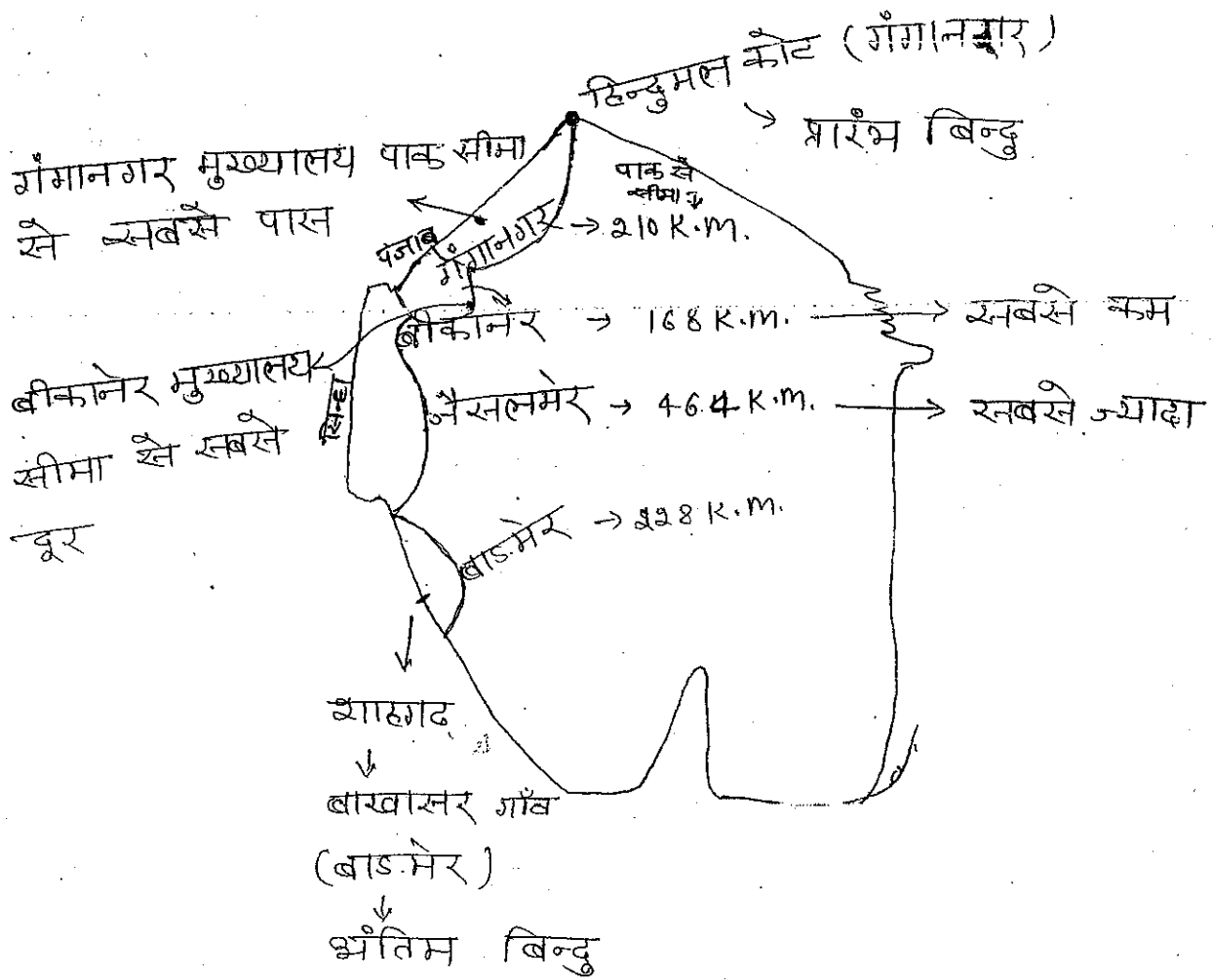
• जैसलमेर

• बाड़मेर

\downarrow
4850 K.M.

↓

अन्तर्राज्यीय सीमा



पाकिस्तान →

सिन्धु राज्य ⇒

मीरपुर → राज. के साथ सबसे कम सीमा

खैरपुर → सबसे दूर मुख्यालय

पंजाब राज्य ⇒

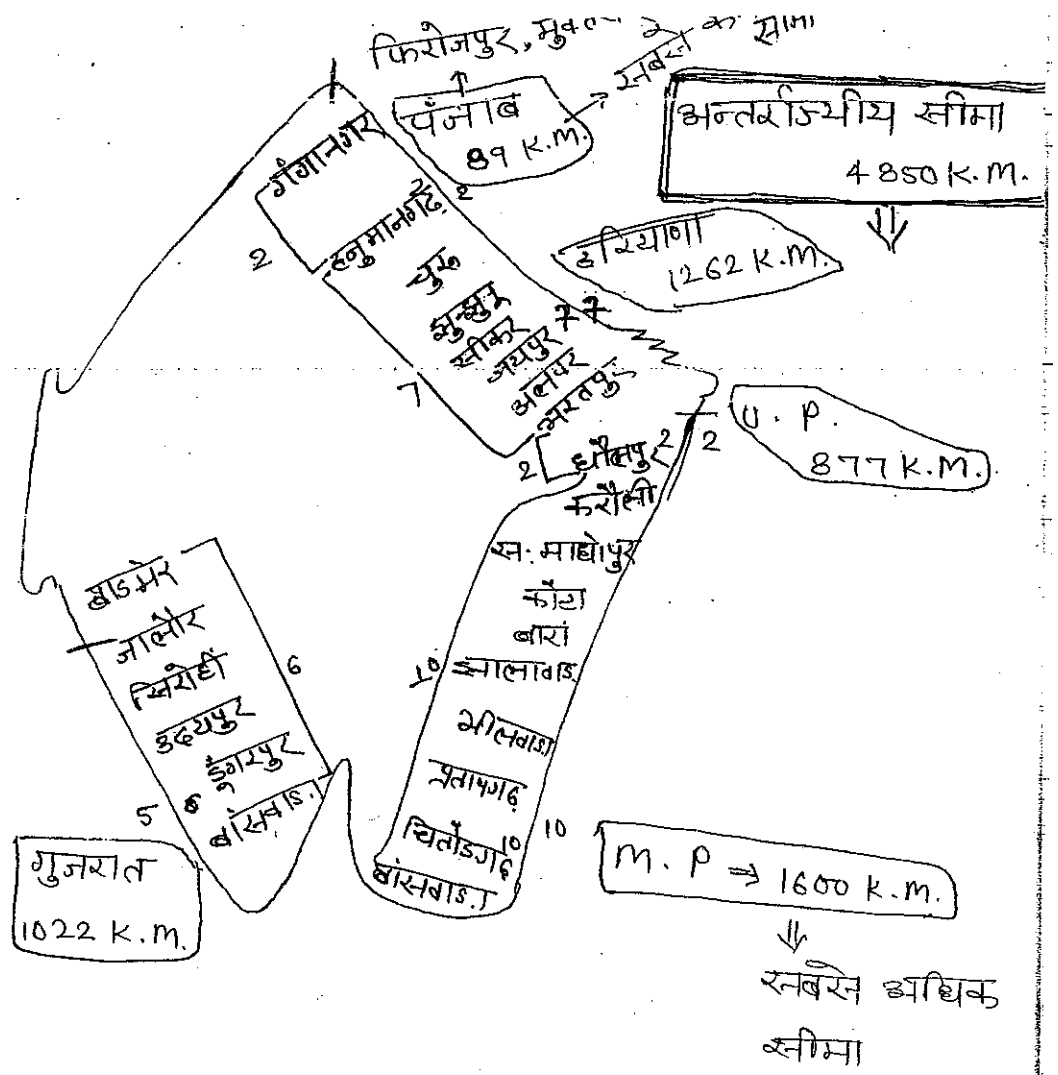
बहावलपुर

↓
- राजस्थान सीमा के सबसे नजदीक

मुख्यालय

- बहावलपुर की राजस्थान के साथ

सबसे ज्यादा सीमा।



* हरियाणा के, सीमा पर निम्ने ⇒

1. रेवाड़ी
2. गुडगाँव
3. महेन्द्रगढ़
4. भिवानी
5. हिसार
6. सिरसा
7. फतेहाबाद

* U.P. के सीमा पर स्थित जिले ⇒

भागलपुर, मधुपुर

* M.P. के सीमा पर स्थित जिले ⇒

1. झाबुआ
2. रतलाम
3. मन्डलौर
4. श्यामपुर
5. नीमच
6. राजगढ़
7. गुना
8. छिवपुर
9. झाँजापुरा
10. मुरैना

* गुजरात के जिले ⇒

1. कच्छ
2. बनासकांठा
3. रनाबरकांठा
4. दाहोद
5. पंचमहल

* पंजाब के जिले ⇒

1. फिरोजपुर
2. मुक्तसर

1. पंजाब से सर्वाधिक सीमा \Rightarrow हनुमानगढ़
न्यूनतम सीमा \Rightarrow गंगानगर

2. हरियाणा \rightarrow सर्वाधिक सीमा \rightarrow हनुमानगढ़
न्यूनतम " \rightarrow मथपुर

3. U.P. \rightarrow सर्वाधिक सीमा \rightarrow भरतपुर
न्यूनतम " \rightarrow धौलपुर

4. M.P. \rightarrow सर्वाधिक सीमा \rightarrow झांझाबाद
न्यूनतम " \Rightarrow भीमबादा

5. गुजरात \rightarrow सर्वाधिक सीमा \rightarrow उदयपुर
न्यूनतम " \Rightarrow बाडमेर

Note

Imp. 1. पूरी अन्तर्राज्यीय सीमा में सर्वाधिक सीमा झांझाबाद की एवं सबसे कम बाडमेर की लगती है।

2. हनुमानगढ़ \Rightarrow पंजाब, हरियाणा

भरतपुर \Rightarrow हरियाणा व U.P.

धौलपुर \rightarrow U.P. व M.P.

बांसवाडा \rightarrow M.P. व गुजरात

Imp राजस्थान के दो जिले ऐसे हैं, जो अन्तर्राष्ट्रीय सीमा एवं अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से लगते हैं →

— (A) गंगानगर

— (B) बाड़मेर

राजस्थान के अन्तर्वर्ती जिले → 8

1. जोधपुर
2. नागौर
3. अजमेर
4. टोंक
5. बूंदी
6. पाली
7. राजसमन्द
8. दौसा

→ वर्तमान राजस्थान में कुल 33 जिले हैं →

$$\begin{array}{c} \text{राज्यों से} \quad \leftarrow 23 + 4 + 8 - 2 = 33 \\ \text{पाक से} \quad \quad \quad \downarrow \\ \text{राज्य व पाक दोनों से} \end{array}$$

'1. Nov. 1956' → अजमेर → 26 वाँ जिला (जयपुर से अलग)

15. April 1982 → धौलपुर → 27 वाँ जिला (भरतपुर से)

10. April 1991 → (A) बारा → 28 वाँ " (कोटा से)

(B) दौसा → 29 वाँ " (जयपुर से)

(C) राजसमन्द → 30 वाँ " (उदयपुर से)

* 12 July 1994 → हनुमानगढ़ → 31वां जिला → [गंगानगर से
अलग]

* 19 July 1997 → करौली → 32वां जिला (शुवाहिमाहोपुर
+ भरतपुर से
अलग)

Imp 26 January 2008 → प्रतापगढ़ → 33वां जिला →
[उदयपुर
वांस्वाडा
चित्तौड़ से]

संभाग व्यवस्था

राजस्थान में सर्वप्रथम संभागीय व्यवस्था को
'1949 A.D.' में प्रारंभ किया गया ।

- इस समय राजस्थान में केवल '5 संभाग' थे ।

1. Nov. 1956 A.D. को एकीकरण घुस होने पर 6वां
संभाग 'अजमेर' को बनाया गया ।

Imp 1962 A.D. में 'मोहनलाल सुखाड़िया' द्वारा संभागीय

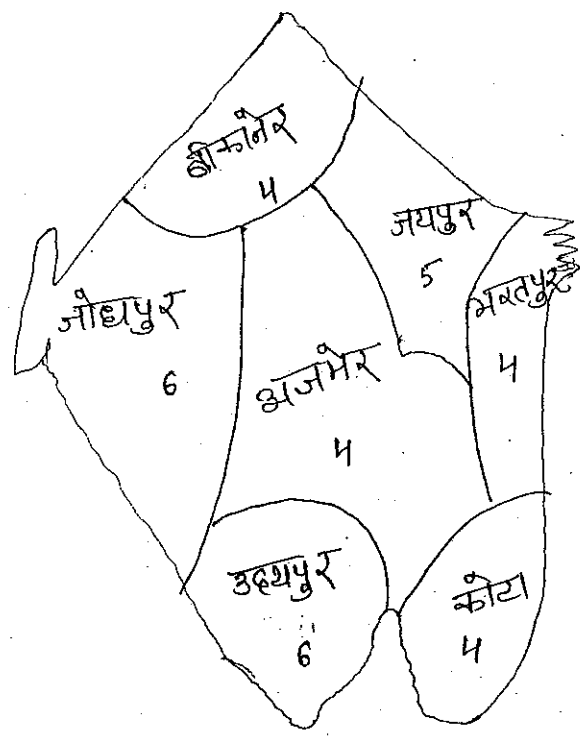
व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया, तथा '1987 A.D.'

में पुनः 'हरिदेव जोशी' सरकार के द्वारा संभागीय व्यवस्था

को प्रारंभ किया गया ।

→ 4 June 2005 को भरतपुर को नया संभाग बनाया;

जिसमें 'भरतपुर, धौलपुर', 'जयपुर संभाग' से एवं करोली, खवाई माछापुर्, 'कोटा संभाग' से लिये गये।



* बीकानेर संभाग ⇒ बीकानेर, गंगानगर, हनुमानगढ़, चुरू

* जोधपुर ⇒ जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, सिरोही, पाली, जालौर

* भजमेर ⇒ भजमेर, नागौर, टोंक, भीलवाड़ा

* उदयपुर ⇒

उदयपुर, बांसवाडा, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर,
राजसमन्द

* कौरा ⇒

कौरा, बूंदी, झालावाड, बार

* जयपुर ⇒

जयपुर, भलवर, सीकर, सुन्डुनु, दीसा

* भरतपुर ⇒

भरतपुर, करौली, धौलपुर, स्वर्वाभिर्वापुर

* क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा संभाग ⇒ जोधपुर
छोटा संभाग ⇒ भरतपुर

* जनसंख्या की दृष्टि से बड़ा संभाग ⇒ जयपुर
छोटा संभाग ⇒ कौरा

* साक्षरता की दृष्टि से बड़ा संभाग ⇒ जयपुर

छोटा संभाग ⇒ जोधपुर

* लिंगानुपात की दृष्टि से बड़ा संभाग ⇒ उदयपुर

छोटा संभाग ⇒ भरतपुर

* जनसंख्या घनत्व की दृष्टि से

सबसे बड़ा संभाग → जयपुर

सबसे छोटा संभाग → जोधपुर

* शहिकर सबसे ज्यादा → जोधपुर

* सर्वाधिक क्रियाशील जनसंख्या वाला संभाग →

उदयपुर

* राजस्थान के भौगोलिक उपनाम *

1. छप्पन का मैदान:

प्रतापगढ़ व बांसवाड़ा में माही नदी के किनारे 56 गाँव व नदी नालों का समूह छप्पन का मैदान कहलाता है।

2. कांठल:

प्रतापगढ़ में माही नदी के किनारे का क्षेत्र।

3. ऊपरमाल:

बिजौलिया (भीलवाड़ा) से भीलखोडगढ़ (चिखोडगढ़) के मध्य का भू-भाग ऊपर उठा हुआ होने के कारण ऊपरमाल कहलाता है।

4. देवाहरी:

उदयपुर में जरागा एवं रागा चढाडियों के बीच का भू-भाग सदा उदा-भवा रहने के कारण देवाहरी कहलाता है।

5. गिरवा:

उदयपुर के चारों तरफ तड़तरीनुमा बेसिन होने के कारण इसको स्थानीय भाषा में गिरवा कहा जाता है।

6. मैवल:

डुंगरपुर व बांसवाड़ा के चारों तरफ छोटी-2 पहाड़ियों को मैवल कहा जाता है।

7. तौरावाली :
डोखावाली क्षेत्र में कांतली नदी के प्रवाह क्षेत्र को तौरावाली कहते हैं ।

8. भौमठ :
खिरौड़ी, उदयपुर व डूंगरपुर का पर्वतीय व पठारी दलान भौमठ कहलाता है ।

9. भाखर :
खिरौड़ी के पूर्वी भाग का तीखा दलान

10. शिबी - किबी :
मैवाड में उदयपुर के भू-भाग को शिबी - किबी कहा जाता है ।

- इस भाग में शिबी जाति द्वारा 'महयभिका' को अपनी राजधानी बनाया गया, जिसे वर्तमान में 'नगरी' कहा जाता है, जो कि चित्तौड़ में है ।

11. मारवाड :
वर्तमान में जोधपुर, बीकानेर, बाड़मेर, पाली व नागौर के कुछ क्षेत्रों ।

12. मैवाड ⇒ उदयपुर + राजसमन्ध + भीलवाडा + प्रतापगढ़ + चित्तौड़गढ़

13. हाडौरी :- कोटा + झुंड़ी + बारां + झालावाड

14. मैवात प्रदेश ⇒ भलवर + भरतपुर

15. जांगल देश ⇒ बीकानेर + जोधपुर

11/07/21
* **मेरुपाट** ⇒
उदयपुर

* **कुरु प्रदेश** ⇒
भलवर

* **कुँदाड** ⇒
जयपुर में इंद्र नदी के आस-पास का क्षेत्र कुँदाड
करता है।

* **धुरजन** ⇒
भरतपुर व धौलपुर

* **गोपालपाल** ⇒
करौली

* **नाली क्षेत्र** ⇒
गंगानगर, हनुमानगढ़

* **डोखावाली** ⇒
रसीकर, चुरु, बु-बुमु

* **अहीरवाली** ⇒
भलवर

* **मांड प्रदेश** ⇒
जैसलमेर, बीकानेर

* **थाली** ⇒

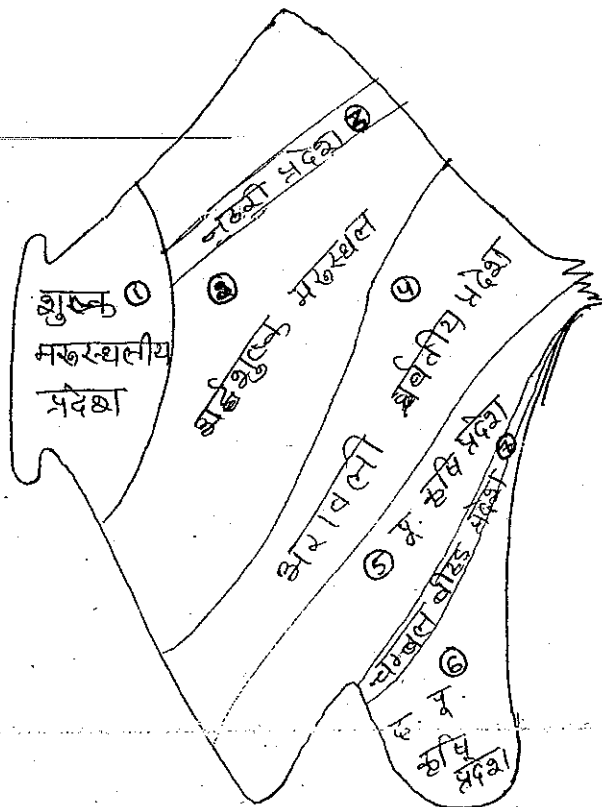
Physiography Region of Rajasthan

राजस्थान के भौगोलिक प्रदेश



राजस्थान के भौतिक प्रदेशों को सर्वप्रथम प्रो. वी. सी. मिश्रा के द्वारा अपनी पुस्तक 'राजस्थान का भूगोल' में 1967-68 को विभाजित किया।

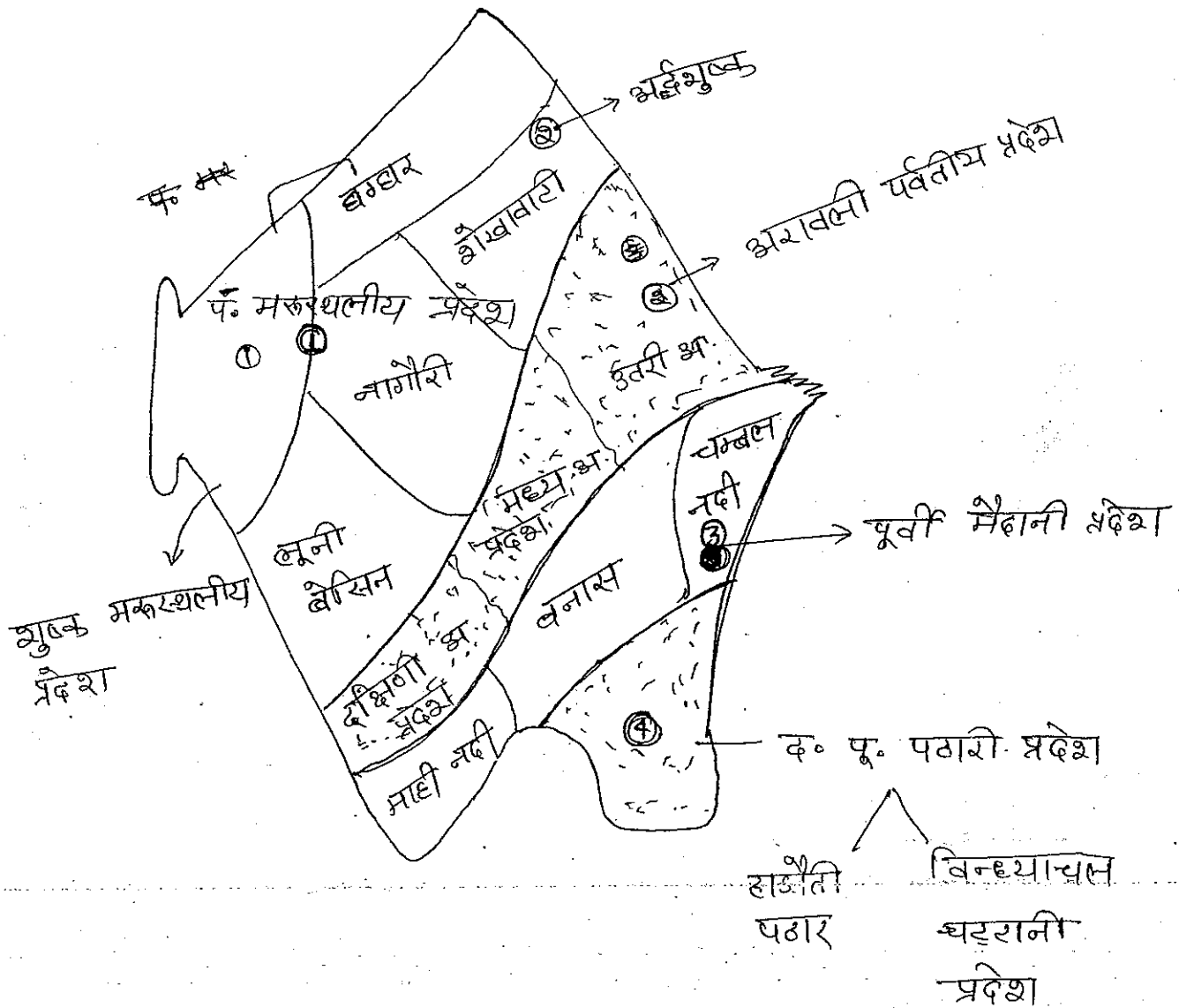
इसने राजस्थान को 7 भागों में बाँटा →



राजस्थान की भौगोलिक संरचना के आधार पर इसे मुख्य रूप से 4 भागों में बाँटा गया है →

मूगल का पता ⇒ इकायर्स

1. पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश
 2. अरावली पर्वतीय प्रदेश
 3. पू. मैदानी प्रदेश
 4. द. पू. पठारी प्रदेश
- गोंडवाना लैंड



1. पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश →

यह राजस्थान के उत्तर एवं उत्तर-पश्चिम दिशा में स्थित है। जो कि राज्य के कुल 61.14% (61%) भूभाग पर स्थित है।

- इस पर राजस्थान की कुल जनसंख्या का 40% भाग निवास करता है, इसी कारण यह राजस्थान का जनसंख्या व क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा भू-भाग है।

→ राजनैतिक दृष्टि से यह राजस्थान के 18 जिलों में

विस्तृत है →

1. बीकानेर
2. चुरू
3. बृहन्सुनू
4. गंगानगर
5. हनुमानगढ़
6. बीकानेर
7. जैसलमेर
8. बाड़मेर
9. जालौर
10. जोड़पुर
11. नागौर
12. पाली
- (13. सिराही)

→ प० मरुस्थलीय प्रदेश का निर्माण रेविसर सागर में

नदियों के द्वारा तलछट के जमाव से हुआ है।

इसी कारण यहाँ पर धात्विक खनिजों का अभाव एवं प्राकृतिक तेल व गैस की प्रधानता पाई जाती है।

इस प्रदेश की औसत वर्षा ३५ से ५० c.m., वनस्पति मरुदृभिद एवं ऊष्ण कटिबंधीय काँटेदार वन, मिट्टी रेतीली, एवं बूरी रेतीली, समुद्र तल से ऊँचाई १५० मीटर,
✓ बगबर, लुनी, काकनैय, काँतली आदि नदियाँ एवं राष्ट्रीय मरु अडयान अभयारण्य स्थित है।

* थार का मरुस्थल :

यह मरुस्थल अफ्रीका के सहारा मरुस्थल का पूर्वी भाग माना जाता है, जो कि विश्व में सबसे अधिक जनसंख्या बनत्व एवं जैव विविधता वाला मरुस्थल है।

- इसी कारण डॉ. इइवरी प्रसाद ने इसे 'रूक्षक्षेत्र' कहा है।

✓ यह पाकिस्तान, एवं भारत के राजस्थान, गुजरात, पंजाब व हरियाणा में फैला हुआ है।

- इस थार के मरुस्थल का कुल क्षेत्रफल ३३३००० ^{वर्ग} कि.मी. है, जिसमें से राजस्थान में १,७५००० वर्ग कि.मी. फैला हुआ है।

- हवैसिंग ने इस प्रदेश को 'गुर्जरात्रा' प्रदेश कहा है।

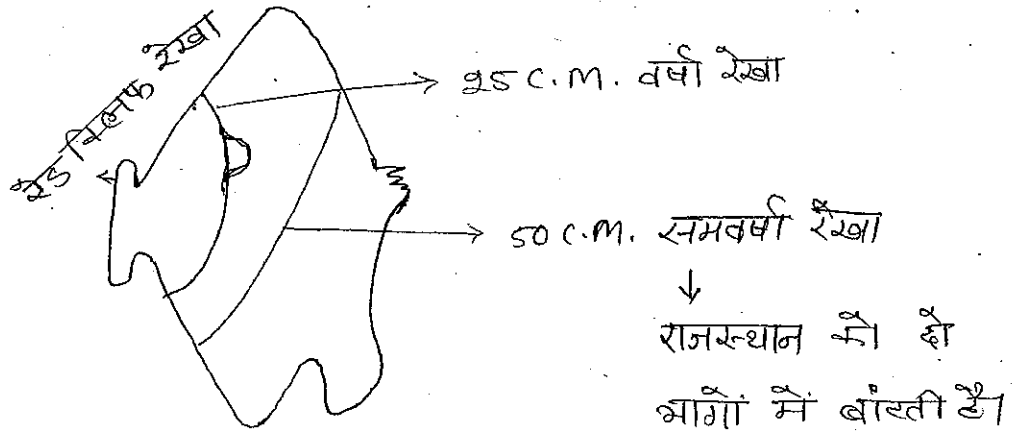
Temperature \rightarrow गर्मी $\rightarrow 49^\circ\text{C}$ Average $\rightarrow 22^\circ\text{C}$
सर्दी $\rightarrow 3^\circ\text{C}$

वर्षा के आधार पर इस प्रदेश को दो

भागों में बाँटा गया है \Rightarrow

(i) ठोस मरुस्थलीय प्रदेश

(ii) अर्ध ठोस मरुस्थलीय प्रदेश



(i) ठोस मरुस्थलीय प्रदेश \Rightarrow

मुख्य रूप से जैसलमेर

एवं प. जौधपुर, ठ. प. बाठमेर, दक्षिणी बीकानेर

एवं श्रीखावली के कुछ क्षेत्र में फैला हुआ है।

- इस क्षेत्र की प. सीमा रेड बिलफ रेखा एवं पूर्वी

सीमा 85 C.M. वर्षा रेखा बनाती है।

- इस क्षेत्र में अधिकांशतः रेत के टीले पाये जाते

हैं, जिन्हे 'धौरे' कहा जाता है, एवं स्थानीय भाषा

में उन्ही को 'धरियन' कहते हैं।

- ये रेत के टीले तीन प्रकार के होते हैं \Rightarrow

(A) अनुप्रस्थ बालूका स्तूप →

ये स्तूप के सीधे पवनों की दिशा के समकोण पर बनते हैं, जो कि मुख्य रूप से नैसर्गमैर एवं उत्तरी मकरस्थल में पाये जाते हैं। → <

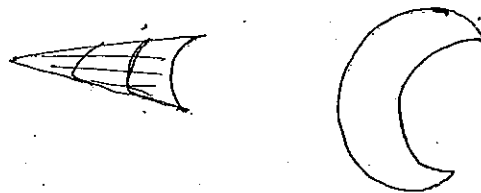
(B) अनुदैर्घ्य बालूका स्तूप / पवनानुवर्ती बालूका स्तूप →

ये बालूका स्तूप पवनों की दिशा के समानान्तर बनते हैं, जो मुख्य रूप से शुल्क मकरस्थलीय प्रदेश में पाये जाते हैं।

(C) बरखान बालूका स्तूप :

इनकी आकृति बर्द्धचन्द्राकार होती है

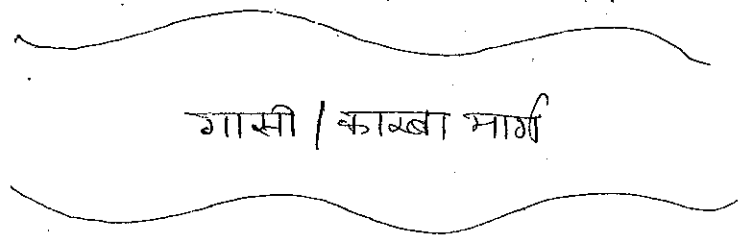
- ये सबसे अधिक गतिशील एवं सबसे अधिक विनाशकारी होते हैं, जो मुख्य रूप से डोंग्वावारी क्षेत्र में पाये जाते हैं।



Note

राजस्थान के कुल मकरस्थलीय भाग में लगभग 60% भाग पर बालूका स्तूप पाये जाते हैं, एवं सभी प्रकार के (तीनों प्रकार के) बालूका स्तूप जोधपुर जिले में पाये जाते हैं।

* गासी / कारबा मार्ग ⇒ दो पवनानुवर्ती बालूक स्तूपों के बीच निम्न भूमि को गासी / कारबा मार्ग कहा जाता है।



very imp * चट्टानी मरुस्थल / हम्मादा ⇒ जैसलमेर के चारों तरफ 65km

परिधि का क्षेत्र चट्टानी मरुस्थल कहलाता है।

- इसकी प्रमुख विशेषताएँ ⇒

(i) इस क्षेत्र में राजस्थान का

सबसे उत्तम सिख का 'श्याल ग्रेट चूना पत्थर'

जैसलमेर के 'सानु' क्षेत्र में पाया जाता है।

(ii) इस क्षेत्र में पीले रंग के पत्थर की प्रधानता

पाई जाती है।

Imp - इसी कारण जैसलमेर के दूरी व हवेलियाँ पीले

रंग के पत्थर से बने हुए हैं।

जैसे → सोनारगढ़ दूरी

- नद्यमल की खेती

10/11/20

10/11/20

Imp सबसे बड़ा आवासीय दूरी

Imp → चित्तौड़ का दूरी

Imp. (ii) इस पट्टा की प्रदेश के पश्चिमी भाग में पीकरण से लेकर मौखमगढ़ तक 60 K.M. लम्बी जल पट्टी है, जिसे 'लाठी स्पीरिज' कहा जाता है।

Imp. इस लाठी स्पीरिज पर खैराना बाग का उत्पादन होता है।

(iv) इसके दक्षिणी भाग में 'भाकल' गाँव स्थित है। जहाँ पर 'भाकल कारखाना जीवाश्म पार्क' (भाकल वुड फसिलियस पार्क) स्थित है।

↓
- यहाँ पर लगभग करीब 70 वर्ष पुराने 'मुरासिख काल' के लकड़ी के अवशेष बचे हुए हैं।

Imp. भाकल गाँव के पास 'जैसलमेर में चाँदन नलमूय' स्थित है जिन्हे 'थार का बड़ा' कहा जाता है।

III) अर्द्धशुष्क मरुस्थलीय प्रदेश →

इसकी पश्चिमी सीमा 250 M. वर्षा रेखा एवं पूर्वी सीमा अरावली पर्वतमाला बनाती है (50 C.M. वर्षा रेखा)।

- इस क्षेत्र में वर्षा 25 से 500 M. एवं अर्द्धशुष्क जलवायु पायी जाती है।

- इस क्षेत्र में मुख्य रूप से ऊँचा कटिबंधीय काँटेदार वन पाये जाते हैं।

- यह मुख्य रूप से खीरगंजनगर, इनुमानगर, सीकर,
चुरु, इनुन्धुनु, नागौर, घाली, जालौर में फैला हुआ
है।

- इसे चार भागों में बाँटा गया है →

A. लूनी बेसिन:

लूनी और

इसकी सहायक नदियों से निर्मित मुख्य रूप से
पाली, जालौर, बाडमेर, जोधपुर में फैला हुआ है।

↳ इसे 'गोंडवाड़ प्रदेश' भी कहा ^{जाता} है।

- इसे वाराणी कृषि प्रदेश (वर्षा आधारीत कृषि प्रदेश)

का नाम से जाना जाता है।

Jmp - इस क्षेत्र का सबसे बड़ा जलाशय 'उम्मेद सागर'
जलाशय (जवाई बाँध) है, जिसे 'मारवाड़ का भूत'
सरोवर कहा जाता है।

- इस क्षेत्र की मुख्य नहर परियोजना भर्मदा नहर
परियोजना है, जिससे राजस्थान के जालौर व बाडमेर
जिले लाभान्वित होते हैं।

→ शही मैदान →

लूनी बेसिन में लूनी नदी एवं धरावली

पर्वतमाला के बीच उपजाऊ क्षेत्र में शही मैदान के

नाम से जाना जाता है।

[B.] नागौरी उच्च प्रदेश:

यह छूनी बेसिन के उत्तर में मुख्य रूप

से नागौर जिले में स्थित है।

- यहाँ की मिट्टी में सोडियम क्लोराइड (नमक) के तत्वों की प्रधानता पाई जाती है, इसी कारण यह क्षेत्र अनुपजाऊ है।
- इस क्षेत्र में राजस्थान की सबसे अधिक खारे पानी की झीलें पाई जाती हैं।

जैसे →

गोडवाना

डेगाना

कुचामन

नावा

सांभर

- इस क्षेत्र में नमक के तत्वों की अधिकता का कारण भरव खागर के मानसून को माना जाता है।

Imp ⇒ फ्लूइड पट्टी →

यह नागौर व अजमेर की सीमा पर स्थित

है।

- यहाँ के जल में फ्लोराइड के तत्वों की प्रधानता के कारण इस क्षेत्र में 'फ्लोरोसिस' रोग हो जाता है, जिसे

जुदाये में लोगों की हड्डियाँ टेदी हो जाती हैं।

(C) डोखावाटी बेसिन :

यह मुख्य रूप से स्त्रीकर, चुरु व शुन्शुनु में फैला हुआ है।

— इस क्षेत्र की प्रमुख नदी 'कांतली नदी' है।

— इस क्षेत्र को अन्तः स्थलीय क्षेत्र कहा जाता है।

Imp इस क्षेत्र में स्थानीय छोटे तालाब या कच्चे कुएँ की औठक कहा जाता है।

(D) बगबर बेसिन :

यह मुख्य रूप से श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ में बगबर नदी से निर्मित है।

Imp— इस क्षेत्र में बगबर नदी के तट को 'नाली' कहा जाता है, इसी कारण यहाँ पर नाली नरल की भैंसें घरि जाती हैं।

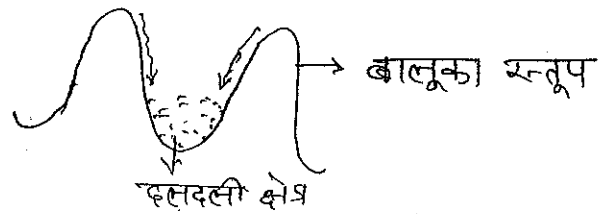
— यह राजस्थान का सबसे अधिक उत्पादकता वाला क्षेत्र है। एवं राजस्थान में सबसे अधिक नहरी सिंचित क्षेत्र है।

प. राजस्थान में प्राचीन जल के स्त्रोत, जो कि वर्तमान में लुप्त हो रहे हैं →

1. भागौर / टांका:

पश्चिमी राजस्थान में वर्षा के जल को इकट्ठा करने के लिए बरों के भांगन में जो स्थान बनाये जाते हैं, उन्हें टांका / भागौर कहा जाता है।

2. राट / रन:



पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में दो बालूका स्तूपों के मध्य नीचले स्थान पर वर्षा के जल से बना दलदली क्षेत्र 'राट / रन' कहलाता है।

— इस क्षेत्र में जैलसमेर के पालीवाल ब्राह्मणों के द्वारा 'खडीन कुषि' की जाती है।

3. नाडी:

पश्चिमी मरुस्थल में प्राकृतिक कारणों से बने ऊँचे - नीचे स्थान जिसमें वर्षा का जल इकट्ठा होता है, उसे नाडी कहा जाता है।

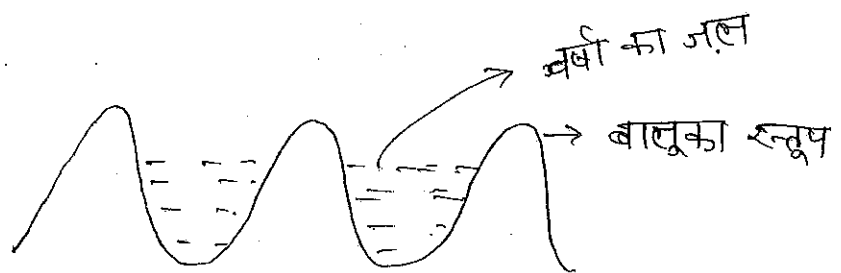
— इस जल का उपयोग पशुपालन एवं दैनिक कार्यों के

लिए किया जाता है।

4. जोड़ :

शेखावाड़ी क्षेत्र में स्थानीय छोटे तालाब एवं कच्चे कुँवों को जोड़ कर कहा जाता है।

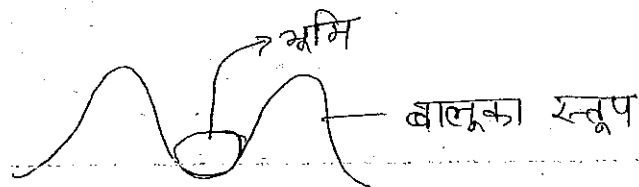
5. पलाया झील :



दो बालूका स्तूपों के बीच नीचली भूमि में वर्षा का जल इकट्ठा होने से इन झीलों का निर्माण होता है।

- कभी-कभी ये झीलें जमकीन (अवणीय) हो जाती हैं, जिन्हें 'सेलीता' के नाम से जाना जाता है।

6. तल्ली / पोंखर :



दो बालूका स्तूपों के बीच नीचली भूमि

को तल्ली या पोंखर कहा जाता है।

7 बावड़ी → सामान्यतः चौकोर व सीढ़ीनुमा तालाब, बावड़ी कहलाता है।

* राजस्थान के पश्चिमी भाग में सम्बन्धित महत्वपूर्ण

तथ्य :

1. सम गाँव :

Imp → जैसलमेर में स्थित सम गाँव पूर्णतः

वनस्पति रहित क्षेत्र है।

- यहाँ राजस्थान का सबसे कम वर्षा वाला स्थान है।
- यहाँ रेत के ढेरों में फिल्मों की बूटिंग की जाती है, जो कि वर्तमान में एक पर्यटन स्थल के रूप में जाना जाता है।

NOTE

→ पर्यटन को बढ़ावा का दर्जा दिया गया ⇒



इसलखिल्य बढ़ावा

4 मार्च 1989



मोहम्मद युनुस समिति के द्वारा

2. धार का बड़ा :

जैसलमेर के भारतल गाँव में, धाँदल नलसूप स्थित

को 'धार का बड़ा' कहा जाता है।

3. पीवणा :

पश्चिमी मकर-चलीय प्रदेश में पाया जाने वाला

सबसे विषैला सर्प।

16/07/14

- मिट्टी के रंग का होता है।

- लम्बाई \rightarrow 1 फुट

- ऐसा माना जाता है, कि यह साँप करता नहीं है, बल्कि अपना जहर छोड़ता है, जो मनुष्य के श्वास के साथ शरीर में चला जाता है। और इस जहर से मनुष्य की मृत्यु हो जाती है।

4. मरुस्थल का प्रसार : March Past of Desert कहते हैं।

राजस्थान में मरुस्थल का धीरे-2

आगे बढ़ना, जिससे दिन-प्रतिदिन भूमि बंजर होती जा रही है, इसे ही मरुस्थल का प्रसार कहा जाता है।

- यह राजस्थान के अलावा अन्य राज्यों में भी बढ रहा है, जैसे - गुजरात, पंजाब, हरियाणा।

5. सर सरौवर :

राजस्थान के डोंखावादी क्षेत्र या पश्चिमी

मरुस्थलीय क्षेत्र में छोटे-2 तालाबों को सर

या सरौवर कहा जाता है।

जैसे \rightarrow परबतसर (जागौर)

लूणकरणसर (बीकानेर)

6. सावठ / महावठ :

भारत में शीतकाल के समय भूमध्य,

सागरीय चक्रवात (पश्चिमी विक्षोभ) से होने वाली

वर्षा राजस्थान में 'मावठ' कहलाती है।

Q. यह 'गोड़' की फसल के लिए लाभदायक होती है, इसी कारण इसे 'रबी का अमृत' कहा जाता है।

7. **मालाणी प्रदेश** :

भूनी बेसिन का महत्वपूर्ण क्षेत्र मालाणी प्रदेश कहलाता है, जो कि मुख्य रूप से जालौर एवं बालोतरा (बाडमेर) में फैला हुआ है।

Q. मालाणी के गाय व घोंडे प्रसिद्ध हैं।

8. **पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में हरियाली के प्रकार एवं क्षेत्रों के बारे में बताइये।**

Q. 1. **मरुद्विंद (जीरोफाइट)** :

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में मुख्य रूप से यह वनस्पति पाई जाती है, जिसकी जड़ें गहरी एवं पत्तियाँ काँटेदार होती हैं।

जैसे → खैजडी, बबूल, फोग, बैर, कैर

2. **चाँदन नलकूप** ⇒

आकल के पास चाँदन नलकूप स्थित है, जिसके आस-पास की भूमि उपजाऊ होती है।

3. मरुद्यान/ मरुत्खिलस्तान :

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में जल की उपलब्धता वाले क्षेत्रों में मुख्य रूप से वनस्पतियाँ पाई जाती हैं।

जैसे → चाँदन नलकूप

कोलायत झील → बीकानेर

→ कपिलमूनि का आत्मम

→ कार्तिक पूर्णिमा को मेला भरता है (पुष्कर में मेला)

4. तल्लिन/मरहो/ बालसन/ पौखर ।

5. राट/ रज

6. पलाया झील/ खारी झील/ सैलीना

7. भाठी खीरज

8. बग्गी → गंगानगर, हनुमानगढ़ क्षेत्र (उपजाऊ क्षेत्र)

* निष्कर्ष :

इस मरुस्थलीय क्षेत्र में हरियाली के कारण

पेड़ - पौधे, जीव - जन्तु एवं मनुष्यों का निवास

अधिक पाया जाता है। इसलिए यह मरुस्थल

विश्व में सबसे अधिक जैव विविधता वाला

क्षेत्र है।

1911 → रायस्थान का पहाड़ → 2100 फीट अवन बना है।
↓
सर्वप्रथम लॉर्ड डरबिन

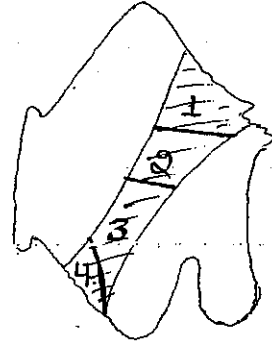
2. अरावली पर्वतीय प्रदेश :

अरावली पर्वतमाला

राजस्थान के मह्यवती भाग

में स्थित हैं, जो कि राजस्थान

को दो भागों में विभाजित करती हैं।



- अरावली पर्वतीय प्रदेश की भौतिक विशेषताएँ →

(i) विस्तार :

अरावली पर्वतमाला का विस्तार गुजरात में 'पालनपुर' जिले से लेकर राजस्थान के मह्यस होते हुए दिल्ली में 'पालन' नामक स्थान पर 'रायसीमा की पहाड़ियों' तक हैं।

- यह दक्षिण पश्चिम से उत्तर - पूरब दिशा में फैली हुई हैं।

(ii) जनसंख्या व क्षेत्रफल :

अरावली पर्वत राजस्थान के 9% भाग पर स्थित हैं, जिस पर राज्य की कुल जनसंख्या का 10% भाग निवास करता हैं।

(iii) लम्बाई व ऊँचाई :

अरावली पर्वतमाला की कुल लम्बाई 692 K.M. हैं। निम्न से राजस्थान में 500 K.M.

(80%) हैं।

- अरावली की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 930 मीटर हैं।

4. जिले:

अरावली मुख्य रूप से जिराही, उदयपुर, इंगूर,
बांसवाड़ा, राजसमंद, पाली, अजमेर, जयपुर, दौसा, अलवर,
सीकर, बुन्देलुख में फैली हुई है।

5. जलवायु:

अरावली पर्वतीय प्रदेश में मुख्य रूप से
ठपाई जलवायु पाई जाती है।

6. मिट्टी एवं कृषि:

अरावली पर्वतीय प्रदेश में मुख्य
रूप से पर्वतीय मिट्टी, बाल मिट्टी एवं मिश्रित
काली मिट्टी पाई जाती है।

- यहाँ अरावली की ढालों पर मुख्य रूप से
'मक्का' की खेती की जाती है।

7. प्रकृति:

अप अरावली पर्वतमाला विश्व की सबसे प्राचीन
वर्तित पर्वतमाला है, जिसकी उत्पत्ति 'शी रेमिग्रान'
काल में मानी जाती है।

- अरावली पर्वतमाला को अवशिष्ट पर्वत (धिसा डूबा)

का उदाहरण माना जाता है, जिसकी तुलना ड. अमेरिका महाद्वीप के पू. तट पर स्थित 'अप्लेचियन पर्वत' से की जाती है।

8. उच्चावच: ऊँचा-नीचा-दाल

अरावली पर्वतमाला में मुख्य रूप से पर्वत-घाटी प्रकार एवं छोटी-छोटी पहाड़ियाँ पाई जाती हैं।

9. वनस्पति:

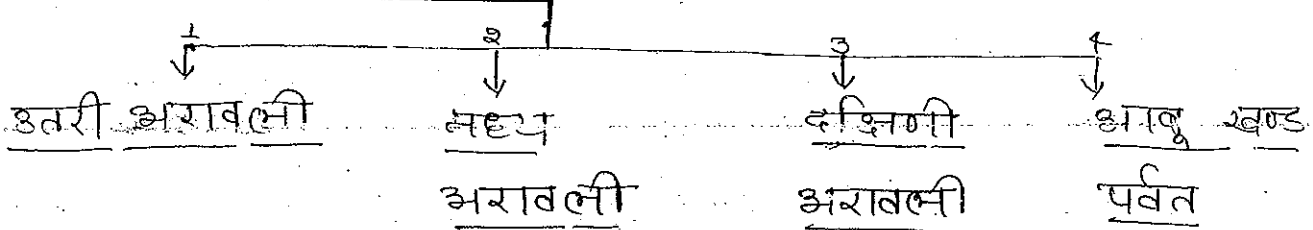
इस पर्वतीय प्रदेश में मुख्य रूप से 'अर्ध-कटिबंधीय पतझड़ वन' पाये जाते हैं।

10. वर्षा:

अरावली पर्वतीय प्रदेश में 50-80 C.M. वर्षा होती है।

* अरावली पर्वतमाला को मुख्य रूप से चार भागों

में बाँटा गया है ⇒



1. उत्तरी अरावली:

यह मुख्य रूप से डोखावारी, जयपुर

कौसा, भलवर क्षेत्र में स्थित है; जिसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 450 मीटर है।

Imp - इसकी सबसे ऊँची चोटी शबुनाथगढ़ (1055 मी.) (सीकर) है।

- यह पर्वत चोटी स्त्रिकर में मालखेत की पहाड़ियों में स्थित है।

2. मध्य अरावली :

इस भाग में अरावली का विस्तार कम पाया जाता है, जो कि ब्यावर के समीप अत्यधिक कम है।

Imp इसकी सबसे ऊँची चोटी नाग पहाड़ियों में तारागढ़ (870 मी.) (भजमौर) है।

- इसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 550 मी. है।

- अरावली का यह भाग कटवा - भरवा क्षेत्रों के कारण यहाँ अत्यधिक मात्रा में दूरे (स्थानीय भाषा में नाल कहा जाता है) धाँसे जाते हैं।

जैसे → जीलवाड़ा की नाल → पाली

देसूरी की नाल → पाली

सोमेश्वर की नाल - पाली

बर दरी → पाली

- यह मुख्य रूप से भजमौर, पाली, राजसमन्द में विस्तृत है।

3. दक्षिणी अरावली

यह मुख्य रूप से सिरौही, उदयपुर

राजस्थान में विस्तृत है।

Imp- इसकी सबसे ऊँची चोटी 'जरागा चोटी' (1481 मी) उदयपुर में है।

- इसकी समुद्रतल से औसत ऊँचाई 1000 मी. है।

Imp इसमें मुख्य रूप से फुलवारी की नाल (उदयपुर)

केवडा की नाल (उदयपुर); इल्दीबारी की नाल

(राजस्थान) प्रमुख नदियाँ पायी जाती हैं।

4. आठ पर्वत श्रृंखला :

यह मुख्य रूप से 'सिरौही' जिले

में स्थित है।

- इसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 1000 मी. है।

Imp- इसकी सबसे ऊँची चोटी 'गुरुशिखर' (1722 मी.) (सिरौही) है।

Q: राजस्थान में अरावली पर्वतमाला के पठारों का विस्तृत वर्णन करो।

Ans 1. उड़िया का पठार :

यह राजस्थान का सबसे ऊँचा

पठार हैं, जो कि गुरुशिखर के नीचे सिरोही में
स्थित हैं।

- इसकी ऊँचाई 1360 मीटर है।

2. भाबू का पठार:

यह राजस्थान का दूसरा सबसे

ऊँचा पठार है।

- इसकी ऊँचाई 1300 मीटर है।

- यह सिरोही जिले में स्थित है।

3. भौराठ का पठार:

(हृदयपुर)

यह पठार गौगुन्दा से लेकर कुम्भलगढ़

(राजसमन्द) तक विस्तृत है। जो कि हृदयपुर व राजसमन्द

में स्थित है। (गौगा में कुम्भा का भौरा दिया)

4. लासडिया का पठार:

यह राजस्थान का क्षेत्रफल की दृष्टि

से सबसे बड़ा पठार है। जो कि जयसमन्द झील

के आसपास स्थित है।

↓
हृदयपुर

5. कूपरमाल का पठार:

यह पठार बिर्जोलिया (भीलवाडा) से

लेकर मैसरोडगढ़ (चित्तौड़गढ़) तक विस्तृत है।

6. मानदेसरा का पठार:

यह पठार चित्तौड़गढ़ जिले में

स्थित है।

7. मैर्या का पठार:

यह पठार चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है।

Imp. जिस पर 'चित्तौड़ गढ़ दुर्ग' बना हुआ है।

- यह दुर्ग राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय दुर्ग है।

Ind → जैसलमेर दुर्ग

8. पीडमांट का पठार:

यह पठार देवगढ़ (राजसमन्द) में

स्थित है।

- इसे 'पीडमांट का मैदान' भी कहा जाता है।

9. कांकनवाडी / कांसना का पठार:

यह पठार भल्लवर के

सरिस्का अभयारण्य में स्थित है, जिस पर मुख्य रूप से बन्दर पाये जाते हैं।

सरिस्का में 4 धार्मिक स्थल हैं।

10. धौराजी का पठार ⇒ चित्तौड़गढ़

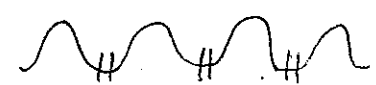
17/07/14

* निलकर्ष ⇒

राजस्थान के पठार मुख्य रूप से छोटे एवं

संरचनात्मक दृष्टि से कमजोर हैं।

- इनको सुरक्षा प्रदान करने के लिए राज्य सरकार के द्वारा उन्हें पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करना होगा।

Q: राजस्थान के अरावली पर्वतीय प्रदेश में किन-किनसे दर्रे हैं? एवं वे किन-किन स्थानों को जोड़ते हैं, व कहाँ पर स्थित हैं? 

Ans 1. जीलवाडा की नाल (पगल्या की नाल):

यह दर्रा पाली

जिले में स्थित है, जो कि मारवाड से मैवाड को रास्ता प्रदान करता है।

2. सोमेश्वर की नाल ⇒

यह दर्रा पाली में स्थित है।

एवं यह पाली को राजसमन्द से जोड़ता है।

3. बर दर्रा:

यह पाली जिले में स्थित है।

- मध्यकाल में इस दर्रे से जोधपुर - भागवा मार्ग गुजरता था। लेकिन वर्तमान में इस दर्रे से NH-14 गुजरता है।

- यह दर्सी ब्यावर की धर से जोड़ती है।
पाली

4. देसूरी की नाल:

यह पाली में स्थित है, जो कि भैवाड
की माखाड से जोड़ने का कार्य करती है।

5. हाथीगुडा की नाल:

यह पाली में स्थित है, जो कि पाली
राजसमंद की सीमा पर मार्ग प्रदान करती है।

जम्प इसी के समीप कुम्भलगढ दुर्ग स्थित है।

6. बैवडा की नाल →

यह नाल उदयपुर जिले में स्थित है,
जो कि उदयपुर के बैसिन या उदयपुर सिटी की
उदयपुर जिले से जोड़ती है।

जम्प 7. फुलवारी की नाल:

यह राजस्थान की शैवफल की इस्टि
से सबसे बड़ी नाल है, जो उदयपुर जिले में
स्थित है।

जम्प 8. बन्दीघाटी की नाल:

यह नाल राजसमन्द जिले में
स्थित है, जिस पर राजस्थान में सर्वाधिक धन
के वृक्ष पाये जाते हैं।

— यह राजस्थान में पर्यटन स्थल के रूप में जाना जाता है।

9. बीरांग दर्रा:

यह खिरौली के दक्षिणी भाग में स्थित है।

— यह माठल भाबू क्षेत्र को उदयपुर से जोड़ने का कार्य करती है।

Imp. पीपली की नाल:

यह राजस्थान की सर्वाधिक ऊँचाई पर स्थित नाल है। जो कि खिरौली जिले में स्थित है।

Note

Imp बर ~~दर्रा~~ से पूर्णतः राजस्थान में स्थित सबसे

बड़ा NH - 112 गुजरती है।

↓
इसकी लम्बाई 828 K.M. है।

* निष्कर्ष →

यह नाल न केवल भूगोल के बल्कि पश्चिमी संस्कृति को पूर्वी संस्कृति को काम करते हैं। इसी कारण हम कह सकते हैं, कि यहाँ भूगोल का संस्कृति पर प्रभाव दिखाई देती है।

Q :-

राजस्थान में चलने वाली स्थानीय पर्वत कौन कौन सी हैं? उनका विस्तार से वर्णन कीजिए।

Ans

हवाएं हमेशा उच्च वायुदाब से निम्न वायुदाब की ओर चलती हैं, जिन्हें पर्वत कहा जाता है।
- राजस्थान में कई प्रकार की स्थानीय पर्वत चलती हैं जिन्हें निम्न प्रकार है ->

1. अभूल्या :

इसका आधुनिक अर्थ वायु का भँवर होता है।

- मरुस्थल में निम्न वायु दाब के केंद्र के कारण स्थानीय स्तर पर बगने वाले भँवरो को स्थानीय भाषा में अभूल्या कहा जाता है।

2. पश्चिमी विक्षोभ :

शीत काल में पश्चिम से पूरब दिशा की ओर चलने वाली भूमध्य सागरीय पर्वतों को पश्चिमी विक्षोभ कहा जाता है।

Imp - इन्ही के कारण राजस्थान में 'मावठ' होती है।

Imp - इन्ही पर्वतों को क्षोभ मण्डल में 6 से 12 K.M. की ऊँचाई पर 'जेट स्ट्रीम' कहा जाता है।

→ इन पवनों का नाम जेट स्ट्रीम द्वितीय विश्वयुद्ध के समय गुह्र विमान B-32 (बम बर्क) जेट विमान के आधार पर रखा गया है।

3. **वज्र** :

इसका शाब्दिक अर्थ 'छोटा तूफान' होता है। जो कि पश्चिमी मकरान्त में निम्न वायुदाब के कारण छोटे-छोटे चक्रवात चलते हैं, जिन्हें स्थानीय भाषा में 'वज्र' कहा जाता है।

4. **वज्रात** :

प = राजस्थान में छोटे - 2 चक्रवातों से मानसून से पहले होने वाली वर्षा को स्थानीय भाषा में वज्रात कहा जाता है।

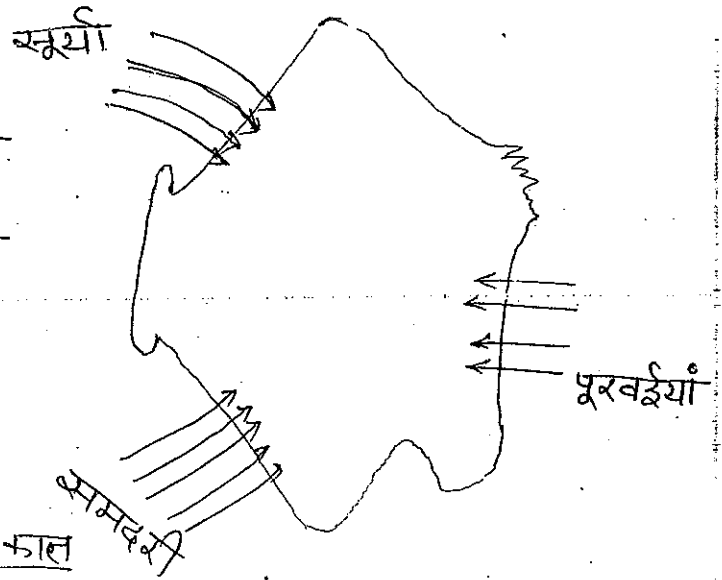
5. **पुरवर्षियाँ** :

इसका शाब्दिक अर्थ होता है ⇒ 'पूरुब दिशा की ओर से आने वाली पवनें' अर्थात् राजस्थान में ग्रीष्म काल के समय पूरुब दिशा से आने वाले 'बंगाल की खाड़ी' के मानसून को पुरवर्षियाँ पवन कहा जाता है।

6. **शूया** :

गर्मियों के समय में उत्तर - पश्चिम से

भाने वाली गर्म पवनों को स्थानीय भाषा में सूर्या कहा जाता है।



7. **समदरी** :

राजस्थान में शीतकाल

के समय समुद्र की ओर से भाने वाली दक्षिणी पवनों को स्थानीय भाषा में समदरी कहा जाता है।

8. **सीली** →

इसका शाब्दिक अर्थ → 'ठण्डी पवने' होता है।

- राजस्थान में शीतकाल के समय 'पौष माह' में चलने वाली ठण्डी पवनों को सीली कहा जाता है।

9. **सीली मारबो / सीली बैबडो** →

'पौष माह' में चलने वाली

ठण्डी पवनों से राजस्थान में रबी की फसल पर घाला पड़ता है, जिससे पैड़-पत्तियाँ मुड़झाने लगते हैं। इसी कारण इसे सीली मारबो या सीली बैबडो कहा जाता है।

10. **तुवा / तवा** :

इसका शाब्दिक अर्थ होता है → 'गर्म पवने'

प. मरुस्थलीय प्रदेश में चलने वाली पवनों को तुवा या तवा कहा जाता है।

11. झला / झाला →

प. राजस्थान में 'पूर्ण आन्तरिक परावर्तन' के कारण जो चमकती हुई सुग मरीचिका दिखाई देती है, उसे स्थानीय भाषा में झला या झाला कहते हैं।

12. आथूनी →

इसका शाब्दिक अर्थ होता है → शाम के समय चलने वाली पवनें।
- राजस्थान में शाम के समय जो पवनें चलती हैं, उन्हें स्थानीय भाषा में आथूनी कहा जाता है।

13. भर्तव →

इसका शाब्दिक अर्थ होता है → चिल्लाना
- पश्चिमी राजस्थान में तेज हवाओं के साथ आवाज करती हुई स्थानीय पवनों को भर्तव कहा जाता है।

14. लू →

राजस्थान के प. मरुस्थलीय प्रदेश में चलने वाली गर्म व तेज पवनों को स्थानीय भाषा में लू कहा जाता है।

- इसके कारण बीमार होने वाले व्यक्ति को 'लू

लगना' कहा जाता है।

15. दौंगडा ⇒ 'मानसून पूर्व की वर्षा'

- राजस्थान में निम्न वायुदाब एवं अधिक आर्द्रता के कारण मई - जून में होने वाली मानसून पूर्व वर्षा को स्थानीय भाषा में दौंगडा कहते हैं। (मानसून से पहले दो बारगडा)

16. धराऊ / धरोड / इतराद्य ⇒ उत्तर दिशा से आने वाली पवनें।
(~~उत्तर~~ उत्तर में धरा गया)

* **निष्कर्ष** ⇒

राजस्थान में चलने वाली इन स्थानीय पवनों

से जन मानस प्रभावित होता है।

- इसी के आधार पर राजस्थान की संस्कृति का निर्धारण किया जाता है।

इ. पूर्वी मैदानी प्रदेश

Q: राजस्थान में अश्वली पर्वतमाला को अनेक प्रादेशिक नामों से जाना जाता है, उनके बारे में वर्णन करो।

Ans 1. पलखेत की पहाड़ियाँ :

बुन्देलु

2. मालखेत की पहाड़ियाँ :

सीकर → रघुनाथगढ़ चौरी

3. हर्ष की पहाड़ियाँ :

सीकर

Imp- इन पहाड़ियों पर प्रसिद्ध 'जीणमता का मन्दिर' स्थित है।

* हर्ष का मन्दिर → सीकर

* हर्षनाथ की पहाड़ियाँ → अलवर

* हर्षदा माता का मन्दिर → आभानेरी (दौसा)

4. भैरवाड़ा की पहाड़ियाँ → ये पहाड़ियाँ अजमेर से लेकर

राजसमन्द तक विस्तृत हैं, जो कि भैरवा. को मारवाड से अलग करती हैं।

Imp 6. छप्पन की पहाड़ियाँ → ये पहाड़ियाँ वाडमैर के सिवान

नामक स्थान पर स्थित है। जहाँ पर प्रसिद्ध * भाँकड़ा
के जैन मन्दिर, स्थित है।

✓ छप्पन पर्वत →

उदयपुर

✓ छप्पन का मैदान →

बाँसवाडा, प्रतापगढ़

Imp. त्रिकूट पहाड़ियाँ →

ये पहाड़ियाँ जैसलमेर में स्थित हैं, जिन पर प्रसिद्ध 'सोनागढ़ दुर्ग' बना है, जो कि राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा भावासीय दुर्ग है।

✓ त्रिकूट पर्वत →

करौली

Imp. - इस पर प्रसिद्ध 'कैला देवी' का मन्दिर स्थित है।

✓ भाडावाला पर्वत →

बूंदी

✓ मुकुन्दवाडा की पहाड़ियाँ →

कोटा झालाबाड

very Imp. इन पहाड़ियों पर राजस्थान का तीसरा राष्ट्रीय
उद्यान 'दरी अभयारण्य' स्थित है।

13. वीजासन पर्वत → माण्डलगढ - [भीलवाड]

13. सुन्धा माता पर्वत / सुण्डा माता पर्वत : यह पर्वत भीनमाल

(जालौर) में स्थित है।

very imp - इस पर राजस्थान का प्रथम 'रोप वे' 2006 में
बनाया गया।

2008 में उद्घाटन किया गया।

14. मालाभी पर्वत श्रृंखला → यह बाडमेर के बालौतरा एवं
जालौर की सीमा पर स्थित है।

* भरावली की 7 सर्वोच्च चोटियाँ →

1. गुरुशिखर → सिरौही → 1722 मी.
2. खैर → सिरौही → 1591 मी.
3. दिलवाडा → सिरौही → 1442 मी.
4. जरगा → उदयपुर → 1431 मी.
5. अचलगढ → सिरौही → 1380 मी.
6. रघुनाथगढ → सीकर → 1055 मी.
7. खो → जयपुर → 920 मी.

Tricks →

[गुरु से देव जरा
भावा रखो]

→ कर्नल टॉड ने गुरुशिखर को 'सैतों का शिखर' कहा है।

3. पूर्वी मैदानी प्रदेश →

पूर. मैदानी प्रदेश अरावली के पूर्वी भाग में गंगा और यमुना के मैदान से जुड़ा हुआ है।

राजस्थान के भौतिक प्रदेशों में जलवायु, वनस्पति, मृदा एवं कृषि की दृष्टि से समरूपता पाई जाती है।

- पूर्वी मैदानी प्रदेश की भौतिक विशेषताएँ →

1. विस्तार :

राजस्थान में 50 C.M. वर्षी रेखा से पूरब में स्थित प्रदेश को पूर्वी मैदानी प्रदेश के नाम से जाना जाता है।

- यह प्रदेश नदियों के द्वारा निर्मित है, इसी कारण इसे नदी निर्मित बैसिन या प्रदेश कहा जाता है।

2. जिले →

यह मुख्य रूप से धौलपुर, करौली, सर्दई, माधोपुर, कोटा, चित्तौड़, जयपुर, बीकानेर, भरतपुर, टोंक, भीलवाड़ा, राजसमन्द, डूंगरपुर, ईशानगर, बीकानेर में विस्तृत है।

3. क्षेत्रफल एवं जनसंख्या →

यह राजस्थान के कुल क्षेत्रफल के

23% भाग पर स्थित है, जहाँ पर कुल जनसंख्या का 34% भाग निवास करता है। इसी कारण यह राजधानी का जनसंख्या बन्दल की दृष्टि से सबसे बड़ा भौतिक विभाग है।

4. जलवायु : इस प्रदेश में आर्द्र एवं उपार्द्र जलवायु पाई जाती है।

5. वर्षा : इस प्रदेश में औसत वार्षिक वर्षा 50 से 800 cm. होती है।

6. कृषि : इस क्षेत्र में मुख्य रूप से गेहूँ, सरसों, चावल गन्ना उत्पादित किये जाते हैं।

✓ [सरसों गंगानगर में सबसे ज्यादा होती है (उत्पादकता अधिक)]

7. खनिज : इस प्रदेश में मुख्य रूप से अध्यात्मिक खनिज पाये जाते हैं, एवं सर्वाधिक मात्रा में इस क्षेत्र में सैंगमरमर का उत्खनन होता है।

संगमरमर ⇒ सफेद - मकरानी

पीला - भरतपुर

हरा - उदयपुर

लाल - धौलपुर

8. उच्चांतच:

इस प्रदेश के चम्बल नदी बेसिन को छोड़कर बाकी पूरा क्षेत्र मैदानी प्रदेश है।

- इस प्रदेश के चम्बल बेसिन में डांग, बीहड़ आदि स्थलाकृति पाई जाती हैं।

9. मिट्टी:

इस प्रदेश में मुख्य रूप से शैल एवं कछारी मिट्टी पाई जाती है। जो कि राजस्थान में सबसे अधिक उपजाऊ मिट्टी है।

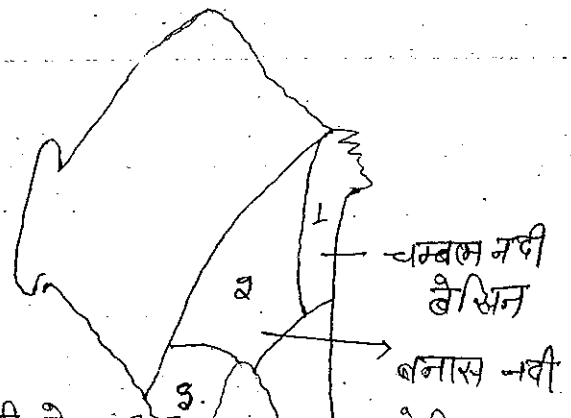
10. वनस्पति:

इस प्रदेश में मुख्य रूप से नीम, शीशम, साहल, आगवान, खैरडी, शेहड़ा, बबूल आदि वनस्पतियाँ पाई जाती हैं।

पूर्वी मैदानी प्रदेश को मुख्य रूप से तीन भागों में बाँटा गया है →

11. चम्बल नदी बेसिन

↓
यह मुख्य रूप से चम्बल एवं इसकी सहायक नदियों से निर्मित है।



- चिकीसक धौ ^{TRIGGS} → चम्बल नदी
 - कोटा, चित्तौड़गढ़, खवाडिमाधौपुर, धौलपुर, करौली, बूंदी
 में आदि जिलों में यह भाग फैला हुआ है
 (चम्बल कोचि में खवा किलों बूंदी धौं)
 - इस क्षेत्र का ढाल दक्षिण पश्चिम से उत्तर-पूरब
 दिशा की धौर है।

→ चम्बल की प्रमुख सहायक नदियाँ ⇒

- (i) बनास
- (ii) कालीसिन्ध
- (iii) पार्वती
- (iv) सीप
- (v) परवन
- (vi) मैज
- (vii) मांगली
- (viii) लौडा पल्लाड

* उत्खात स्थलाकृति :

चम्बल नदी का तीव्र ढाल वाला क्षेत्र जो कि चम्बल नदी के द्वारा गहरे गड्ढों से निर्मित है, इसे उत्खात स्थलाकृति कहा जाता है।

* डांग :

चम्बल नदी क्षेत्र में उत्खात स्थलाकृति बीहड एवं गहरे गड्ढों वाला क्षेत्र डांग क्षेत्र कहलाता है।

(इस्फान खान का प्रसिद्ध संवाद → डांग तो संसद में रहते हैं, बीहड। डांग में तो बागी रहते हैं।)

Imp- इस क्षेत्र में सबसे बड़ा बांध टोंक जिले में
'बीसलपुर बांध' है, जो कि राजस्थान की सबसे बड़ी
पैयजल परियोजना है।

Imp इससे जयपुर, भजमेर, ब. व्यावर व टोंक में पैयजल
प्राप्त किया जाता है।

- बीसलपुर बांध बनास नदी पर बना है।

(iii) माही नदी बेसिन :

यह प्रदेश माही व इसकी सहायक

नदियों से निर्मित है, तथा डूंगरपुर, बांसवाडा और
प्रतापगढ़ में स्थित है।

- छप्पन का मैदान इसी क्षेत्र में है - प्रतापगढ़, बांसवाडा

→ कांठल (प्रतापगढ़) भी इसी क्षेत्र की विशेषता है।

- वांगड प्रदेश ⇒

डूंगरपुर, बांसवाडा, प्रतापगढ़

→ मुख्य नदियाँ :

माही (सोना ए भएचा)

सोम + त्रिवेणी संगम → वेणेश्वर

जाखम, एरण, अनास, एराव, चाप

चाप
भनास
एरण

* वाल्मरा → आदिवासियों के द्वारा जंगलों को जलाकर दक्षिणी राजस्थान में की गई कृषि वाल्मरा कहलती है।

- इसके दो रूप होते हैं →

(i) दजिया → मैदानी भागों में

(ii) चिमाता → पहाड़ी ढालों पर

- इन कृषि को धरम में डुमिंग व m.p में कुमरि कहते हैं।

4. दक्षिणी-पूर्वी पठारी प्रदेश :

यह राजस्थान के द. पूर्वी भाग में स्थित मालवा के पठार का विस्तार माना जाता है।

* भौतिक विशेषताएँ :

↓ विस्तार →

यह राजस्थान के द. पू. भाग में मुख्य रूप से कोटा, बूंदी, बाँरा, झालावाड में विस्तृत है।

2. क्षेत्रफल व जनसंख्या :

राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 7%,

जिस पर राजस्थान की कुल जनसंख्या का 11% भाग निवास करता है।

3. जलवायु :

इस प्रदेश में आर्द्र एवं अति आर्द्र जलवायु पाई जाती है।

4. मिट्टी :

इस प्रदेश में मुख्य रूप से भूयम काली, एवं लाल-पीली मिट्टियाँ पाई जाती हैं।
(करौली ↓ धौलपुर सवाईमाधोपुर)

5. शुचि :

इस प्रदेश में मुख्य रूप से कपास, गन्ना, चावल, खरटे रसदार फल, सब्जियाँ आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है।

झालावाड़ में मौसमी/संतरा सर्वाधिक होती है।

6. खनिज :

राजस्थान के इस प्रदेश में धात्विक एवं अधात्विक दोनों प्रकार के खनिज पाये जाते हैं।

जैसे → कोरा में कोरा स्लोन

भीलवाड़ में अन्नक

टोंक में तामडा (अध्यात्मिक खनिज)

7. वनस्पति:

यहाँ मुख्य रूप से खाल, रामवान, जामुन,
भाम, बरगद, रोहिटो, आदि वृक्ष पाये जाते हैं।

महुवा, बोर → आदिवासियों का खास सोना

↓
आदिवासियों का कल्पवृक्ष

8. वर्षा:

इस क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा 80 से 120 CM
तक होती है।

इस प्रदेश को दो भागों में बाँटा गया
है →

(i) विन्ध्याचल - चट्टानी प्रदेश → चूना पत्थर, चि, भी, स. मा.

(ii) हाईलैंड का पठार

* मठान जमीना अंश :

अरावली पर्वतमाला के पूरब में
स्थित है। जो कि विन्ध्याचल पर्वत श्रेणी को
अरावली से अलग करता है।

* सभी भौतिक प्रदेशों का निष्कर्ष →

उपर्युक्त विवेचन

से यह स्पष्ट होता है कि तीव्र जलवायु परिवर्तन,

भौद्योगिकीकरण, ग्रहणिकरण, धाद्युनिकीकरण एवं कृत्रीकरण के

जंगलों के विस्तार व बढ़ते हुए मानवीय हस्तक्षेप

के कारण भौतिक प्रदेशों की संरचना एवं पर्यावरण में

परिवर्तन हो रहा है। इसी कारण राजस्थान में प्रतिवर्ष

सूखा एवं अकाल की स्थिति पाई जाती है।

- अतः इसके संरक्षण के लिए एवं भौतिक संरचना में
प्रदेशों की मूल

लाने की बहुत आवश्यकता है, जिससे सतत एवं

पौषणीय विकास को बढ़ावा मिलेगा।

राजस्थान की झील

1. जयसमन्द झील ⇒
उदयपुर

निर्माण ⇒

जयसिंह ने 1685-91 A.D. में करवाया

- गौमती नदी पर बांध बनकर कर
- गौमती नदी देबर नामक स्थान से निकलती है, इसलिए इसका उपनाम देबर झील है।
- राजस्थान की सबसे बड़ी कृत्रिम झील
(मीठे पानी की)

- इस झील में 7 छोटे - बड़े टापु हैं।

✓ सबसे बड़ा टापु ⇒ बाबा का भांगडा

सबसे छोटा टापु ⇒ च्यारी

✓ → बाबा का मगरा ⇒ आइसलैंड सिक्किम रिजॉर्ट होटल

→ इस झील से दो नहरें निकाली गई हैं (चिंचई के लिए)

1. श्यामपुरा

2. भारनहर

- जयसमंद के आस-पास 'भासडिया का पत्तूर' स्थित है।

* पिछौला झील →

उदयपुर

— उदयपुर की सबसे प्राचीन व सबसे सुन्दर झील

— निर्माण →

राणा भाखा के शासन काल में 1378

A.D. में एक बंजारे के द्वारा इस झील का निर्माण करवाया गया (14 वीं शताब्दी)

बंजारे का नाम → छीतर चिडीमार

→ पुनर्निर्माण →

राणा खांगा → 1525 A.D.

→ उदयसिंह ने इस झील की घाट को पक्का करवाया ।

* पिछौला झील में दो टापुओं पर दो महल बने

हुए हैं →

1. जगमन्दिर → 1651 A.D. → जगतसिंह I

2. जगनिवास

↓

1746 A.D. में

जगत सिंह II

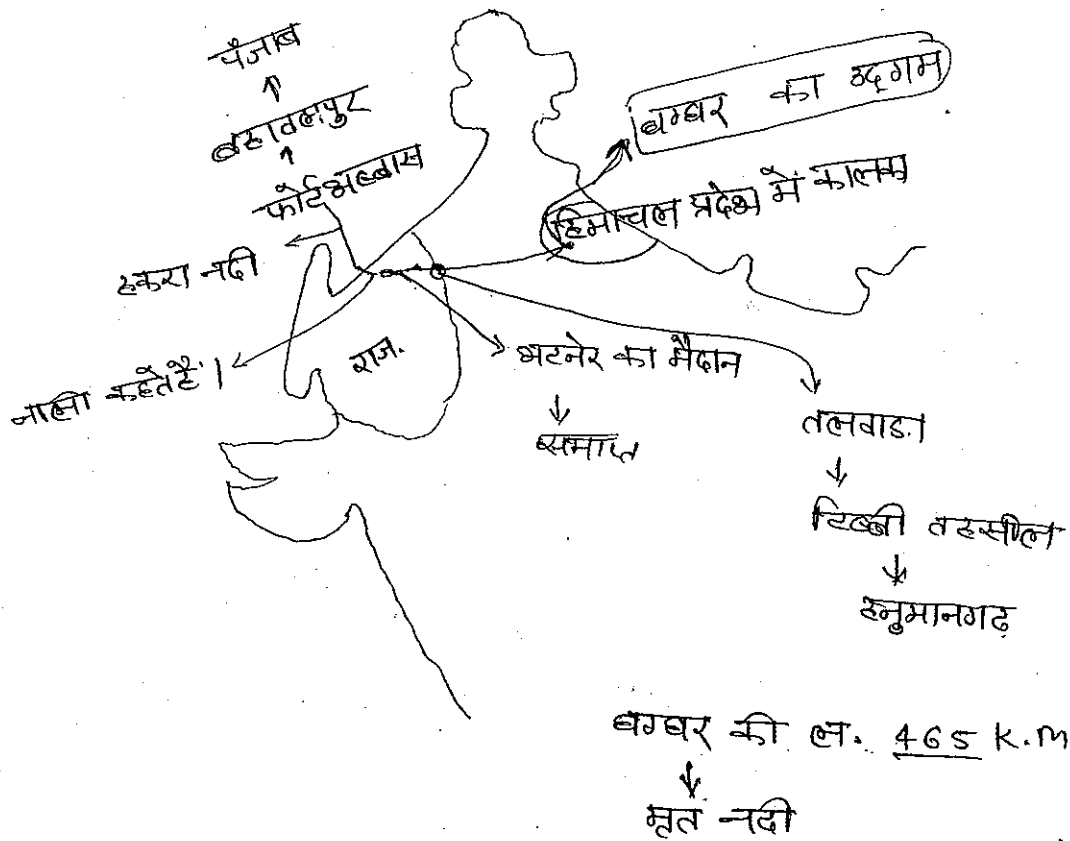
1620 A.D. में करासिंह

ने निर्माण शुरू करवाया था

अपवाह तंत्र

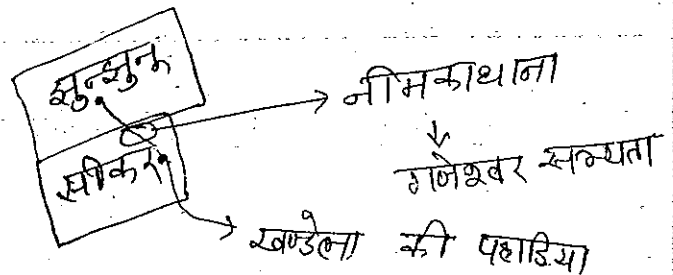
1. भौतिक अपवाह तंत्र (60%)
2. बंगाल की खाड़ी (22%)
3. अरब सागर (17%)

बग्घर River



* सांतली नदी → 100 K.M.

↓
पूर्ण रूप से राज. में बहने वाली भौतिक अपवाह तंत्र की सबसे लम्बी नदी

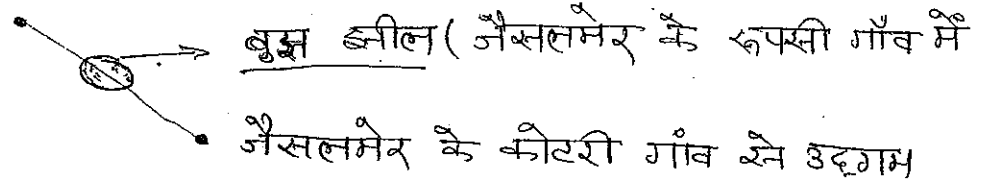


* काकजम → जैसलमेर

↓
ल. 17 k.m.

अन्तः स्थलीय अपवाह तंत्र की सबसे छोटी नदी
- इसे मसूखी नदी भी कहते हैं।

मीठा खाड़ी
(समाप्त)

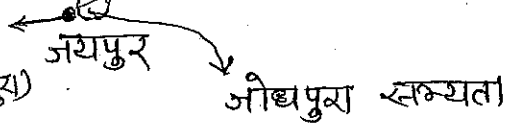


* साबी नदी ⇒

जयपुर, अलवर

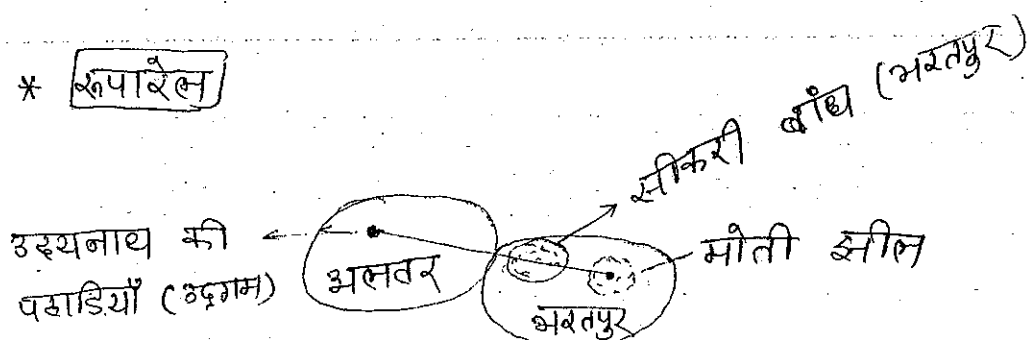
हरियाणा
↓
पारंगीदी

सेबक की
पहाड़ियाँ (आल्पुरा)
(उद्गम)



अलवर की मुख्य नदी है।

* रूपारेल



* मेंथा नदी →

मनोहरपुर थाना (जयपुर)

की पहाड़ियाँ
(उद्गम)

नागौर

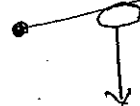


सांभर झील

भूतवाँ के जैन मन्दिर

* रूपनगढ़

नाग पहाड़ रिजर्व फॉरेंस्ट
(अजमेर)



निम्बार्क सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ
(अजमेर)

सांभर झील
(जयपुर)

राजस्थान का सबसे बड़ा अणु शक्ति केन्द्र (भारत का IInd)

Imp: रावतभाटा → राजा प्रताप सागर बाँध → $43 \times 4 = 172 \text{ mw}$.

जानेरा (कोटा) → कालीसिंधु नदी मिलती है।

Imp → कोटा डाबर → कोटा बैराज → बाँधी नहर
बाँधी नहर → 8 लिफ्ट नहर

स. माधोपुर के पलिया नामक स्थान पर पार्वती नदी मिलती है।

very Imp: खण्डार नामक स्थान पर शमैश्वर में बनास + सोम + चम्बल का संगम होता है →

त्रिवेणी संगम

↓
शमैश्वर में

करौली, धौलपुर से बहते हुए U.P. में इलाहाबाद के मुस्ताफा-गंज नामक स्थान पर यमुना नदी में मिल जाती है।

→ चम्बल नदी राज., M.P. व U.P. के मध्य सीमा बनाती है।

Imp: भारत का सबसे बड़ा अणु शक्ति केन्द्र → तारापुर (महाराष्ट्र)

IInd → रावतभाटा

* चम्बल की सहायक नदियाँ →

बामनी

कालीसिंधु

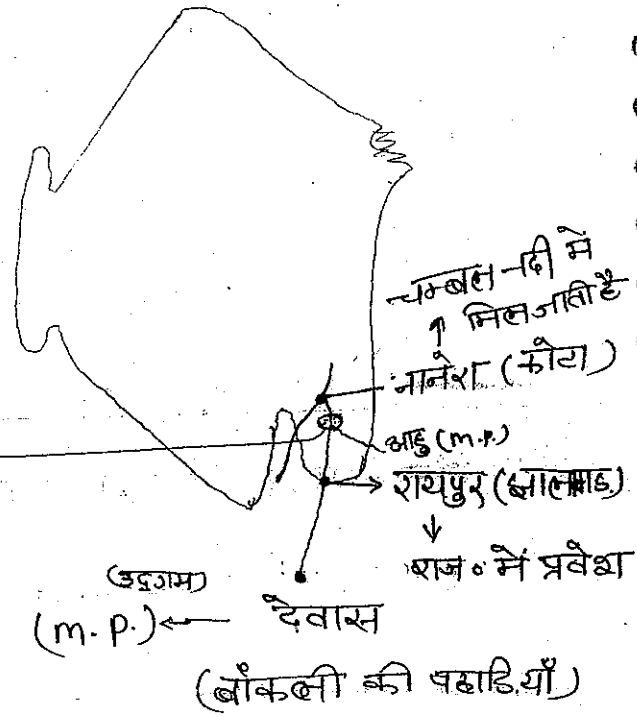
पार्वती

बनारस
 शीप
 मैज
 मंगली
 परवन
 चन्द्रमगा
 निवाज
 धौडा पछाड

* कालीसिन्ध नदी:
 ↓
 m. p. से उद्गम

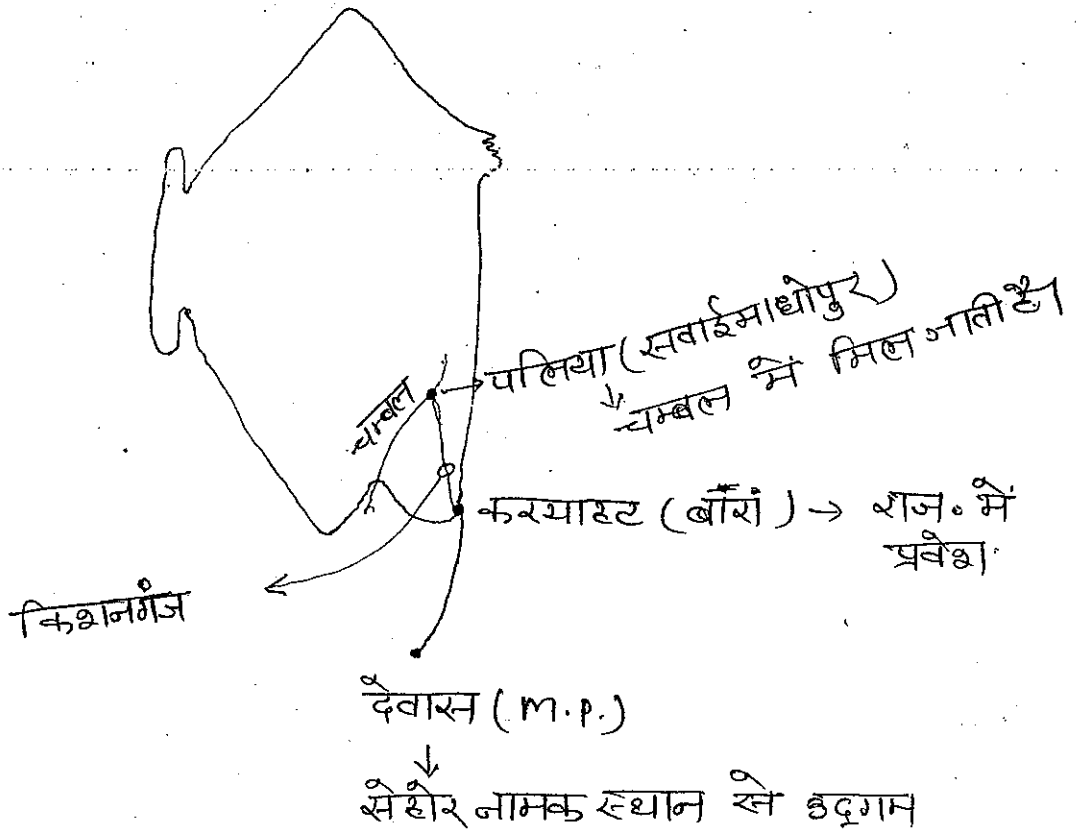
गागरोन (झासावाड) में आहु
 नदी मिलती है।
 - इस संगम को सामेला
 कहते हैं।

- ⊙ यहाँ भीड़भाड़ की दरगाह
- ⊙ पीपा ~~का~~ की छतरी
- गागरोन का जलकुर्ष



Note ⇒ कालीसिन्ध नदी करौली की सपौरा की नदी से निकलती है।

* पार्वती नदी ⇒ राज. की सबसे पूर्वी नदी ।

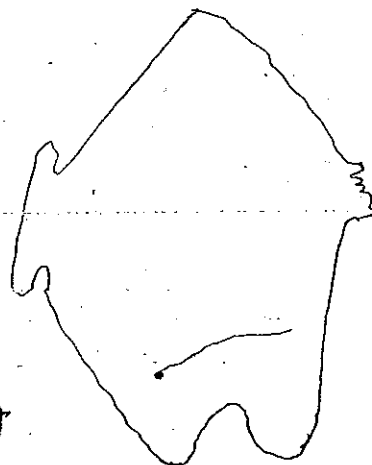


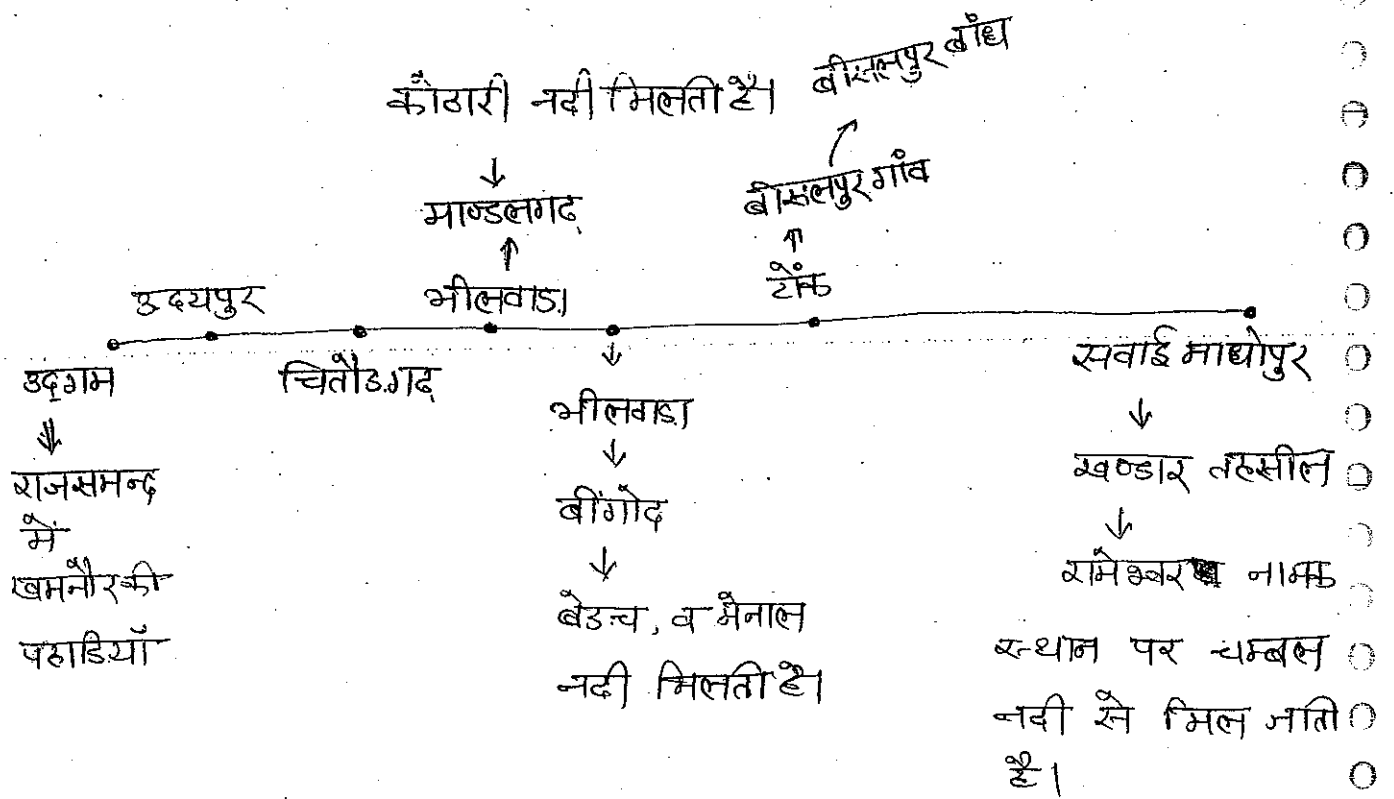
चम्बल नदी के बाद दूसरी नदी जो राज. व M.P. के मध्य सीमा बनाती है

* बनास नदी ⇒ 480 K.M.

उपनाम → वर्णाश्रा
वशिष्ठी
उन की आश्रा

उद्गम → राजसमन्द में खमनौर की पहाड़ियों से





बैडच + मैनाल + बनास → बीगोढ़ (भीलवाड़ा)
 ↓
 त्रिवेणी संगम

- बीरलपुर बाँध के समीप खारी व डाई नदी बनास से मिलती है।

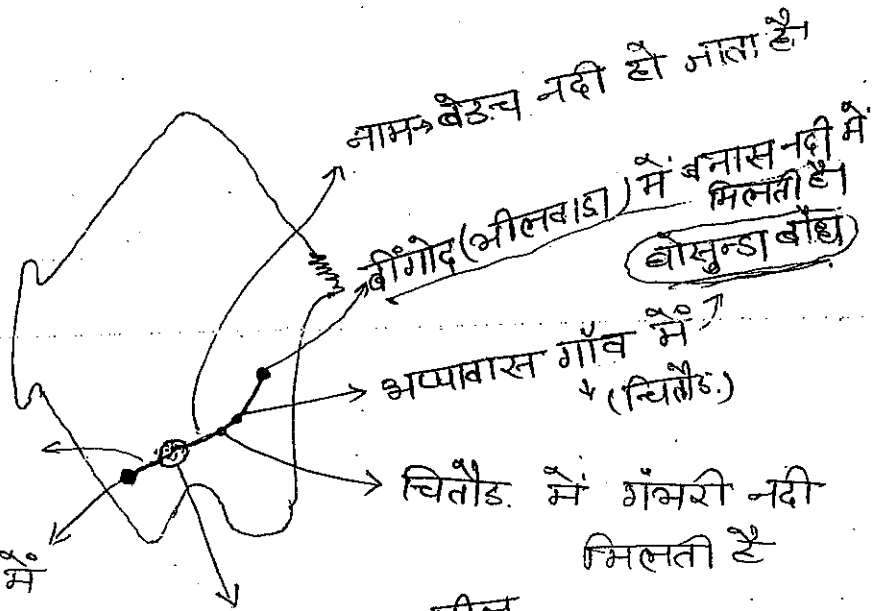
Note ⇒ पम्बा या पम्बन द्वीप मन्नार की खाड़ी में स्थित है, जिस पर रामेश्वरम तीर्थ स्थल बना हुआ है।
 ↓
 (तमिलनाडु)

* बैडच नदी →

भायड नदी कहते हैं
↓
आरुड सभ्यता

ठक्यपुर में

गौमुन्दा की पहाड़ियों
से उद्गम



नाम बैडच नदी हो जाता है

बीगोद (भीलवाडा) में बिनास नदी में
मिलती है

बोसुन्दा बाँध

भप्पावास गाँव में
(चितौड)

चितौड में गंबरी नदी
मिलती है

ठक्यसागर झील
में गिरती है

→ गंबरी नदी व बैडच नदी के संगम पर चितौडगढ़
दूम स्थित है।

* कौठारी नदी →

उद्गम → दिवेर पहाड़ी (राजसमंद)

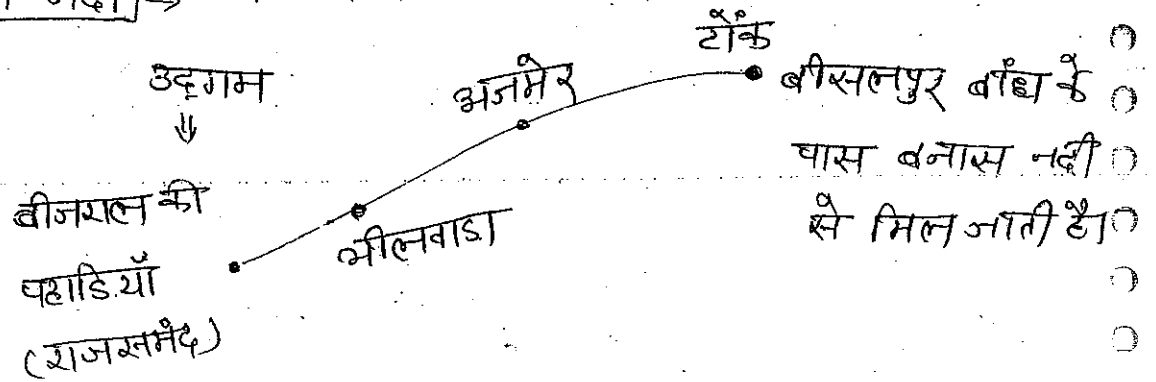
↓
भीलवाडा में भाण्डल कस्बा में पहुँचती है,
यहाँ मैजा बाँध बना है।

भीलवाडा में कौठारी नदी के किनारे

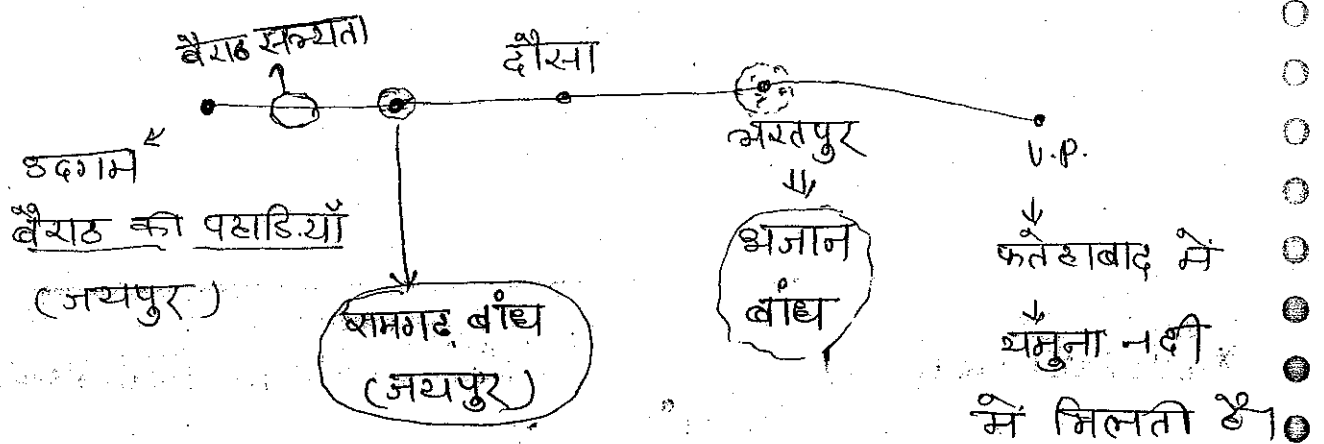
बागौर सभ्यता स्थित है।

→ 'भाण्डलगढ़' में आकर यह नदी बनास नदी से मिल
जाती है।

* खारी नदी → मीठे पानी की नदी है।



* काणगंगा → अर्जुन की गंगा कहते हैं।



- इस नदी के किनारे बैराठ (जयपुर) में बैराठ सभ्यता है, जहाँ बौद्धों के अवशेष मिले हैं [प्राचीन बौद्ध संस्कृति का प्रमुख केन्द्र माना जाता है] ।

* पार्वती नदी →

उद्गम → करौली

↓
सपोरा तहसील

↓
नादी की पहाड़ियों से

- इस नदी पर 'पांचना बांध' बना है। [करौली]

↓
मिडली से निर्मित राजस्थान का सबसे
बड़ा बांध है, जिसे अमेरिका की सहायता से बनाया
गया है।

→ सहायक नदी →

भैंसावट

माची

धरा

भद्रावती

बरखैडा

} पांचना बांध के पास पार्वती
नदी से मिलती है।

→ यह नदी u.p. में यमुना नदी मिलती है।

* अरब सागर का अपवाह तंत्र (17%)

Imp 1. माही नदी ⇒

कुल ल. ⇒ 576 K.M.

राज. में ल. ⇒ 171 K.M.

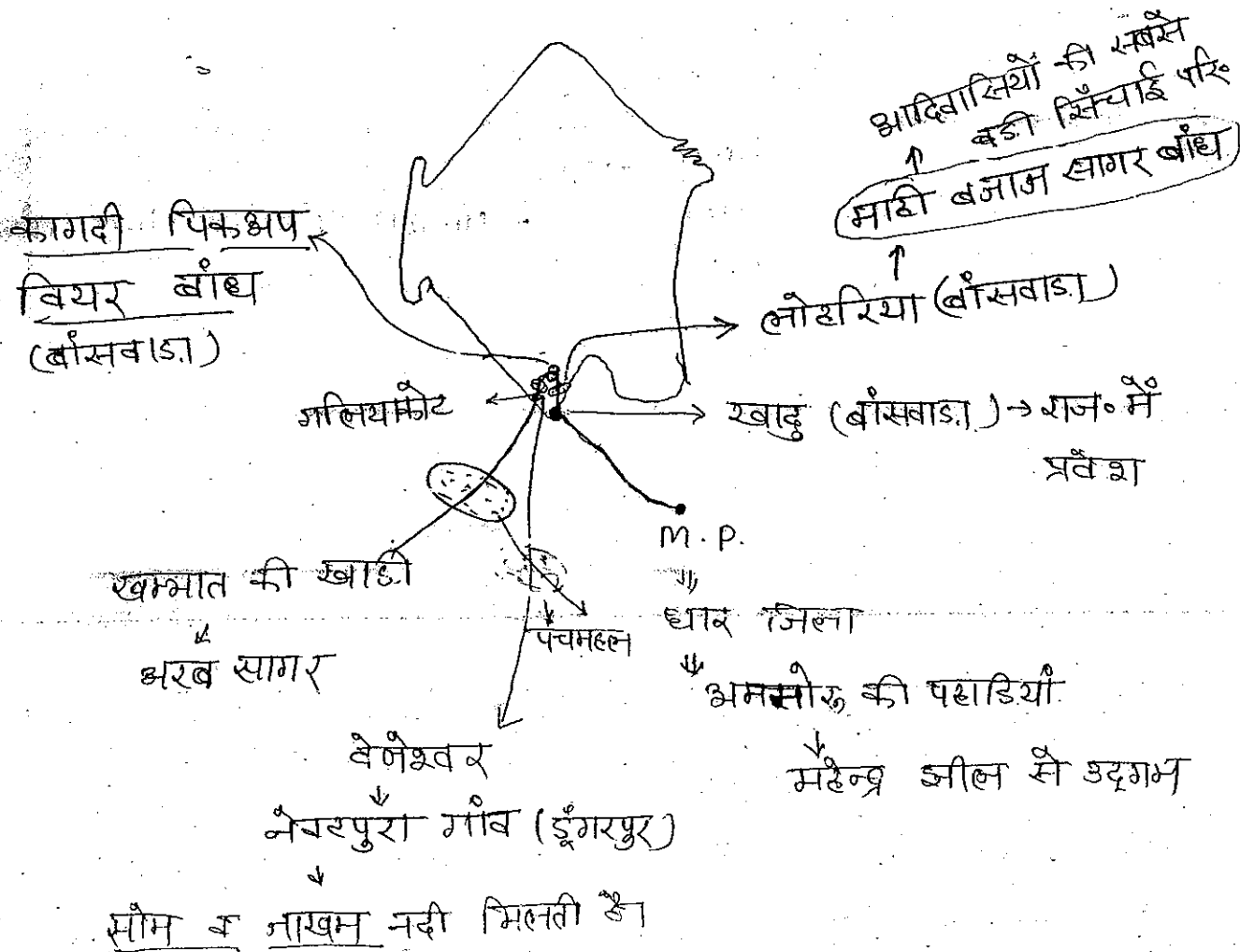
Imp* उपनाम ⇒

वागड की गंगा

कांठल की गंगा

आदिवासियों की गंगा

दक्षिण राज. की जीवन रेखा



- खम्भात की खाड़ी में गिरती है।

* वैणेश्वर (डूंगरपुर) →

माघ पूर्णिमा के दिन मेला भरता है।

↓
भादिवासियों का कुंभ करते हैं।

माही + शोम + जाखम → त्रिवेणी खंगम

- वैणेश्वर के पास एक स्थान है → गलियाकीट (डूंगरपुर)

↓

1. बौहरा सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ

2. फखरुद्दीन शाह की दरगाह

3. रमकडा उद्योग

↓
(खिलौना उद्योग)

Imp → माही नदी कर्क रेखा को दो बार काटती है।

कीर्ती नदी भूमध्य रेखा " " " " "

लिम्पीपी नदी मकर रेखा " " " " "

→ पंचमहल → दामपुर (गुजरात में)

↓

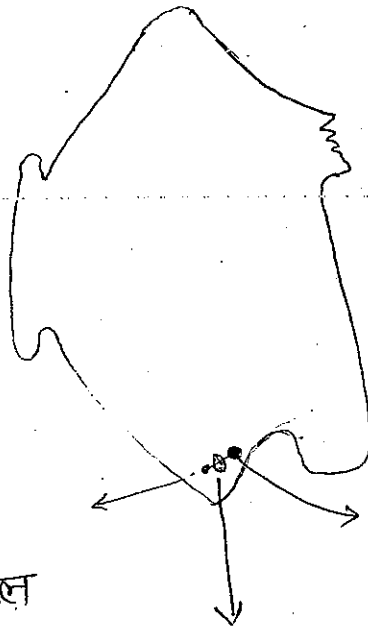
कडाना बांध बना है।

→ इस नदी में गुजरात व राजस्थान की मिश्रित परियोजना है।
(55%) (45%)

$45 \times 2 = 90$

खार → हनुमान जट में इन्दिरा (स्थान) गौधी नहर प्रवेष्टा करती है।
क्षीताबाडी का मेला (हर्षोत्त) बारां
↓
शहरिया जनजाति का कुंभ

* जाखम नदी



डूंगरपुर
↑
भंवरपुरा में
महि नदी में मिल
जाती है।

उद्गम →

भंवरमाता की पहाडियाँ
(प्रतापगढ़)

जाखम बाँध → 81 m. ऊँचा

↓
प्रतापगढ़ के जाखमिया नामक स्थान पर

↓
Rajasthan का सबसे ऊँचा बाँध

- प्रतापगढ़ में यह नदी सीतामता अभ्यारण्य से गुजरती है।

100-200 मी ऊँचा
ठंडलगाई
↓
उदनगिलहरी के famous
सिंह
Rajasthan का सबसे लम्बा बाँध →

महि बजाज सागर बाँध

↓
ल. = 3109 मी.

- उदनगिलहरी को स्थानीय भाषा में 'मझौवा' कहते हैं।

* सोम नदी :

उद्गम → बीकानेर की पहाडियाँ (डूंगरपुर)



भंवरपुरा गाँव (डूंगरपुर) में महि नदी

से मिलती है।

- सोम नदी पर उदयपुर में सोम कागद बांध धरि.
स्थित है।

- इस नदी पर डूंगरपुर में सोम - कनला - अम्बा
परियोजना स्थित है।

* लूनी नदी ⇒

कुल लम्बाई ⇒ 495 K.M.

राजस्थान में ल. ⇒ 330/350 K.M.

अनावाजीवाजा

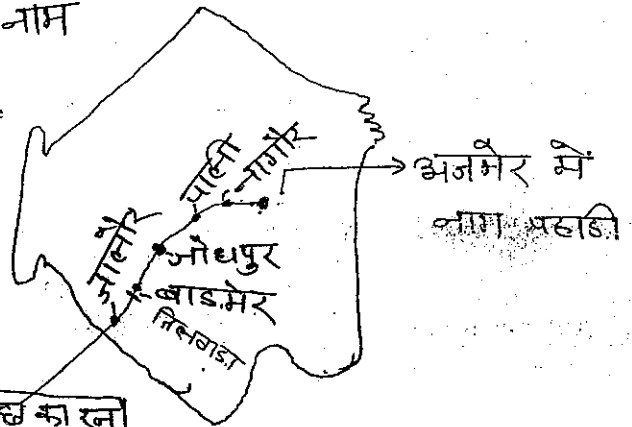
उपनाम ⇒

लवणवती → प्राचीन नाम

सागरवती → अजमेर में
कहते हैं।

→ साड़ी नदी
↓
किशनगढ़ में कहते हैं।

→ देल जाडा → कच्छ का ल
जालौर में कहते हैं।



→ यह नदी नाग पहाड़ी से बाजमेर के बालौतरा तक
पीरे घानी की नदी है।

→ बालौतरा के बाद में खारे घानी ही जाता है।

→ प. राज. की सबसे लम्बी नदी।

→ बाड़मेर जिले में तिलवाडा नामक स्थान पर
मल्लीनाथ का पञ्चमैला भरता है।



धारपाकर ग्राम की नखल के लिए प्रसिद्ध है।

→ जवाई नदी → पाली में उद्गम होता है, जालौर से
बहते हुए बाड़मेर में लूनी नदी में मिल
जाती है।

जम्प इस नदी पर पाली जिले की पाली
तहसील के गौरिया गाँव में जवाई बाँध बना
है, जिसे 'भारवाड का धमृत खरोबर' कहते हैं।

उम्मेद सागर

जलाशय

→ जमनावास महल के पास एक स्थान है 'बीजारी'
झील

↓
इस पर

नरनी का चबुतरा बना है।

→ राजस्थान का पहला बिल्पग्राम 'हवालाग्राम' इसी
झील के पास है।

Imp - देश की सबसे पहली सौर ऊर्जा से चलने वाली
नाव सर्वप्रथम इसी झील में चलाई गई।

- मानसिंह जब प्रताप के पास समझाने गया था, तब इस
नदी की पाल पर राबि भोजन का आयोजन किया।

- बदयसिंह ने राजमहलों का निर्माण कराया, जिसके पीछे
महझील होने के कारण इसे चिखोला झील कहे हैं।

- राजस्थान का दुसरा शैपर्व →

इस झील पर दूध तलाई पर है।

- इंग्लैंड के फर्ग्युसन ने बदयपुर के राजमहलों की तुलना
बिठसर महलों से की है।

3. फतेहसागर झील :

उदयपुर

- उदयपुर के देवाली नामक स्थान के पास होने के कारण इसे देवाली तालाब कहते हैं।

→ 1678 A.D. में इस झील की नींव 'इयूक भाँफ कनार' ने रखी, इसलिए इसे कनार बाँध भी कहते हैं।

→ 1688 A.D. में महाराना जयसिंह ने इस झील का निर्माण करवाया।

→ 1888 A.D. में इस झील का पुनर्निर्माण महाराना फतेहसिंह ने करवाया, इसलिए इसे फतेहसागर झील कहते हैं।

Imp इस झील में एक टापू है, जहाँ 'नेहरू उद्यान' स्थित है।

Imp सुभाष उद्यान ⇒ भण्नासागर झील

Imp देश की सबसे पहली सौर वैद्यशाला की स्थापना

इस झील में की गई। [1975 A.D.]

→ इस झील के पास खैलियों की बाड़ी (उद्यान) स्थित है।

4. राजसमन्द झील →

राजसमन्द

- राजसमन्द झील कांकरौली रेल्वे स्टेशन के पास है।

* राज प्रशस्ति → 'मेवाड़ का इतिहास'
इस झील के किनारे है।

↓
विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति

- संस्कृत भाषा में

- राजसिंह के दरबारी कवि रणछोड भट्ट तैलंग
द्वारा प्रशस्ति लिखी गई। →

- इस झील का निर्माण

काले रंग के संगमरमर के पत्थरों पर 35 अिलालेख
राजसिंह ने 1662-72 ई.स.

में करवाया।

- इस झील के उत्तरी भाग को मौ-वीकी की पाल कहा जाता है।

- इस झील के किनारे राजसमंद द्वारिकाधरि का मन्दिर है।

- इस झील के पास बैबर माता का मन्दिर बना हुआ है।

* पुल्कर झील → भजमैर

→ क्रेटर झील का उदाहरण है, प्राकृतिक व प्राचीन है।

Imp राजस्थान की सबसे बड़ी प्राकृतिक मीठे पानी की झील।

- कार्तिक पूर्णिमा को मेला → राजस्थान का शीत मेला

- 52 घाट → परिवार शासकों द्वारा निर्माण

- 1944 में मैठम मैरी ने 1 घाट का निर्माण कराया → गांधी बाँध

* डानासागर झील → भजमैर

- 1137 AD में धर्मराज ने निर्माण कराया।

- चन्द्रा नदी निकलती है।

- जहाँगीर ने यहाँ दौलत बाग बनवाया। वर्तमान में सूख

सुखा कहलाती है।

- इसका निर्माण

- शाहजहाँ ने -5, → 12 दरियों का निर्माण कराया था।

* फायसागर झील - भजमैर

* कौलायत झील - बीकानेर

* बालसमन्द → जोधपुर

* काथलाना → जोधपुर

* नक्की झील → माउण्ट आबू

खारे पानी की झील →

साँभर

डीडवाना

कुचामन

डैगाना

नावा

ताल घापर

पचपदरा

राजस्थान का 11^{वाँ} बड़ा स्थान → केवलादेव, 11^{वाँ} → साँभर झील

राजस्थान की नदी घाटी परियोजनाएं (सिंचाई)

सिंचाई :- वर्षा के अभाव में भूमि को कृत्रिम तरीके से जल पिलाने की क्रिया को सिंचाई कहा जाता है।

→ राजस्थान एक कृषि प्रधान राज्य है जहां की लगभग 70% जनसंख्या कृषि पर आधारी है।

→ राजस्थान की भौगोलिक स्थितियों के आधार पर जैसे बलूई मिट्टी, वर्षा की कमी के कारण सिंचाई की अत्यधिक आवश्यकता होती है। क्योंकि राजस्थान में भारत के औसत वर्षा का लगभग आधे से ^{भी} कम औसत वर्षा होती है। (57.6 cm)

India- 117

सिंचाई की विशेषताएं :-

- (i) सिंचाई से कृषि के उत्पादन में वृद्धि होती है।
- (ii) सिंचाई के द्वारा एक वर्ष में एक से अधिक फसलों का उत्पादन किया जा सकता है।
- (iii) सिंचाई कृषि को स्थायित्व प्रदान करती है लेकिन जिन स्थानों पर किसान वर्षा पर आधारी होते हैं उन स्थानों पर कृषि भरपूर का गुआ बन जाती है।
- (iv) जिन स्थानों पर कृषि के कृत्रिम तरीके उपलब्ध नहीं होते उन स्थानों पर कृषि असीमित होती है लेकिन जिन स्थानों पर उपलब्ध होते हैं वहां पर कृषि अर्थव्यवस्था की विशेषता बन जाती है।

राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है। जिसका कुल क्षेत्र 342.52 लाख हेक्टेयर है।

$$1 \text{ हेक्टेयर} = 100 \text{ meter} \times 100 \text{ meter} = 10,000 \text{ m}^2$$

→ इस कुल क्षेत्रफल का राजस्थान में कृषियोग्य क्षेत्र 260.01 लाख हेक्टेयर (75%) है जो कि देश के कुल कृषि क्षेत्र का 21% है।

→ इस कुल कृषि क्षेत्र में से शुद्ध सिंचित क्षेत्र 66.61 लाख हेक्टेयर एवं सकल सिंचित क्षेत्र 83.22 लाख हेक्टेयर है।

राजस्थान में सिंचाई के साधन

1. कुर व बलकूप :- 69.73%

→ राजस्थान में सबसे अधिक इन साधनों से सिंचाई जयपुर में होती है इसके अलावा अलवर, भरतपुर, करौली, पौसा, सर्वाइमाधोपुर में आदि में होती है।

2. नहरें :- 29.60%

राजस्थान में सबसे अधिक नहरों से सिंचाई गंगानगर और हनुमानगढ़ में होती है। इसके अलावा उरु, भुंयुनु, बीकानेर, जैसलमेर, वाडभेर, जालौर, जोधपुर आदि में नहरों के द्वारा सिंचाई होती है।

3. तालाब :- 0.69%

→ राजस्थान में सबसे अधिक तालाबों से सिंचाई भीनवाड़ा जिले में होती है। इसके अलावा द्वितीय राजस्थान में भी होती है।

→ नदी धारी परियोजनाएं चार प्रकार की होती हैं।

(A) बहुउद्देशीय नदी धारी परियोजना :-

वे परियोजनाएं जिन्हें सिंचाई, पेयजल एवं विद्युत आदि की पूर्ति करायी जाती है। बहुउद्देश्य परियोजनाएं कहती हैं।

जैसे

- (i) भाखड़ा नांगल परियोजना
- (ii) व्यास परियोजना
- (iii) चम्बल - धारी परियोजना
- (iv) माही परियोजना

(b) बृहद परियोजनाएं :- वे परियोजनाएं जिनका सिंचाई क्षेत्र 10,000 हेक्टेयर से अधिक हो।

जैसे-

- गंगा नहर
- इंदिरा गांधी नहर
- राजीव गांधी सिद्धमुख नहर
- रत्न पुरवा
- नर्मदा
- जाखम
- वसिष्ठपुर
- ईशरदा बांध (सवाईमाधोपुर)

(c) मध्यम परियोजनाएँ :- वे परियोजनाएँ जिनका कृषि योग्य क्षेत्र 2,000 से 10,000 हेक्टेयर तक हो।

जैसे- - सावन-भारे
- विलास
- सोम-कागदार
- सोम-कमना-अम्बा

(d) लघु परियोजनाएँ :- वे परियोजनाएँ जिनका कृषि योग्य क्षेत्र 2000 हेक्टेयर से कम हो।

a) बहुउद्देश्य नदी धारी परियोजना ⇒

(i) भाखड़ा-नांगल परियोजना :- यह देश की सबसे बड़ी

नदी धारी बहुउद्देश्य नदी धारी परियोजना है जो कि राजस्थान, पंजाब, हरियाणा की मिश्रित परियोजना है।

इस परियोजना के निर्माण का सर्वप्रथम विचार 1908 में बुईस डे के मसिण्ड में आया।

→ भेजिन स्वतंत्रता के बाद मार्च 1948 में इसका निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ।

→ इस परियोजना का निर्माण दो चरणों में हुआ जिसमें दो बांध बनाये गये।

(ii) भाखड़ा बांध :- यह देश का ^{‘पृथ’}सबसे ऊँचा बांध है जिसकी

आधारशिला 17 Nov. 1955 को देश के प्रधानमंत्री

जवाहर लाल नेहरू के द्वारा रखी गयी।

→ जो कि ~~000~~ 1960 में अमेरिकी बांध निर्माता हॉर्वे स्त्रोकेम के निर्देशन में बनकर तैयार हुआ। जिसे 22 Oct 1963 को जवाहर लाल नेहरू ने राष्ट्र को समर्पित कर दिया।

→ इस बांध का निर्माण सतलज नदी पर हिमाचल प्रदेश के बिनासपुर जिले में किया गया है। इस बांध की उंचाई 225.55 Meter, लम्बाई - 518.16 Meter & चौड़ाई - 9.14 Meter हैं।

→ इस बांध के पिछे के जलाशय को गोविन्द सागर झील कहा जाता है जो कि भारत की सबसे बड़ी कृत्रिम झील है।

(India का सबसे उंचा - रिहरी बांध - 261 Meter)

→ इस बांध के दोनो किनारों पर विद्युत संयंत्र स्थापित किये गये हैं जिसकी कुल विद्युत क्षमता

$$\rightarrow 108 \times 5 = 540 \text{ MW}$$

$$\rightarrow 157 \times 5 = 785 \text{ MW} \quad \text{है।}$$

(ii) नांगल बांध :- यह बांध पंजाब के रोपण जिले में स्थित है। सतलज नदी पर

→ इस बांध की लम्बाई 340.8 Meter & उंचाई 29 Meter है। इस बांध पर दो विद्युत संयंत्र लगाये गये हैं।

- (i) गंगोबाल - 83.58 MW
 (ii) कोरला - 84.57 MW

इस बांध से सिंचाई के लिए दो नहरें निकली गयी हैं।

* बारी - बिस्त दोआब

* भांखरा नहर

NOTE भांखरा नाल समझौता 1959 के अनुसार राजस्थान

को इसका 15.22% हिस्सा प्राप्त होता है।

→ इस परियोजना की कुल विद्युत क्षमता 1493 MW एवं सिंचाई क्षमता 14.6 लाख हैक्टेयर हैं जिसमें से राजस्थान को 2.3 लाख हैक्टेयर पर सिंचाई उपलब्ध होती है एवं 227.32 MW विद्युत प्राप्त होती है।

NOTE राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में इस परियोजना से

सिंचाई सुविधा एवं सीकर, उरु, भुंजुन, हनुमानगढ़, गंगानाथ

एवं बीकानेर को पैयजल की आपूर्ति करवायी जाती है।

* 2) चम्बल नदी धारी परियोजना :- यह परियोजना राजस्थान और M.P. की मिश्रित परियोजना है। जिसमें राजस्थान और M.P. का 50-50 % हिस्सा है।

इस परियोजना का निर्माण 3 चरणों में हुआ है।

(i) प्रथम चरण :- 1953-60 A.D.

इस चरण में दो बांध बनाये गये।

* गांधी सागर

* कोय बैराज

(ii) दूसरा चरण :- 1960-70 A.D.

इस चरण में 'राणा प्रताप सागर' बांध बनाया गया।

(iii) तीसरा चरण :- 1962-73 A.D.

इस चरण में 'जवाहर सागर बांध' बनाया गया।

(i) I चरण :- 1953-1960 A.D.

a) गांधी सागर बांध :- यह चम्बल नदी पर निर्मित सबसे पहला एवं सबसे बड़ा बांध है।

→ इस बांध का निर्माण 1960 A.D. को पूरा हुआ। यह

बांध M.P. के मंडसौर जिले में भानपुरा तहसील में चम्बल नदी पर स्थित है। इस बांध पर 23 MW की 5 विद्युत इकाइयां लगाई गई हैं जिससे कुल 115 MW विद्युत का उत्पादन होता है।

b) कोरा बैराज :- यह चम्बल नदी पर निर्मित 11 बांध हैं

→ लेकिन राजस्थान में चम्बल नदी पर निर्मित 1 बांध हैं

→ इस बांध से विद्युत का उत्पादन नहीं होता यह

केवल सिंचाई के लिए निर्मित किया गया है।

इससे सिंचाई के लिए दो नहरें निकली गई हैं।

(i) दाही नहर

(ii) बायी नहर

(i) दाही नहर :- इससे राजस्थान और MP दोनों में सिंचाई होती है।

→ राजस्थान में इस नहर से 8 लिफ्ट नहर निकली गयी हैं। जिनमें से दो कोरा में सिंचाई करती हैं एवं 6 बारां में सिंचाई करती हैं।

(i) जालीपुरा

(ii) टीरोड

} - कोरा

(iii) अन्ता - अन्ता लिफ्ट नहर

(iv) अन्ता - अन्ता लिफ्ट Milner

(v) सोरखण्ड

(vi) पंचेल

(vii) गणेशगंज

(viii) कचारी

NOTE इन नहरों से राजस्थान के कुल 15633 हेक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई होती है एवं M.P के 1.70 लाख हेक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई होती है।

(ii) बांधी नहर :- इससे केवल राजस्थान में सिंचाई होती है

II चरण :- 1960-70 A.D.

राणा प्रताप सागर बांध :-

यह चम्बल नदी पर निर्मित चित्रौड़ के रावतभारा नामक स्थान पर स्थित है

→ इस बांध पर 43 MW की 4 विद्युत इकाइयां लगाई हैं जिनसे कुल विद्युत का उत्पादन 172 MW होता है।

→ इस बांध की लंबाई 110 Meter & ऊंचाई 36 Meter है।

इस बांध से 1.2 लाख हेक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई की जाती है।

III चरण :- 1962-1973 A.D.

जवाहर सागर बांध

→ यह बांध कोरा के बोरबास नामक स्थान पर चम्बल नदी पर निर्मित है।

→ इस बांध पर 33 MW की 3 विद्युत इकाइयां लगी हुई हैं जिनसे कुल विद्युत का उत्पादन 99 MW होता है।

NOTE चम्बल नदी पर कुल विद्युत का उत्पादन 386 MW

होगा है एवं 4.58 लाख हेक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी है।

जिसमें से राजस्थान को 50% हिस्सा प्राप्त होगा है।

→ माही नदी धारी परियोजना :-

यह राजस्थान एवं गुजरात की मिश्रित परियोजना है जिसमें राजस्थान और गुजरात का अनुपात 45:55 है।

इस नदी पर तीन बांध स्थित हैं

- (i) माही वज्ज सागर बांध
 - (ii) कागदी पिकअप बीयर बांध
 - (iii) कडाना बांध - पंचमल्ल - गुजरात
↳ रामपुर नामक स्थान पर
- } - वांसवाड़ा

→ इस नदी धारी परियोजना से कुल विद्युत का उत्पादन

140 MW होगा है एवं इससे 8.8 लाख हेक्टेयर क्षेत्र पर

सिंचाई सुविधा उपलब्ध होती है।

4. > व्यास नदी धार्मि परियोजना :-

→ यह राजस्थान, पंजाब और हरियाणा की मिश्रित परियोजना है जिसका निर्माण दो चरणों में हुआ है

प्रथम चरण :-

- (i) पंडोह बांध :-> यह बांध हिमाचल प्रदेश के मणी कस्बे में व्यास नदी पर स्थित है। इस बांध पर 165 MW की 6 विद्युत इकाईयां देहरू नामक स्थान पर स्थापित की गई हैं जिनसे कुल विद्युत का उत्पादन 990 MW होता है।

→ इस बांध से एक हाइड्रो चैनल नहर निकाली गई है।

NOTE राजस्थान को पंडोह बांध से 20% एवं पोंग बांध से 59% लाभ प्राप्त होगा है।

II चरण

- (ii) पोंग बांध :- यह बांध हिमाचल प्रदेश के कांगडा जिले में व्यास नदी पर स्थित है

→ इस बांध पर 66 MW की 6 विद्युत इकाई लगी हुई हैं जिनसे कुल विद्युत का उत्पादन 396 MW होगा है।

* शतकाल में इंदिरा गांधी नहर को पोंग बांध से पानी की आपूर्ति कसौली मिले है।

→ इस चरण में हाइडल चैनल की बागी बाईपास नहर पर 20 MW की 2 विद्युत शक्ति स्थापित की गई हैं जिन्हें कुल 40 MW का उत्पादन होगा है।

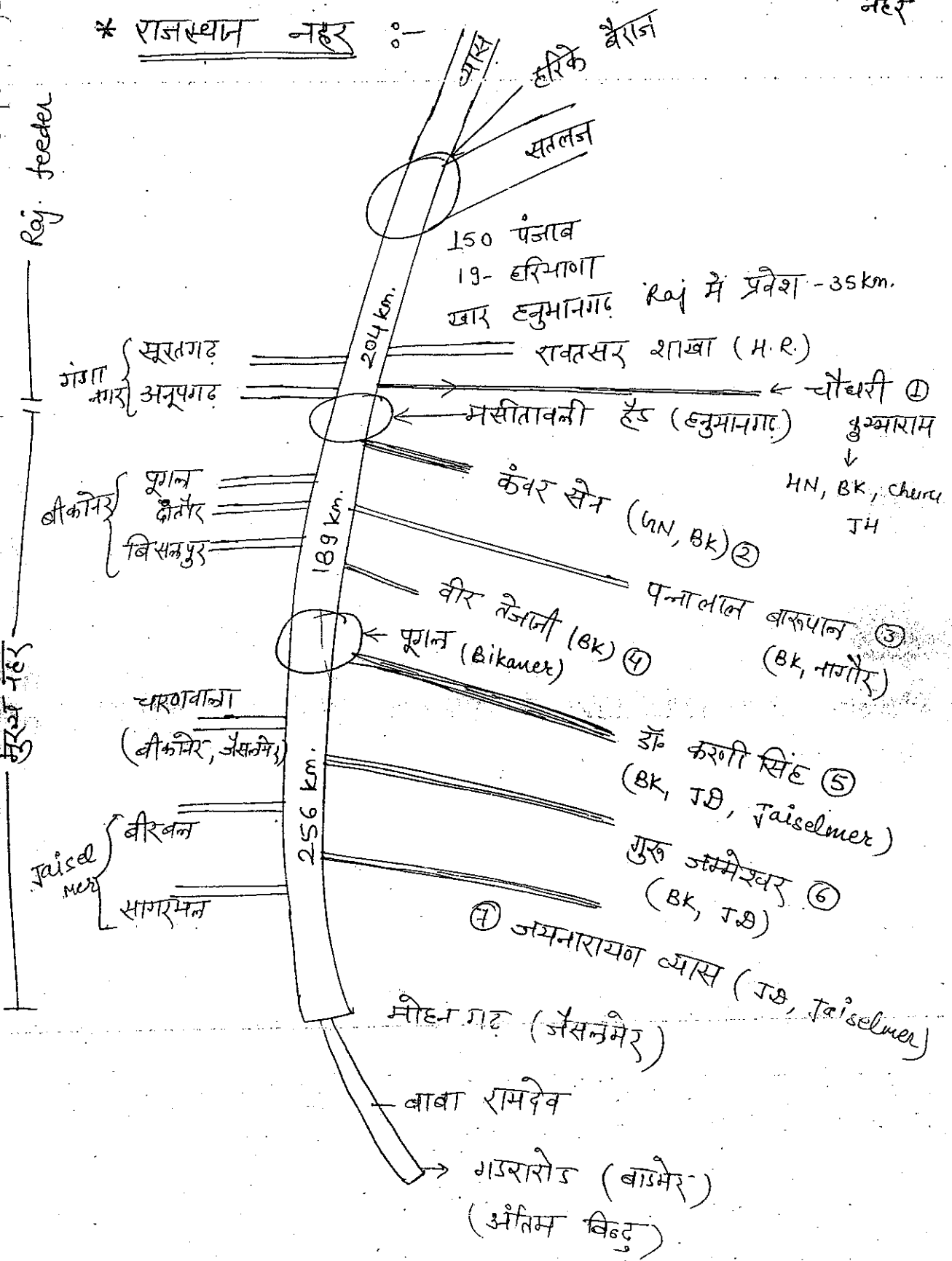
व्यास नदी जल विवाद :-

व्यास नदी के जल विवाद को शांत करने के लिए 1986 A.D. में अंतर्राज्यीय जल विवाद अधिनियम लागू किया गया। जिसमें इराडी की अध्यक्षता में एक इराडी आयोग गठित किया गया। इस आयोग ने अपनी रिपोर्ट मई 1987 A.D. में प्रस्तुत की जिसके अनुसार पंजाब को 50 लाख एकड़ फीट दरियाणा को 38 लाख 30 हजार एकड़ फीट पर एवं राजस्थान को 86 लाख एकड़ फीट पर आवंटित किया गया है।

b) **बृहद परियोजनाएं :-**

— Lift नहर

* **राजस्थान नहर :-**



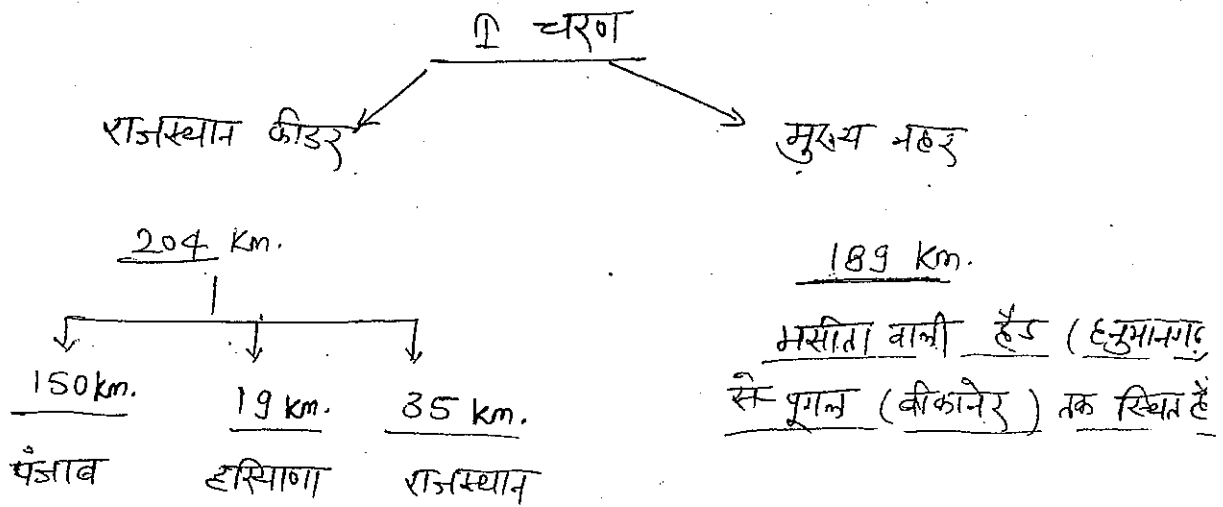
→ राजस्थान के मरु प्रदेश में हिमालय के पानी को लाकर
 हरा-भरा करने के लिए इस नहर का प्रारूप वीकानेर राज्य
 के सिर्नाई इंजीनियर कंवर सेन के द्वारा अपने स्मि लेख
 'वीकानेर राज्य में पानी की आवश्यकता (1948)' में बैंगलूर
 किया।

→ राजस्थान के मरु प्रदेश की स्थितियों को देखते हुए केन्द्र
 सरकार ने इसके प्रारूप को मंजूरी दे दी एवं सर्वप्रथम
31 March 1958 को तत्कालीन केन्द्रीय गृहमंत्री
श्री गोविन्द वल्लभ पंत के द्वारा इसकी आधारशिला रखी
 गई।

* → इस नहर को पंजाब के फिरोज़पुर जिले में प्यास और
सतलज नदियों के संगम पर स्थित हरिके बैराज से निकाला
 गया है।

→ इस नहर की कुल लम्बाई 649 km है। इस नहर की
 गहराई 21 feet & इसके तल की चौड़ाई 134 feet है।
 इस नहर का निर्माण दो चरणों में हुआ है।

1. प्रथम चरण :- प्रथम चरण में राजस्थान कीडर एवं मुख्य नहर का निर्माण किया गया



→ राजस्थान कीडर हरिके बैरान से लेकर भरतीवाली हैड हनुमानगढ़ तक स्थित है।

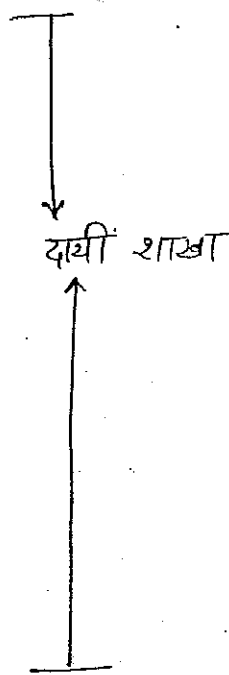
→ प्रथम चरण की मुख्य नहर भरतीवाली हैड हनुमानगढ़ से पुगल वीकानेर तक स्थित है।

2. द्वितीय चरण :-

दूसरे चरण में नहर का निर्माण पुगल (वीकानेर) से लेकर मोहनगढ़ (जैसलमेर) तक किया गया। जिसकी कुल लम्बाई 256 km. है।

इस नहर से सिंचाई के लिए सर्वप्रथम 9 शाखाओं का निर्माण किया गया।

जिनमें से 1 शाखा नहर के बायीं ओर से एवं आठ शाखाएं नहर के दक्षिण ओर से निकाली गई हैं।

- | | | |
|--------|---------------------------------------|---------------|
| (i) | रावतसर शाखा - हनुमान गढ़ - बायीं शाखा | |
| (ii) | सूरतगढ़ - गंगानगर | |
| (iii) | अनूपगढ़ - गंगानगर | |
| (iv) | पूगल | } - Bikaner |
| (v) | वंतौर | |
| (vi) | ब्रिसलपुर | |
| (vii) | चारणवाता - Bikaner + Jaisalmer | |
| (viii) | बीरवल | } - Jaisalmer |
| (ix) | सागर मन् | |
- 

→ इस नहर से सात लिफ्ट परियोजनाएं निकाली गयी हैं।

जिनमें से प्रथम चरण में एक लिफ्ट नहर एवं इसके चरण में सात 6 लिफ्ट नहरों का निर्माण किया गया है।

→ लिफ्ट नहरों का निर्माण कार्य 1968 में प्रारम्भ किया गया और सबसे पहले लूणकरणसर लिफ्ट नहर

परियोजना का निर्माण किया गया जिसका निर्माण 1976

में पूर्ण हुआ।

<u>नया नाम</u>	<u>पुराना नाम</u>	<u>जिले</u>
(i) चौधरी कुंभा राम	गंधेनी साहवा	हनुमानगढ़, बीकानेर, चुरु शुंमुनु
(ii) कवरसेन (1954)	धूणकरासर	गंगानगर, बीकानेर
(iii) पन्ता लाल वारुपाल	गजनेर	बीकानेर, नागौर
(iv) वीर तेजाजी	बांगडसर (ग्रामपंचायत)	बीकानेर
(v) डॉ. करणी सिंह	कोलायत (तह.)	बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर
(vi) गुरु जम्भेश्वर	फलोदी	जोधपुर
(vii) जय नारायण व्यास	पौकरा	जोधपुर, जैसलमेर

NOTE राजस्थान के उत्तरी व पश्चिमी जिलों (9 जिले) की इस नहर परियोजना से लाभ प्राप्त होगा।

गंगानगर, हनुमानगढ़, चुरु, शुंमुनु, बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर
वाश्मेर, नागौर

→ इस नहर परियोजना से अनुमानित: 37 लाख टन उत्पादन होगा। जिससे लगभग 1750 करोड़ रुपये की आय होगी। इस परियोजना से 19.63 लाख हैक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी।

{ प्रथम चरण - 5.46 इयरे चरण - 10.71 } - सिंचाई

84

इस परियोजना से राजस्थान के 29 कस्बे एवं 346L गांव लाभान्वित होंगे।

नहर के द्वारा ~~अ~~ वर्तमान समय में 16.17 लाख हेक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है।

इन्दिरा गांधी नहर की प्रमुख पैयजल परियोजनाएं

1. कंवरसेन पैयजल परियोजना :- यह राजस्थान की सबसे लम्बी लिफ्ट नहर परियोजना है जिसकी कुल लम्बाई 151.64km है। इस परियोजना से भगवानगर एवं बीकानेर के 228 गांव को पैयजल की पूर्ति करायी जाती है। एवं बीकानेर के लूणकरणसर तहसील को सिंचाई सुविधा उपलब्ध होती है।

2. राजीव गांधी लिफ्ट कनाल :- इस लिफ्ट कनाल से जोधपुर जिले के 158 गांव को पैयजल की पूर्ति करायी जाती है एवं इस कनाल के द्वारा जोधपुर की प्रमुख शील कायलाना शील को पानी की पूर्ति करायी जाती है जो कि राजस्थान की एकमात्र ऐसी शील है जिसमें इंदिरा गांधी नहर का पानी पहुंचता है।

3. आपणी योजना :- इस योजना से राजस्थान के धनुमानगर व चुरु जिले के 340 गांव को पैयजल की पूर्ति करायी जाती है। इसका निर्माण जापान की कम्पनी KFN

कम्पनी KFW की सहायता से किया गया है।

इंदिरा गांधी नहर परियोजना के लाभ :-

- (i) राजस्थान के पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में इस परियोजना से कृषि के उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हुई है जिससे यहां प्रतिवर्ष 1750 करोड़ रुपये की आय होती है।
- (ii) इस नहर परियोजना से मरुस्थलीय प्रदेश में वृक्षारोपण को बढ़ावा मिला है जिससे इस प्रदेश में अधिक हसियाली है। कारण वर्षा की मात्रा में वृद्धि हुई है एवं भूमि का जल स्तर उंचा उठा है।
- (iii) इस नहर परियोजना से सीमा सुरक्षा बल एवं भारतीय सेना को पैयजल की आपूर्ति करवायी जाती है इसी कारण कहा जा सकता है कि अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा में इस नहर का योगदान है।
- (iv) इस नहर परियोजना से चारागाह एवं घास के मैदानों में वृद्धि हुई है जिससे राजस्थान में पशुपालन में वृद्धि हुई है।
- (v) कृषि के अधिक उत्पादन से प्रतिगांव एवं मंडियों में रोजगार के साधन उपलब्ध हुए हैं जिससे लोगों की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है।

- (vi) इस नहर परियोजना से राजस्थान में औद्योगिक विकास को बढ़ावा मिला है।
- (vii) सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति हुई है।
- (viii) पर्यटन का अत्यधिक विकास हुआ है।
- (ix) इस परियोजना से राजस्थान में मछलीपालन, विद्युत आदि का विकास हुआ है।

इंदिरा गांधी नहर की प्रमुख वि. समस्याएं :-

1. सैम की समस्या :- किसानों के द्वारा अत्यधिक सिंचाई एवं जल के अत्यधिक रिसाव के कारण नहर के आस-पास का क्षेत्र कलकली होता जा रहा है। जिसे सैम की समस्या कहा जाता है। इससे अत्यधिक मात्रा में भूमि बंजर होती जा रही है।

सैम समस्या के कारण

- (i) समुचित जल व्यवस्था ना होने के कारण किसानों के द्वारा अत्यधिक सिंचाई का प्रयोग किया जाता है।
- (ii) भूमि की लवणता के कारण जल का रिसाव जमीन के अंदर तक पूर्णतया नहीं हो पाता।
- (iii) कम गहराई पर कठोर चट्टानों का पया जाना।
- (iv) नहर के आस-पास के क्षेत्र में पानी को निकालने के लिए

प्राकृतिक विकास की कमी।

2. किसानों के द्वारा अत्यधिक सिंचाई के कारण इस क्षेत्र की भूमि लवणीय एवं क्षारिय होती जा रही है। इस समस्या के समाधान के लिए जिप्सम, हरी खाद, एवं सूने का उपयोग किया जाना चाहिए।
3. नहर के भासपास के क्षेत्र में पानी का प्राकृतिक विकास ना होने के कारण इन दलदली क्षेत्रों में अत्यधिक मच्छरों की उत्पत्ति हुई है जिससे इस क्षेत्र में मलेरिया जैसी बीमारियां काफी फैल रही हैं।
4. डॉ. J.P. जाट एवं R.K. गुर्जर ने शोध करके बताया है कि इस क्षेत्र में न्यून (निम्न) वायुदाब का केन्द्र मानसून के अनुकूल था - लेकिन अत्यधिक हस्तिल्ली के कारण यह उच्च वायुदाब में परिवर्तित हो रहा है जिससे मानसून पर प्रतिबुल प्रभाव पड़ेगा।

Ans: 5. तीव्र जलवायु परिवर्तन एवं किसानों के द्वारा सेवण धास के मैदानों को खेती में परिवर्तित कर दिया है जिससे यहां वृक्ष जीव धुप होने के कारण पर है।

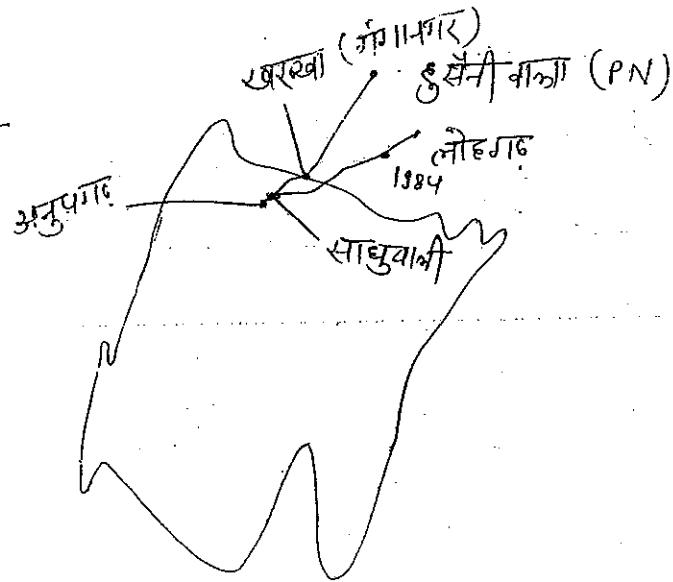
NOTE

31 Oct. 1984 को इंदिरा गांधी की मृत्यु के बाद 2 Nov. 1984 को राजस्थान नहर का नाम बदलकर इंदिरा गांधी नहर परिधीजना कर दिया गया।

2. गंगा नहर :-

पंजाब - 112 km.

राज. - 17 km.



→ यह राजस्थान में प्रथम बृहद सिंचाई परियोजना है जिसका निर्माण बीकानेर के राजा गंगा सिंह के द्वारा 1924 में करवाया गया।

→ 4 Sept. 1920 को ^{बहावलपुर} बीकानेर, ~~बहमनपुर~~ एवं पंजाब सिआसतों के मध्य एक समझौता हुआ। जिसमें राजस्थान के लिए 0.33 MAF जल प्राप्त हुआ। जिसका उपयोग करने के लिए गंगा सिंह के द्वारा 5 Sept. 1921 को फिरोजपुर डैम वर्क्स पर इस नहर की आधारशिला रखी गई।

→ इस नहर को पंजाब के फिरोजपुर जिले में हुसैनी बाणा नामक स्थान पर सतलुज नदी से निकला गया है। इस नहर का राजस्थान में प्रवेश खरखा नामक स्थान पर गंगानगर जिले में होता है।

→ खरखा से यह नहर रायसीन नगर, पदमपुर, जोरावर तक होते हुए अनुपगढ़ तक गई है।

→ इस नहर की कुल लम्बाई 129 km. है जिसमें से 112 km. पंजाब में एवं 17 km. राजस्थान में है।

→ इस नहर की वितरिकाओं की कुल लम्बाई 1280 km. है।
 * राजस्थान में इसकी चार शाखाएँ हैं →

- (i) लक्ष्मी नारायण जी
- (ii) करणी जी
- (iii) बालगढ़
- (iv) समीक्षा

→ गंगानहर की जर्जर हालत को सुधारने के लिए 1984 में 80 km. लम्बी गंगानहर लिंक चैनल का निर्माण किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य गंगानगर जिले को पानी की पूर्ति कसाना था।

गंगानहर लिंक चैनल :- इसे हरियाणा के लोहगढ़ ↓ सतलज नदी से

नामक स्थान पर निकाला गया है एवं गंगानहर से इसे साबुवाली नामक स्थान पर गंगानगर में जोड़ा गया है।

NOTE गंगानहर परियोजना से राजस्थान के 3.8 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध कवायी जाती है।

Imp → 31 Oct. 1924 को गंगानहर का उद्घाटन मॉर्डे इरविन के द्वारा किया गया।

3. निर्मला नहर परियोजना :- राजस्थान का इस नहर परियोजना में 0.5 MAF हिस्सा है। इस नहर को गुजरात के सरदार सरोवर बांध से निकाला गया है जिसकी कुल लम्बाई 532 km. है। जिसमें से राजस्थान में इसकी लम्बाई 74 km. है।

→ इस नहर का पानी राजस्थान में सबसे पहले सीलू गांव जाळौर में 18 March 2008 को पहुंच गया। लेकिन 27 March 2008 A.B. को जाळौर के लासपुर गांव में एक सभारोह के दौरान इस नहर के पानी को राजस्थान में प्रवेश कराया गया। एवं अप्रैल 2008 तक इसका पानी गांधव कला बाड़मेर तक पहुंच गया।

→ इस नहर परियोजना से जाळौर एवं बाड़मेर के 233 गांव को 2.46 लाख हेक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध करायी जागी है। एवं जाळौर एवं बाड़मेर के 1336 गांव को पेयजल की पूर्ति करवायी जागी है।

4. राजीव गांधी सिद्धमुख व नौहर परियोजना :-

1982 के समझौते के अनुसार रावी-व्यास नदियों के जल का उपयोग करने के लिए इस नहर का निर्माण श्रोपीथन आर्थिक समुदाय की सहायता से किया गया। इस नहर का उद्घाटन 5 अक्टू. 1989 को हनुमानगढ़ के

त्रिनारी नामक स्थान पर राजीव गांधी के द्वारा उद्घाटन किया गया। इस नहर परियोजना से राजस्थान के दुनुमानगढ़ जिले की नौदर व भादरा तहसील एवं थुरु जिले की राजगढ़ तहसील के 1 लाख 1,11,458 ~~हैक्टेयर~~ हैक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध होती है।

5. सिद्धमुख रत्नपुरवा नहर परियोजना:- इस परियोजना का निर्माण भी सिद्धमुख व नौदर परियोजना के साथ प्रस्तावित था लेकिन भारत में परमाणु परीक्षण की गतिविधियों को देखकर परोपीयता आर्थिक समुदाय ने सहायता देना बंद कर दिया। इसी कारण इस परियोजना का निर्माण जाबाई की सहायता से 1999 में प्रारम्भ किया गया।

→ इस परियोजना से दुनुमानगढ़ व थुरु जिले के 18350 हैक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई एवं दुनुमानगढ़ जिले के 24 गांव व थुरु जिले के 214 गांव लाभान्वित होंगे।

6. गुडगांव नहर / यमुना लिंक नहर परियोजना:-

→ इस नहर परियोजना को यमुना नदी से आगरा के समीप ओखला गांव से निकाला गया है।

इस नहर का राजस्थान में प्रवेश जुरेरा गांव कामा तहसील में होता है।

→ इस तरह परियोजना से राजस्थान के भरतपुर जिले के कामां व डींग तहसीलों को 28 200 हेक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध करवायी जाती है।

7. बीसलपुर बांध परियोजना :- बीसलपुर बांध परियोजना का निर्माण 1988-89 में किया गया। यह बांध रोक के बीसलपुर नामक स्थान पर बनास नदी पर स्थित है। जिससे अजमेर के सूरजपुर, किशनगढ़, केकरी एवं जयपुर खरवाड जिले को पेयजल की पूर्ति करवायी जाती है।

→ जयपुर को पेयजल पूर्ति के लिए सूरजपुरा गांव (रोक) से लेकर बान्नावाला (संगमौर, जयपुर) तक एक पाइप लाइन का निर्माण किया गया है।

→ इस परियोजना से रोक जिले के 256 गांवों के 81 800 हेक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध करवायी जाती है।

इस बांध से दो नहरें निकाली गई हैं।

(I) दाहिनी नहर - 51.65 km. (ii) बायीं नहर - 18.64 km.

8. मैजा बांध परियोजना :- इस बांध का निर्माण

भीलवाड़ा में मांडल कस्बे के समीप कोठारी नदी पर किया गया है।

→ इस बांध की पाल पर ग्राम मांडल पार्क स्थित है।

→ इस बांध से भीमवाड़ा जिले को 10.5 हजार हेक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई जाती है एवं भीमवाड़ा जिले को इसी बांध से पेयजल की पूर्ति होती है।

नदी धारी परियोजना

स्थान

नदी

- | | | |
|---|-------------|------------|
| 1. पार्वती बांध परियोजना
नदी - पार्वती | धौलपुर | पार्वती |
| 2. इंदिरा गांधी लिफ्ट नहर परियोजना | सवाईमाधोपुर | चम्बल |
| 3. पिपलदा बांध परियोजना | सवाईमाधोपुर | चम्बल |
| 4. ईसरदा बांध परियोजना | सवाईमाधोपुर | बनास |
| 5. मोरेन बांध परियोजना | सवाईमाधोपुर | मोरेन |
| 6. मेरडी सागर बांध परियोजना | रोहं | सरोहरा |
| 7. अणवान बांध परियोजना | चिन्नोड़ा | नाहीचों से |
| 8. ओराई बांध परियोजना | चिन्नोड़ा | ओराई |
| 9. पांचमा बांध परियोजना | करौली | गंभीर |
| 10. चूलीदेवी बांध परियोजना | करौली | नाही |
| 11. छापी सिंचाई परियोजना | शान्तावाड़ा | छापी |
| 12. बांकली बांध परियोजना | जालौर चाली | संकी कंकनी |

13. किलास बांध परियोजना बांरा

14. नारायण सागर बांध परि. अजमेरु

जलवायु (Climate)

जलवायु :-

राजस्थान किसी स्थान पर दीर्घकाल की औसत वायुमंडलीय दशाओं को (तापमान, वायुदाब, आर्द्रता, वर्षा, वायुवेग) जलवायु कहा जाता है। (30-35 yrs. का समय)

मौसम :- किसी स्थान पर अल्प समय की औसत वायुमंडलीय दशाओं को मौसम कहा जाता है।

जैसे - some hours, some days

निपकर्ष :- वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के कारण स्थानीय एवं वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन हो रहे हैं

जैसे - बाइमेर में बाढ़, वर्षा की तीव्रता व आवृत्ति में परिवर्तन एवं अचानक जलवायु परिवर्तन हो रहे हैं।

अतः इन्हें रोकने के लिए क्रमबद्ध विकास, पर्यावरण मित्र विकास एवं पर्यावरण प्रबंधन की आवश्यकता है।

* राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक

राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है जिसके अलग-2 स्थानों पर अलग-2 प्रकार की भौतिक विशेषाएं हैं जैसे पर्वत, पठार, भूस्थल, मैदान जिन्हे राजस्थान में निम्न कारक प्रभावित करते हैं।

1. अक्षांश एवं देशांतर स्थिति :- राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार $23^{\circ}3'N$ अक्षांश से $30^{\circ}12'N$ अक्षांश तक विस्तृत है। इसी कारण राजस्थान के वांसवाड़ा जिले से निचे का भाग कर्क रेखा के निचे दृष्टा करिबंध में एवं राजस्थान के उपर का भाग उपोष्ण करिबंध में आता है।

→ ग्रीष्म काल के समय सूर्य की किरणें वांसवाड़ा जिले में लगभग सीधे एवं गंगानगर जिले में सर्वाधिक लिरधी होती हैं। राजस्थान में ऊष्ण एवं उपोष्ण जलवायु पायी जाती है।

2. समुद्र तल से डूरी :-

→ राजस्थान की समुद्र तल से डूरी अधिक होने के कारण यहाँ शुष्क जलवायु पायी जाती है।

→ राजस्थान की अरब सागर से डूरी 400 km. एवं कच्छ की खाड़ी से 225 km. एवं खंभात की खाड़ी से 275 km. हैं।

→ राजस्थान एवं पश्चिम बंगाल दोनों समान अक्षांशीय स्थिति पर स्थित होने के कारण भी समुद्र के तट के कारण पश्चिम बंगाल में दृष्टा आर्द्र जलवायु एवं राजस्थान में शुष्क जलवायु पायी जाती है।

3. अरावली पर्वतमाला की स्थिति :- राजस्थान में अरावली पर्वतमाला मध्यवर्ती भाग में स्थित है जिसके पश्चिम में मरुस्थल एवं पूर्व व दक्षिण-पूर्व में पठार व मैदान स्थित हैं।

→ अरावली पर्वतमाला मानसून के समानांतर होने के कारण इसके पश्चिमी भाग में कम वर्षा होती है जिससे यहाँ की जलवायु शुष्क पायी जाती है।

4. समुद्र तल से उंचाई :- राजस्थान में अरावली पर्वत-माला की समुद्र तल से औसत उंचाई 930 Meter है जबकि अन्य क्षेत्रों की औसत उंचाई 350 Meter है।

→ अत्यधिक उंचाई वाले क्षेत्रों में वर्षा, वनस्पति एवं आर्द्रता अधिक पायी जाती है जबकि निचले स्थानों पर इनकी कमी पायी जाती है। जिससे अलग-2 स्थानों पर अलग-2 प्रकार की जलवायु होती है।

5. वनस्पति :- राजस्थान में पूर्वी एवं दक्षिणी-पूर्वी भाग में अधिक वनस्पति जबकि मरुस्थलीय प्रदेश में बहुत कम वनस्पति पायी जाती है। इसी कारण इन क्षेत्रों में जलवायु में अंतर पाया जाता है।

6. धरातल की बनावट :- राजस्थान में मरुस्थल, पर्वत पठार और मैदान सभी प्रकार की धरातलीय संरचना पायी जाती है। और इसी धरातलीय संरचना से राजस्थान की

जलवायु प्रभावित होती हैं।

7. मृदा की संरचना :- अरावली के पश्चिम में रेतीली

मिट्टी जिसमें मौसम-2 कण पाये जाते हैं इसी कारण यहाँ दिन के समय अधिक तापमान एवं रात्रि के समय कम

तापमान पाया जाता है एवं मिट्टी में आर्द्रता कम एवं मौसम में शुष्कता अधिक 4 होती है। जबकि अरावली के

पूर्व में चिकनी मिट्टी जिसमें बारीक कण होते हैं जो

धीरे-2 गर्म एवं धीरे-2 ठंडे होते हैं इसी कारण यहाँ

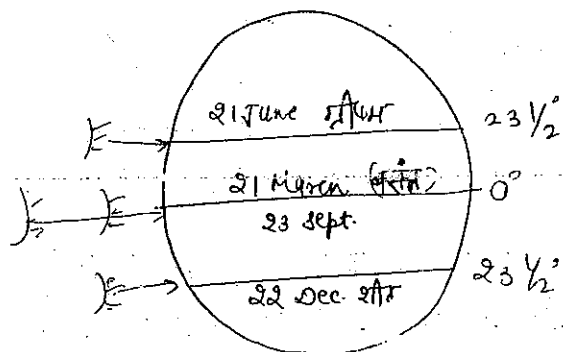
मौसम में आर्द्रता बनी रहती है। एवं वनस्पति आवरण

अधिक पाया जाता है।

8. मानसून :- यह भी राजस्थान की जलवायु को

प्रभावित करता है।

राजस्थान में जलवायु के आधार पर ऋतुओं के प्रकार



1. ग्रीष्म ऋतु :- यह ऋतु मध्य मार्च से जून तक होती है। इस ऋतु में अधिक तापमान के कारण राजस्थान के परिचयी प्रकार में तेज एवं गर्म लू-पवने चलती हैं।

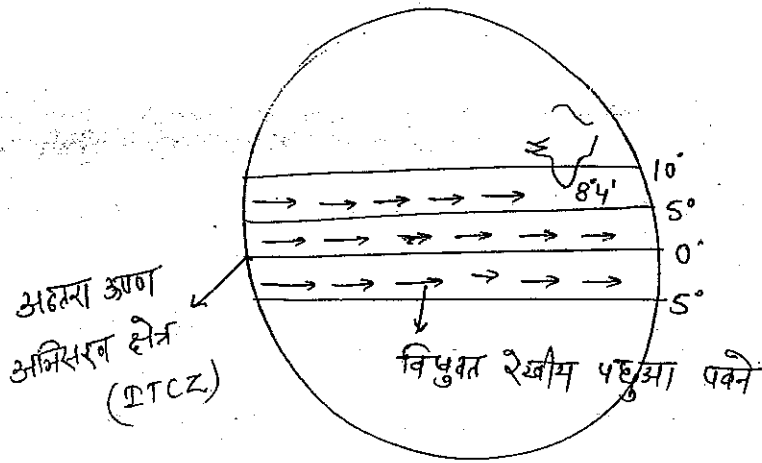
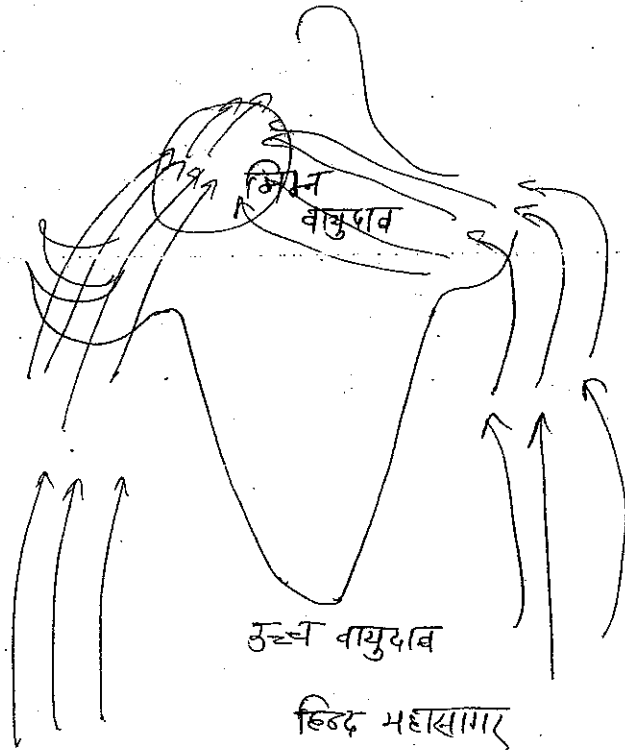
→ ये लू-पवने वायु के मंदर के साथ मिलकर आंधी में परिवर्तित हो जाती हैं।

→ इसी कारण राजस्थान के गंगानगर जिले में सबसे अधिक आंधियां (27 days) व सबसे कम आंधियां झालावाड़ जिले में आती हैं (केवल 3 days)

→ राजस्थान में ग्रीष्म ऋतु का औसत तापमान 38°C होता है। एवं सबसे गर्म जिला व महिना जुहू व जून होते हैं।

→ इसी ऋतु में राजस्थान का सबसे शुष्क स्थान फलोदी जोधपुर होगा है।

2. वर्षा ऋतु :- वर्षा ऋतु मध्य जून से सितम्बर तक होती है। इस ऋतु में अधिक ताप के कारण भारत के उत्तरी भाग में निम्न वायु दाब पाया जाता है। जबकि हिंद महासागर में उच्च वायु दाब का केन्द्र बनता है। जिससे हवा हिंद महासागर की ओर से भारत के उत्तरी भाग की ओर चलने लगती है जिसे भारत में दक्षिणी-पश्चिमी-मानसून के नाम से जाना जाता है।



वर्षा ऋतु की विशेषताएँ :-

(i) राजस्थान में औसत वार्षिक वर्षा - 57.6 cm

राज्य में सबसे अधिक वर्षा वाला जिला - सालावाड (40 days) ^{80-120cm}

राज्य में सबसे कम वर्षा वाला जिला - जैसलमेर (5 days)
→ 10 cm.

→ सबसे अधिक वर्षा वाला स्थान - माउंट आबू (सिरीही)
(48 days)

→ सबसे कम वर्षा वाला स्थान - समगांव (बैलमौर)
(0 day)

→ राजस्थान में सबसे अधिक वर्षा - जुलाई के महीने में
(34%)

एवं अगस्त माह में 33% होती है।

→ वर्षा वाला दिन उसे कहा जाता है जिस दिन 0.25 cm. वर्षा होती है।

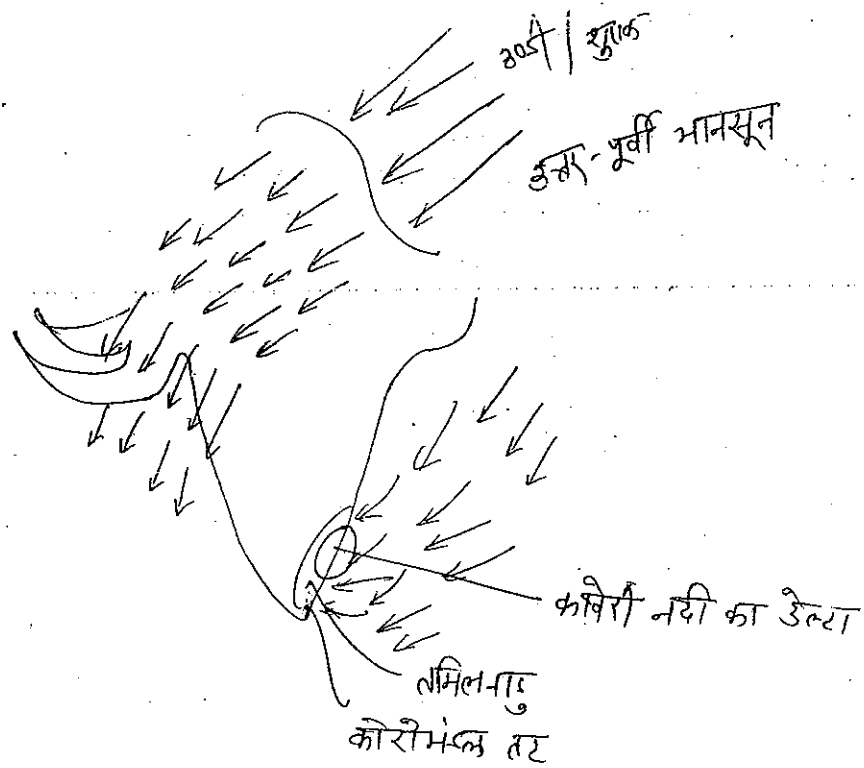
→ राजस्थान में 50 cm. वर्षा रेखा राजस्थान को दो भागों में एवं 25 cm. वर्षा रेखा मरुस्थल को दो भागों में बांटी है।

→ राजस्थान में कोनों मानसूनों से वर्षा प्राप्त करने वाला स्थान
राजस्थान का दक्षिणी भाग है।

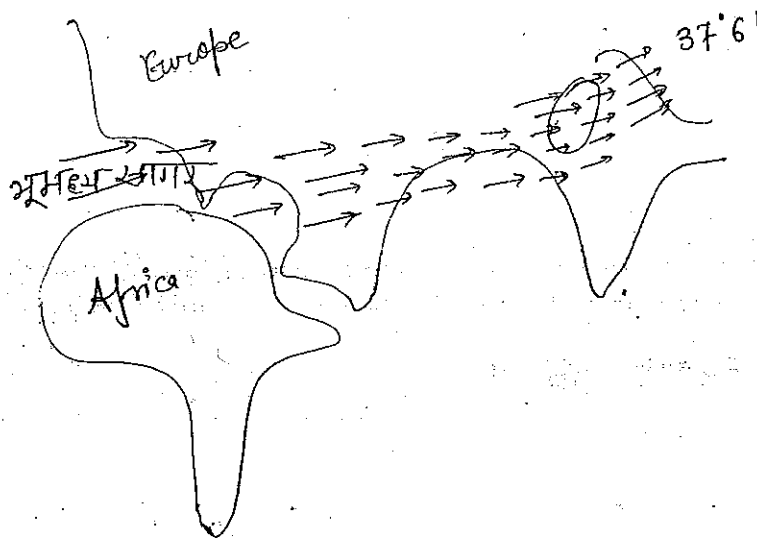
→ राजस्थान में अधिकांशत वर्षा लगभग 90% दक्षिणी-पश्चिमी
मानसून से होती है

शीत ऋतु :- मध्य दिसम्बर से लेकर फरवरी तक शीत ऋतु होती है लेकिन Oct से लेकर मध्य December तक मानसून के लौटने का समय होता है।

(1)



(2)



उत्तरी-पूर्वी मानसून :- इस मानसून से भारत के केवल, तमिलनाडु राज्य में / कवेरी नदी के डेल्टा पर / कोरोमंडल तट पर वर्षा होती है।

भावठ :- शीत ऋतु में भूमध्य सागर से आने वाले पश्चिमी विक्षोभों (भूमध्य सागरीय चक्रवात) से भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में जो वर्षा होगी उसे भावठ के

नाम से जाना जाता है।

यह वर्षा सर्वाधिक जनवरी के महीने में होती है जिसे सबसे अधिक लाभ गेहूँ की फसल को होता है। इसी कारण इसे रबी का अमृत कहा जाता है।

Imp → भारत का सबसे दीर्घ दिन शीत ऋतु में 22 Dec. होता है एवं सबसे ठंडा महीना जनवरी का होता है।

राजस्थान में वर्षा की कमी के कारण :->

- (i) जो मानसून राजस्थान में प्रवेश करता है (अरब सागर) तो वह मरुस्थल के अत्यधिक तापमान एवं कम आर्द्रता के कारण मानसून की आर्द्रता में 50-90% तक कमी हो जाती है। इसके कारण मरुस्थलीय प्रदेश में कम इस शायब से कम वर्षा होती है।
- (ii) दक्षिणी-पूर्वी मानसून (बंगाल की खाड़ी) की इसी शायब राजस्थान में प्रवेश करने से पहले अपना पानी गंगा के मैदान में छोड़ आती है।
- (iii) राजस्थान में प्राकृतिक अवरोध का अभाव है।
- (iv) अरावली पर्वत-श्रृंखला अरब सागर के मानसून के समानांतर एवं नीचे होने के कारण इसके लिए प्राकृतिक अवरोध का काम नहीं कर पाती।
- (v) अत्य स्थानीय कारण

- (a) वर्षों का विकास
- (b) कंकरीट के जंगलों का विस्तार (बढ़ता हुआ शारीकरण)
- (c) जैव-विविधता का हास
- (d) जलवायु परिवर्तन
- (e) मरुस्थल का विस्तार

राजस्थान में जलवायु की विशेषताएं :-

- (i) राजस्थान में वर्षा का असमान वितरण पाया जाता है इसी कारण जिन स्थानों पर वर्षा कम होती है वहां मनुष्य का विकास कम एवं जिन स्थानों पर वर्षा अधिक होती है वहां मनुष्य का विकास अधिक पाया जाता है।

जैसे- पूर्वी मैदानी प्रदेश

- (ii) अतिवृष्टि व अनावृष्टि

अतिवृष्टि :- जिस स्थान पर अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाये उसे अतिवृष्टि कहा जाता है। इस स्थिति में एक दिन में लगभग 20-30 cm. के मध्य वर्षा होती है।

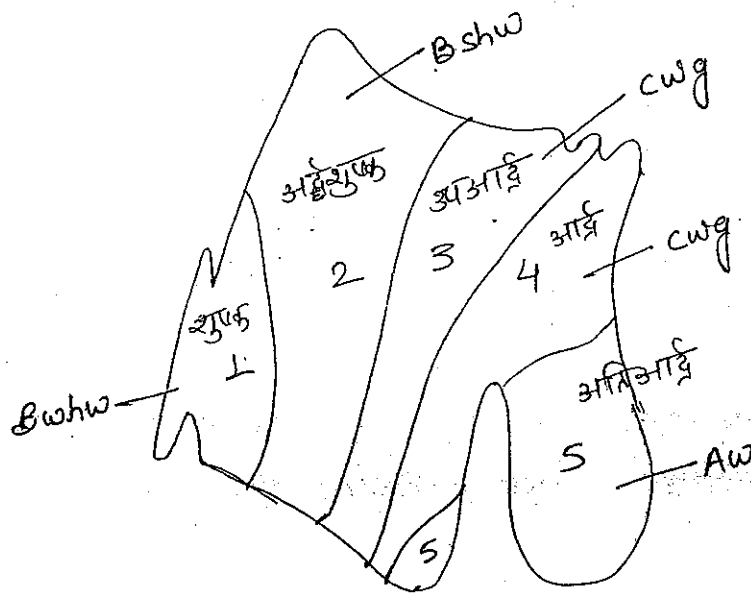
अनावृष्टि :- अकाल व सूखे की स्थिति। यह

अल्पवृष्टि :- किसी स्थान पर लम्बे समय से वर्षा नहीं होती है लेकिन उस स्थान पर एक साथ अधिक वर्षा हो जाये उस स्थिति को वृष्टि कहा जाता है।

(iii) कम आर्द्रता एवं अत्यधिक वायु वेग

(iv) यहां कम आर्द्रता, अधिक तापमान के कारण ग्रीष्म ऋतु में बू जैसी पत्तों चबती हैं।

राजस्थान के जलवायु प्रदेश :-



जलवायु प्रदेश :- वह विशिष्ट क्षेत्र जिसके अंदर जलवायु तत्व एवं वायुमंडलीय दशाओं के मध्य औसत आंतरिक समरूपता व समानता पायी जाती हो उसे जलवायु प्रदेश कहा जाता है। (तापमान, आर्द्रता, वायुवेग, वर्षा, वायुदाब)

राजस्थान को 5 जलवायु प्रदेशों में बांटा गया है।

(i) शुष्क जलवायु प्रदेश :- यह जलवायु प्रदेश जैसलमेर, बिकानेर, दक्षिणी गंगागार, पश्चिमी जोधपुर एवं उत्तरी वाडमेर में फैला हुआ है।

→ इस प्रदेश में औसत तापमान 40°C एवं वर्षा 0-20 cm होती है।

→ इस प्रदेश में मुख्य रूप से भकदमिद वनस्पति पायी जाती है।

जैसे - आक, बेर, केब, केकड़ी, खेजड़ी, फोग

→ मुख्य रूप से इस प्रदेश में कॉरेयार झाड़ियाँ पायी जाती हैं।

→ कोपेन के द्वारा इस जलवायु प्रदेश को Bushw.

B - उपोष्ण

w - गर्म (warm)

h - उच्च अक्षांश (high latitude)

w - गर्म

(ii) अर्द्धशुष्क जलवायु प्रदेश :- इस प्रदेश में मुख्य रूप से गंगागार, धुमानगढ़, सीकर, चुरु, सुंसुनु, नागौर, पानी, जालौर, पूर्वी जोधपुर एवं दक्षिणी-पूर्वी वाडमेर आता है।

→ इस प्रदेश में औसत तापमान 36-38°C एवं वर्षा 20-40 cm तक होती है।

→ इस प्रदेश में आर्द्रता कम, कमजोर एवं तापमान अधिक होता है।

→ इस प्रदेश में मुख्य रूप से गुण कटिबंधीय कंटिदार वन पाये जाते हैं।

→ इसे कोपेन के द्वारा Bshw के नाम से प्रदर्शित किया गया है।

3. उपआर्द्र जलवायु प्रदेश :- इसके अंतर्गत अजमेर, जयपुर, दौसा, अजमेर, पूर्वी शेखावाड़ी, राजसमंद, सिरोही, भीलवाड़ा जेठ आदि आते हैं।

→ इस प्रदेश का औसत तापमान 32-36°C एवं वर्षा 40-60cm होती है।

→ इस प्रदेश में पर्वतीय वन पाये जाते हैं।

→ इसे कोपेन के द्वारा Cwg के रूप में प्रदर्शित किया गया है।
(शितोष्ण गर्म मैदान)

4. आर्द्र जलवायु प्रदेश :- इसके अंतर्गत भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, चित्तौड़गढ़, उत्तरी-पूर्वी कोरा, उत्तरी-पूर्वी उदयपुर आदि आते हैं।

→ इस प्रदेश का औसत तापमान 30-34°C तथा वर्षा 60-80cm तक होती है।

→ इस प्रदेश में मुख्य रूप से पतझड़ वन पाये जाते हैं।

→ इसे कोपेन के द्वारा Cwg का नाम दिया गया है।

5. अति आर्द्र जलवायु प्रदेश :- इसके अंतर्गत आन्नावाड, बांस, दक्षिणी-कोरा, प्रतापगढ़, डुंगरपुर, बखिवाडा, दक्षिणी उदयपुर एवं सिरोही का माउंट आबू क्षेत्र आता है।

→ इस प्रदेश में औसत तापमान 24-30°C तथा वर्षा 80-120 cm. रहती है।

→ इस प्रदेश में शुष्क सागवान वन एवं मानसूनी सदाबहार वन पाये जाते हैं।

जैसे, - आम, भुआ, बांस, सागवान, खान आदि

→ कोपेन के द्वारा इसे Aw नाम दिया गया है।

राजस्थान के वृषि जलवायु प्रदेश :-

→ राजस्थान एक विशाल भू-भाग पर स्थित है जिसमें वृषि वर्षा पर आधारित है। भारत को कुल 15 ^{वृषि} जलवायु प्रदेशों में एवं राजस्थान को 10 वृषि जलवायु प्रदेशों में बांटा गया है।

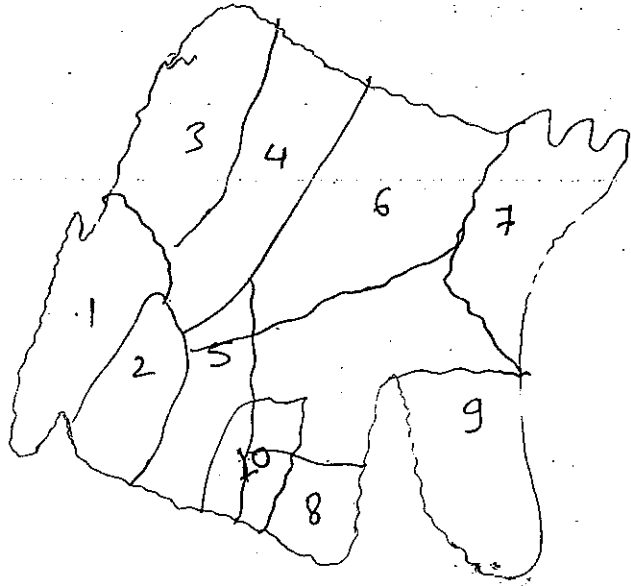
1, 2 → शुष्क मैदानी पश्चिमी प्रदेश - 2

3. सिंचित मैदानी उत्तरी पश्चिमी प्रदेश

4. अंतः स्थलीय जलोत्सर्जन के अंतर्धी मैदानी प्रदेश

5. लूनी का अंतर्धी मैदानी प्रदेश

6. अर्द्धशुष्क पूर्वी मैदानी प्रदेश



7. बाड़ सम्भाव्य मैदानी प्रदेश
8. आर्द्र दक्षिणी मैदानी प्रदेश
9. आर्द्र दक्षिणी-पूर्वी मैदानी प्रदेश
10. अर्द्ध आर्द्र दक्षिणी मैदानी एवं अरावली पहाड़ी प्रदेश

1. शुष्क मैदानी पश्चिमी प्रदेश :- यह कृषि खण्ड

जोधपुर, बाड़मेर में स्थित है। जिसमें वर्षा 200mm से 370mm तक होती है।

→ इस प्रदेश में मुख्य रूप से बाजरा, ग्वार एवं तारामीरा फसलों उत्पादित की जाती है।

→ इस क्षेत्र का कृषि प्रशिक्षण केंद्र रामपुरा, जोधपुर में स्थित है जिसके द्वारा इस खण्ड के लिए बेर, आवना, बेंगल खजूर आदि उद्योगिक फसलों की सम्भावना व्यक्त की गई है।

3. सिंचित मैदानी उत्तर-पश्चिमी प्रदेश :-

इस कृषि जलवायु प्रदेश के अंतर्गत गंगानगर और हनुमानगढ़ जिले आते हैं यहां पर वर्षा 100-350mm तक होती है।

→ यह राजस्थान का सबसे अधिक नहरी सिंचित क्षेत्र होने के कारण अत्यधिक उस उत्पादकता वाला क्षेत्र है इसी कारण यहां पर गेहूं, चना, सरसो, कपास, किरी आदि फसलें उत्पादित की जाती हैं।

→ इस कृषि जलवायु प्रदेश के कृषि प्रशिक्षण केन्द्र भीकरणपुर (गंगानगर) एवं हनुमानगढ़ में स्थापित किये गये हैं।

इस जोन में बेर, किरी, अनार, मानस, मिठी, गुलाब आदि फसलों की सम्भावना वास्तविकी गई है।

शुष्क मैदानी पश्चिमी प्रदेश :-

यह कृषि जलवायु प्रदेश जैसलमेर व बीकानेर में स्थित है इस कृषि जलवायु प्रदेश में वर्षा 100-350mm तक होती है। एवं बजरा, ज्वार, ग्वार आदि भोरे अनाजों का उत्पादन होता है।

→ इसका कृषि प्रशिक्षण केन्द्र लूणकरणसर (बीकानेर) में स्थापित किया गया है एवं इस जोन में बेर, आंवला, खजूर, बैंगन आदि का भी अत्यधिक उत्पादन हो सकता है।

अंतस्थली जलवायु का अंतर्वर्ती मैदानी प्रदेश :-

- यह जलवायु प्रदेश सीकर, थुरु, झुंझुनू व नागौर जिले में स्थित है।
- यहां पर वर्षा 300-500 mm तक होती है एवं मुख्य रूप से बाजरा, तिल, मोंठ फसलों का उत्पादन होता है।
- इसका कृषि प्रशिक्षण केंद्र आबूसर झुंझुनू में स्थापित किया गया है एवं इस जोन में बेर, अनार, मेथी नींबू व अमरुद की फसलों का भी अत्यधिक उत्पादन हो सकता है।

भूनी का अंतर्वर्ती मैदानी प्रदेश :-

- इस कृषि जलवायु प्रदेश में पाली, जानौर, सिरोही एवं जोधपुर जिले आते हैं।
- इसमें वृ वर्षा 300-500 mm तक होती है एवं मुख्य रूप से बाजरा, मक्का, तिल, ईसकगोल, जीरा आदि फसलों का उत्पादन होता है।
- इसका कृषि प्रशिक्षण केंद्र सुमेरपुर पाली में स्थापित किया गया है एवं इस जोन में मे नींबू, मेंढी, ईसकगोल, धार, बैंगन आदि फसलों का भी अत्यधिक उत्पादन हो सकता है।

6. अर्ध शुष्क पूर्वी मैदानी प्रदेश :-

→ इस कृषि जलवायु प्रदेश में जयपुर, दौसा, अजमेर, दोंक आदि जिले आते हैं।

→ इस प्रदेश में वर्षा 500-700 mm तक होती है एवं मुख्य रूप से बाजरा, मूंगफली, मूंग, सरसो, गेहूँ, चना, मटर आदि का उत्पादन होता है।

→ इस प्रदेश में का कृषि प्रशिक्षण केंद्र तबीजी अजमेर में स्थापित किया गया है।

→ इस जोन में अनार, गुलाब, गोभी, बैंगन, मटर आदि फसलों का भी अत्यधिक उत्पादन किया जा सकता है।

7. बाद सम्भाव्य मैदानी प्रदेश :-

→ इस कृषि जलवायु प्रदेश के अंतर्गत अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर, सवाईमाधोपुर जिले आते हैं जहां पर वर्षा 500-700 mm तक होती है एवं यहां पर बाजरा, मूंगफली, सरसो, मिर्ची, जौ, गेहूँ आदि का उत्पादन होता है।

→ इसका कृषि प्रशिक्षण केंद्र मन्दीकपुर भरतपुर में स्थापित किया गया है। एवं इस जोन में पपीता, मटर, लौकी आदि का भी अत्यधिक उत्पादन हो सकता है।

8. अर्ध आर्द्र दक्षिणी मैदानी एवं अरावली पर्वतीय प्रदेश :-

- इस कृषि जलवायु प्रदेश में उदयपुर, सिरौही, राजसमंद चित्तौड़ आदि जिले आते हैं।
- इस प्रदेश में वर्षा 700-900 mm तक होती है
- इस प्रदेश में मुख्य रूप से मक्का, अफीम, उड़द, अरहर उत्पादन होता है।
- इसका कृषि प्रशिक्षण केंद्र चित्तौड़गढ़ में स्थापित किया गया है एवं इस जोन में आम, सीताफल, भांगला, नींबू, अमरुद आदि का भी अत्यधिक उत्पादन किया जा सकता है।

9. आर्द्र दक्षिणी मैदानी प्रदेश :-

- इस कृषि जलवायु प्रदेश में उदयपुर, डुंगरपुर, वासवाडा प्रतापगढ़ जिले आते हैं।
- यहां पर ~~हमें~~ वर्षा 600-1100 mm तक होती है। एवं मुख्य रूप से मक्का, चावल, गेहूँ, कपास, चना आदि का उत्पादन होता है।
- इसका कृषि प्रशिक्षण केंद्र उदयपुर में स्थापित किया गया है इस जोन में पीता, केला, चीन्हा, लहसुन आदि का भी अत्यधिक उत्पादन होता है।

आई दक्षिणी - पूर्वी मैदानी प्रदेश:-

→ इस कृषि जलवायु प्रदेश में कोरा, बूंदी, बारा, खान्नावाड़ जिले आते हैं। जहाँ पर वर्षा 500-1000 mm होती है। एवं मुख्य रूप से चावल, गेहूँ, कपास, धानियाँ का उत्पादन होता है।

→ इसका कृषि प्रशिक्षण केन्द्र, सत्रपुरा, बूंदी में स्थापित किया गया है। एवं इस जोन में आम, संतरा, गुन्नाब धानियाँ आदि का भी अत्यधिक उत्पादन हो सकता है।

मृदा संसाधन

भूमिका :- मृदा मानव जीवन का मूल आधार है अतः सभी सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का विकास मिट्टी से हुआ है।

→ मृदा संसाधन मानव जीवन को प्रभावित करता है जिन स्थानों पर मिट्टी अधिक उत्त उपजाऊ होती है वहाँ मनुष्य जीवन अधिक एवं जहाँ अनुपजाऊ होती है वहाँ मनुष्य का भावास कम पाया जाता है।

इसलिए कहा जा सकता है कि मृदा संसाधन एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है।

* मृदा :- भू-पृष्ठ पर असंगठित पदार्थों की वह ऊपरी परत जो कि मूल चट्टानों या वनस्पति के योग से निर्मित होती है मृदा कहलाती है।

निष्कर्ष :- वर्तमान समय में मृदा अपरदन, मरुस्थलीकरण मृदा प्रदूषण कंकरीर के जंगलों का विनाश (बढ़ता हुआ शहरीकरण) अत्यधिक मानवीय हस्तक्षेप, अवैज्ञानिक कृषि, अवैज्ञानिक खनन कार्य इत्यादि के द्वारा हजारों वर्षों से निर्मित हमारी अमूल्य धरोहर का विनाश हो रहा है।
 अतः वैज्ञानिक कृषि कार्य, वैज्ञानिक पशु पालन, मानवीय हस्तक्षेप पर रोक, वैज्ञानिक खनन कार्य, आवाह शहरीकरण आदि को अपनाकर एवं धारणीय विकास व पर्यावरण मित्र विकास को अपनाने हुए हमारी इस अमूल्य धरोहर का संरक्षण व संवर्द्धन किया जा सकता है।

राजस्थान में मृदा का वर्गीकरण दो प्रकार से किया गया है →

(i) सामान्य वर्गीकरण :-

इसमें मिट्टी को रंग के आधार पर वर्गीकृत किया गया है।

- (i) रेगनी मिट्टी
- (ii) भूरी रेगनी मिट्टी / भूरी-पीली मिट्टी
- (iii) लाल मिट्टी

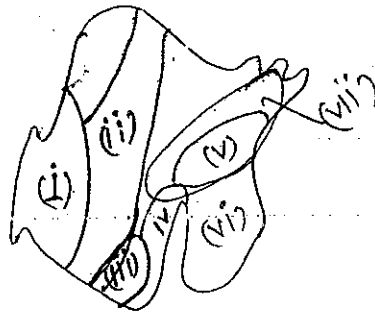
- (iv) लाल काली मिट्टी मिट्टी
- (v) लाल पीली मिट्टी
- (vi) काली मिट्टी / मध्यम काली मिट्टी
- (vii) जलोद मिट्टी / दोमट / कूच्छारी मिट्टी
- (viii) भूरी दोमट मिट्टी
- (ix) पर्वतीय मिट्टी
- (x) लवणीय मिट्टी
- (2) 1931 में अमेरिका के वैज्ञानिकों द्वारा वैज्ञानिक आधार पर 11 भागों में बांटा था। जिसमें से राजस्थान में 5 प्रकार की मिट्टी पायी जाती हैं।

- (i) वर्टीसोल (Vertisol)
- (ii) एरिडोसोल (Aridisol)
- (iii) अल्फीसोल (Alfisol)
- (iv) एंटीसोल (Antisol)
- (v) इन्सेप्टिसोल (Inceptisol)

सामान्य वर्गीकरण के आधार पर :-

(1) रेतीली मिट्टी / बबूई मिट्टी / मरुस्थली मिट्टी :-

→ यह मिट्टी जैसलमेर, बीकानेर, वाड़मेर, जोधपुर व नागौर व चुरू जिले में विस्तृत है।



- इस मिट्टी के कम मोटे होने के कारण इसमें जल धारण करने की क्षमता सबसे कम पायी जाती है।
- इस मिट्टी में नाइट्रोजन व कार्बनिक पदार्थों की कमी परन्तु कैल्शियम के तत्वों की प्रधानता पायी जाती है। इस
- मिट्टी में मुख्य रूप से मोटे अनाजों का उत्पादन जैसे ज्वार, मोटा, बाजरा आदि का उत्पादन होता है।

(ii) भूरी रेतीली मिट्टी / भूरी पीली मिट्टी :- यह मिट्टी मुख्य रूप से सीकर, चुरू, सुंखुनु, नागौर, पानी, जालौर में विस्तृत है।

- इस मिट्टी में नाइट्रोजन एवं कार्बनिक पदार्थों की कमी एवं फॉस्फोर के तत्वों की प्रधानता पायी जाती है।
- इस मिट्टी में मुख्य रूप से ज्वार, बाजरा, मक्का, ईसबगोल, ज्वारा, मेहंदी, सरसो, जौ, गेहूँ आदि का उत्पादन होता है।

(iii) लाल लोमी मिट्टी :- यह मिट्टी मुख्य रूप से उदयपुर, डुंगरपुर, बांसगाड़ा, भीलगाड़ा, चित्तौड़, राजसमंद, सिरौही आदि जिलों में पायी जाती है।

- इस मिट्टी में नाइट्रोजन, कैल्शियम, फॉस्फोरस की तत्वों की कमी एवं लौहा व पोटाश के तत्वों की प्रधानता पायी जाती है।
- इस मिट्टी में लौहा के तत्व अधिक होने के कारण इसका रंग गहरा लाल हो जाता है।
- इस मिट्टी में मुख्य रूप से मक्का की खेती की जाती है।

4. लाल-काली मिश्रित मिट्टी :- यह राजस्थान में मुख्य रूप से काली व लाल मिट्टी के मध्य उदयपुर, डुंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ में स्थित है।

→ इस मिट्टी में नाइट्रोजन, कैल्शियम, फॉस्फोरस एवं फॉस्फोर के तत्वों की कमी पायी जाती है।

→ इस मिट्टी के कृण छोटे-2 होते हैं इसी कारण यह मिट्टी कपास, गन्ना, चावल आदि के उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है।

5. लाल-पीली मिट्टी :- यह मिट्टी सर्वाई माधौपुर, भीलवाड़ा, अजमेर व टोंक जिलों में पायी जाती है।

→ इस मिट्टी में नाइट्रोजन, कैल्शियम के तत्वों की कमी एवं लौहा ऑक्साइड के तत्वों की प्रधानता पायी जाती है।

(vi) कान्ची मिट्टी :- यह मिट्टी मुख्य रूप से कोरा, बुंदी, बारा, आलावाड़ में पायी जाती है।

→ इस मिट्टी में कपास का अधिक उत्पादन होने के कारण इसे कपासी मिट्टी भी कहा जाता है।

→ इस मिट्टी में नाइट्रोजन व कैल्शियम के तत्वों की कमी एवं जैविक पदार्थ व पोटाश के तत्वों की प्रधानता पायी जाती है।

→ इस मिट्टी में कपास, मक्का, चावल, खड़े रसदार फल आदि का अत्यधिक उत्पादन होता है।

(vii) जलोढ़ / दोभट / कच्ची मिट्टी :-

→ यह मिट्टी मुख्य रूप से सवाई माधोपुर, रोहतास, भीमवाड़ा, जयपुर, दौसा / माली नदी बेसिन / चम्बल नदी बेसिन / बनास नदी बेसिन में विस्तृत है।

→ इस मिट्टी में कैल्शियम व फॉस्फोर के तत्वों की कमी एवं नाइट्रोजन व पोटाश की अधिकता पायी जाती है।

→ इसी कारण राजस्थान में सबसे अधिक उपजाऊ मिट्टी जलोढ़ मिट्टी को माना जाता है।

→ इस मिट्टी में मुख्य रूप से सरसो, गेहूँ, चावल, कपास आदि का उत्पादन होता है।

(iii) भूरी दौभट मिट्टी :-

→ राजस्थान में यह मिट्टी मुख्य रूप से ब्यास नदी बेसिन में पायी जाती है।

(ix) पर्वतीय मिट्टी :- यह मिट्टी मुख्य रूप से राजस्थान के भारतकी पर्वतीय श्रेणियों में पायी जाती है।

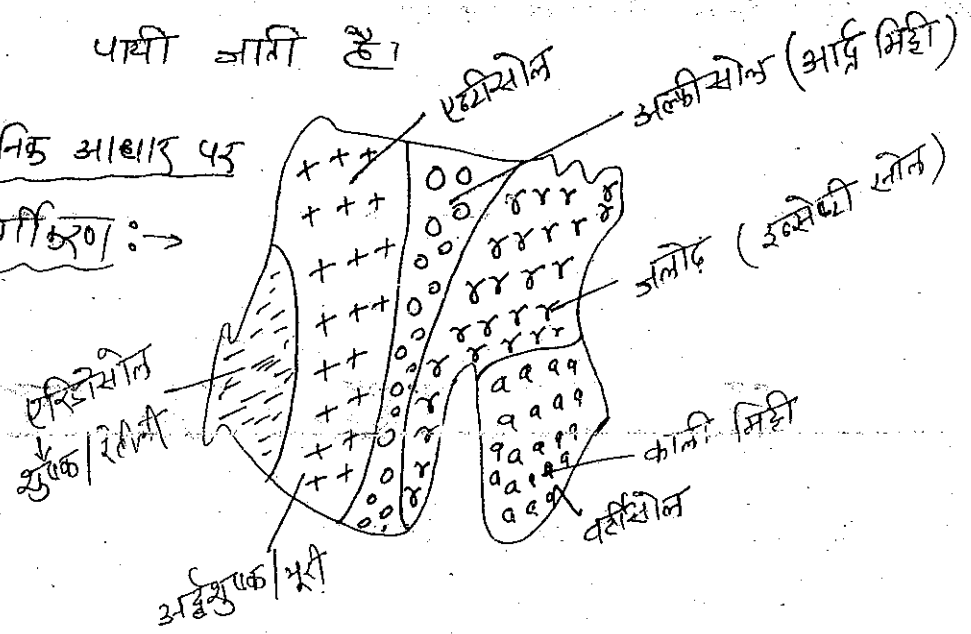
(x) लवणीय मिट्टी :- राजस्थान में यह मिट्टी मुख्य रूप से गंगानगर, बीकानेर, बड़मेर, जाधौर में पायी जाती है। इस मिट्टी में लवणीय व क्षारीय तत्व अधिक होने के कारण यह अनुपजाऊ मिट्टी है।

→ इस मिट्टी में त्रिबसम, हरी खाद, शैक फॉस्फेट आदि के उपयोग से इसे उपजाऊ बनाया जा सकता है।

* भूरी जलोढ़ मिट्टी :- गंगानगर, धनुमानगढ़ में पायी जाती है।

* वैज्ञानिक आधार पर

वर्गीकरण :-



Ques मृदा अपरदन किसे कहते हैं मृदा अपरदन के कारण, प्रकार एवं कुप्रभाव को बगते हुए मृदा अपरदन को रोकने के उपायों का विस्तार से वर्णन करो-

Ans. मृदा अपरदन :- मृदा की 1 cm. से 2 cm. परत को बनने में हजारों वर्ष लग जाते हैं लेकिन यह उपरी परत कुछ ही समय में नष्ट हो जाती है।

विभिन्न मानवीय एवं प्राकृतिक हस्तक्षेप से मृदा की उपरी परत का स्थानांतरण या नष्ट होना मृदा अपरदन कहलाता है

मृदा अपरदन के प्रकार

मृदा अपरदन के पाँच प्रकार होते हैं ⇒

- (i) अवनालिका अपरदन
- (ii) उल्कात भूमि / बीहड़ भूमि
- (iii) जल या चादरी अपरदन
- (iv) परत अपरदन / वायु अपरदन
- (v) धरातलीय अपरदन

* (i) अवनालिका अपरदन :- चम्बल नदी बेसिन का दाल तीव्र एवं उसमें कगेर व कोस चहिन (कांतर कूम में स्थित होने के कारण चम्बल नदी के द्वारा इस क्षेत्र में बानी नुमा जो गहरे-2 गढ़े बनाये जाते हैं उसे अवनालिका अपरदन कहा जाता है।

⇒ राजस्थान में सबसे अधिक अवनमिका अपरदन कोटा जिले में, चम्बल नदी क्षेत्र में या राजस्थान के दक्षिणी-पूर्वी भाग में सबसे अधिक होता है।

(ii) उत्खात भूमि / बीहड़ भूमि

→ राजस्थान में चम्बल नदी बेसिन के अंतर्गत चम्बल नदी के द्वारा निर्मित उबड़-खाबड़ ज़ुआ आकृति को उत्खात / बीहड़ भूमि कहा जाता है।

राजस्थान में इस प्रकार का अपरदन सर्वाधिक सवाईभाधो पुर, करौली एवं धौलपुर में देखने को मिलता है।

* (iii) जल या चादरी अपरदन :- वर्षा के जल या नदी के द्वारा मिट्टी की उपरी परत को बहा देना जल या चादरी अपरदन कहलाता है।

→ राजस्थान में सबसे अधिक चादरी अपरदन सिरोही व राजसमंद जिले में देखने को मिलता है।

* (iv) वायु अपरदन / परत अपरदन :- राजस्थान में तेज हवाओं के द्वारा मिट्टी की उपरी परत को एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित कर देना परत या वायु अपरदन कहलाता है।

→ परत अपरदन राजस्थान में सबसे अधिक पश्चिमी राजस्थान में देखने को मिलता है।

(v) धरातलीय अपरदन :- धरातल पर तेज वायु, जल, नादियों के द्वारा धरातल की ठपरी परत को स्थानांतरित कर देना धरातलीय अपरदन कहलाता है।

क्योंकि राजस्थान के सभी क्षेत्रों में देखने को मिलता है।

भूदा अपरदन के कारण :-

- (i) राजस्थान में वनों की अत्यधिक कटाई के कारण या वनों खंड हो रहे विनाश से भूदा का अपरदन बढ़ रहा है। राजस्थान
- (ii) राजस्थान में अत्यधिक पर्युचारण से भूदा का अपरदन हो रहा है। क्योंकि भेड़ एवं बकसियां घास के मैदानों में घास को अंतिम सीमा तक खा जाते हैं। जिससे उन स्थानों पर धीरे-2 घास के मैदान नष्ट हो जाते हैं।
- (iii) राजस्थान में वर्षा से पहले जो तेज आंध्रियां चली हैं उससे भूदा का अत्यधिक अपरदन होता है।
- (iv) राजस्थान के दक्षिणी एवं दक्षिणी-पूर्वी भागों में आदिवासियों के द्वारा वानरा वृषि से वनों का विनाश हो रहा है जिससे भूदा अपरदन बढ़ रहा है।
- (v) राजस्थान का किसान गरीब होने के कारण वृषि की नवीन तकनीकों का उपयोग नहीं कर पाता जैसे - फसलों को हेर-फेर करने -2 कर बोना, खेतों को मेड़ बंदी करना एवं वृषि के अकैसात्मिक तरीके से भूदा का अपरदन होता है।
- (vi) राजस्थान में कंकरीर के जंगलों का विस्तार (बसा हुआ शहरीकरण) भूदा अपरदन के लिए मजबूती है।

मृदा अपरदन के कुप्रभाव :-

- (i) निरंतर सूखा ।
- (ii) बोई गई फसलों में बीजों का अंकुरण ना होना ।
- (iii) निरंतर जल स्तर का नीचा होना ।
- (iv) नदी एवं नहरों के मार्ग अवरुद्ध होना ।
- (v) भयंकर बाढ़ों का प्रकोप

मृदा अपरदन को रोकने के उपाय :-

- (i) वृक्षा रोपण
- (ii) अत्यधिक वर्षों के विनाश को रोकना / नियंत्रण ।
- (iii) ढलों पर पट्टीदार खेती / कृषि करना ।
- (iv) चारागाहों का विकास करना ।
- (v) खेतों में मैद बंदी करना ।
- (vi) नदी के मार्गों में बांधों का निर्माण करना ।
- (vii) नहरों के दोनों किनारों पर वृक्षा रोपण करना ।
- (viii) वायु की दिशा के विपरीत वृक्षों की पट्टी लगाना ।
- (ix) वैज्ञानिक कृषि को अपनाना ।
- (x) फसल चक्र अपनाना ।

Ques राजस्थान में भूदा की समस्याओं का विस्तार से वर्णन करो-

(i) निरंतर कृषि के उत्पादन में कमी होना :-

राजस्थान का किसान निर्धन है। निर्धन होने के कारण वह आधुनिक तकनीकों का सही तरीके से उपयोग नहीं कर पाता जिससे उत्पादन में कमी होती है। उत्पादन में वृद्धि/कृषि भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए मिट्टी के कटाव को रोकना, उत्तर भूमि को बंजर होने से बचना, रासायनिक खादों का सही तरीके से अयोग करना एवं वैज्ञानिक कृषि को अपनाने की आवश्यकता है।

(ii) खरपतवार की समस्या :- खेतों में मुख्य फसल के साथ अनां जो अनांछनीय पौधे उगते हैं उन्हें स्थानीय भाषा में खरपतवार कहा जाता है।

→ इस समस्या का समाधान करने के लिए किसानों के द्वारा भूमिकों से इसे उखड़ाना एवं रासायनिक खादों के द्वारा खरपतवार को कम किया जा सकता है।

(iii) मरुस्थल का प्रसार :- राजस्थान में मरुस्थल का प्रसार अत्यधिक तेज गति से बढ़ रहा है। जिससे राजस्थान के अलावा पंजाब, हरियाणा और, UP एवं गुजरात की भूमि दिन-प्रतिदिन बंजर होती जा रही है।

Imp → राजस्थान में इस समस्या के समाधान के लिए

जोड़ाया है।

Imp 1952 → केन्द्रीय शुष्क अनुसंधान केन्द्र - काजरी - जोधपुर
 में स्थापित (KAZARI)
 ↓
मूलस्थान से Related

जाफरी - वन्य जीवों के संरक्षण से संबंधित
 (ZAPARI) → Zoological Animal Forest Research Institute

आफरी - वनों को बढ़ाने का काम
 → (AFRI) - Arid Forest Research Institute

(iv) जलाधिक्य की समस्या :- राजस्थान के नहरी एवं नालियों के क्षेत्र में जल का स्तर जब उपरी मिट्टी तक पहुँच कर जो उसे आर्द्रता प्रदान करता है उसके कारण मिट्टी में वायु का प्रवाह रुक जाता है। एवं मिट्टी में ऑक्सीजन की कमी एवं CO₂ की अधिकता हो जाती है। जिससे मिट्टी अनुपजाऊ हो जाती है।

→ इस समस्या के समाधान के लिए नलबुंधों को लगाना, खेतों में जल को रुकने ना देना एवं प्राकृतिक ढाल के अनुसार खेतों के पानी को नहर व नालों में छोड़कर इस समस्या का समाधान किया जा सकता है।

(v) सैम की समस्या :-

Some Important ques. Related to soil

1. पणो :- राजस्थान में वर्षा के जल, तालाब, दलदली क्षेत्रों का जल जब सूख जाता है तो इस अनुपजाऊ मिट्टी को स्थानीय भाषा में पणो कहा जाता है।
2. बांझ :- राजस्थान में जिन स्थानों पर वर्षा की कमी के कारण खेतों को बिना जोते हुए छोड़ दिया जाता है। उन स्थानों की अनुपजाऊ मिट्टी को स्थानीय भाषा में बांझ / अनुपजाऊ / फली भूमि कहा जाता है।
3. नेहर :- राजस्थान के बाजमेर व जानौर में कच्छ के रण का विस्तार होने के कारण वहां की मिट्टी लवणीय है जिसे स्थानीय भाषा में नेहर कहा जाता है।
4. लैटेराइटो :- OR Laterite soil :- राजस्थान में दुपट्ट कटिबंधीय क्षेत्रों के पास-पास अधिक नसपति एवं अधिक वर्षा के कारण निसानन (leaching) की क्रिया से जो मिट्टी निर्मित होती है उसे स्थानीय भाषा में लैटेराइटो कहा जाता है।

→ इस प्रकार की laterite soil राजस्थान में कृषि नहीं की जाती है।

30/4/14

5. पानर पानी :- राजस्थान में वर्षा के जल को इकट्ठा, ताम्बाब एवं शंके में छाया जाता है उसी वर्षा के पानी को स्थानीय भाषा में पानर पानी कहा जाता है।

6. तैलिया पानी :- खिंचाई के लिए उपयोग किए जाने वाले पानी में कार्बोनेट एवं हाइड्रोकार्बन अदि तत्वों की जब अधिकता हो जाती है तो उस पानी को तैलिया पानी कहा जाता है।

7. हार्ड पेन :- मरुस्थलीय प्रदेश में 90 से 150 मी. की गहराई में स्थित कठोर चट्टानों को हार्ड पेन कहा जाता है।

8. रेतीली मगारा :- पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में मरुस्थलीय की मिट्टी को स्थानीय भाषा में रेतीली मगारा के नाम से जाना जाता है।

Note— राज. में मगारा नस्ल की भेद भी पाई जाती है।

- मेवाड़ में उदयपुर से लेकर गोगुन्दा तक का पहाड़ी क्षेत्र मगारा के नाम से जाना जाता है।

9. धामासा :- पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में पायी जाने वाली यह ऐसी वनस्पति है जो मरुस्थल के प्रसार को रोकती है।

10. सूड :- इसका शाब्दिक अर्थ खरपतवार को हाना है। राजस्थान में खेतों में उगने वाले खरपतवार को खेतों में दबाया या उसे उखाड़ कर जलाना स्थानीय भाषा में सूड के नाम से जाना जाता है।

11. राजाड़ परियोजना :- चम्बल नदी बेसिन क्षेत्र में सेम की समस्या के समाधान के लिए 1991 में जो परियोजना चलाई गई उसे राजाड़ परियोजना के नाम से जाना जाता है। (कच्चाई के सहयोग से)

12. काजरी (CAZRI) - Central Arid Zone Research Institute
[केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान], जोधपुर

इसकी स्थापना 1952 में शुष्क क्षेत्र अनुसंधान के नाम से की गई लेकिन 1959 में इसका नाम काजरी (CAZRI) कर दिया गया है।

→ यह संस्थान मुख्य रूप से राजस्थान में मरुस्थल के प्रसार को रोकने के लिए वृक्षों को लगाना एवं वहाँ पर उपस्थित वनस्पति पर शोध करना।

13. सुबबूल/विलायती वबूल :

भू संरक्षण की दृष्टि से यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण वृक्ष है, जो मृदा के कटाव पर बंध लगाता है।

14. निराड़ - गुडाड़ि (निनाज) :

इसका आबिधिक अर्थ है → 'खरपतवार हराना'।

- राज. में भूमि के कटाव को रोकने के लिए प्राथमिक भू परिष्कार की प्रक्रिया निराड़ - गुडाड़ि कहलाती है। इससे भूमि कृषि योग्य बनती है। इससे फसल का उत्पादन अधिक होता है।

15. वाल्श/चिमाता/रजिया/जुमिंग

भरावली पर्वतमाला

(असम)

राजस्थान में वन सम्पदा एवं वन्य जीव अभ्यारण्य

* भूमिका :- वन सम्पदा को "हरा सोना" एवं "मानव का सुरक्षा कवच" कहा जाता है।

वन मानवीय जीवन के लिए प्राचीन काल से आज तक आर्थिक, सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं।

वन सम्पदा, जीव-जन्तु, मनुष्य आदि को आवास प्रदान करता है। इसी कारण कहा जा सकता है कि भौतिक भूगोल में वन-सम्पदा महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है।

* वनस्पति :- प्राकृतिक रूप से आगे वाले पेड़-पौधे जिन्हें मानवीय हस्तक्षेप नहीं पाया जाता उसे प्राकृतिक वनस्पति के नाम से जानी जाती है।

निष्कर्ष :- वर्तमान समय में दवाखाने (जंगलों में बगैरे वाली आण), जनसंख्या वृद्धि, बढ़ता हुआ शहरीकरण, नवीनीकरण एवं मानवीय हस्तक्षेप के द्वारा हमारे ये अमूल्य संसाधन अण्ड होते जा रहे हैं। अतः धारणीय विकास, पर्यावरण मित्र विकास, मानव हस्तक्षेप पर नियंत्रण, बढ़ते हुए शहरीकरण पर नियंत्रण, जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण आदि को अपनाकर प्राकृतिक वनस्पति का संरक्षण एवं संवर्द्धन किया जा सकता है।

* भारत में सर्वप्रथम वननीति 1894 को लागू की गयी एवं स्वतंत्रता के बाद प्रथम वन नीति 1952 को लागू की गयी।

→ इसी 1952 की वन नीति में संशोधन करके 1988 में राष्ट्रीय वन नीति घोषित की गई। जिसके अनुसार 33.33% भू-भाग पर वन बेना अनिवार्य हैं।
OR 33%.

→ 1910 में जोधपुर रियासत के द्वारा वन जीवों के संरक्षण संबंधी कानून बनाये एवं 1953 में राजस्थान सरकार के द्वारा वन अधिनियम को लागू किया गया।

→ 1953 में जब वन अधिनियम को लागू किया गया उस समय राज्य के कुल 13% भाग पर वन थे।

→ राजस्थान सरकार के द्वारा राज्य की प्रथम वन नीति 2010 को लागू की गई।

→ वर्तमान समय में राज्य के कुल 9.57% (32736 वर्ग किमी) क्षेत्र पर वन पाये जाते हैं जो कि देश के कुल वन क्षेत्र का 4.25% है।

→ गो की दृष्टि से देश में राजस्थान का स्थान 9वाँ है।

→ राजस्थान में सबसे अधिक वन उदयपुर (क्षेत्रफल के हिसाब से) जिले में एवं सबसे कम वन मध्य प्रदेश में एवं सबसे कम पंजाब में पाये जाते हैं।

राष्ट्रीय उद्यान सबसे ज्यादा - मध्य प्रदेश - 9

II - अण्डमान निकोबार द्वीप समूह

राजस्थान में वनों का वर्गीकरण दो आधारों पर किया गया है।

(ऊँची → % के आधार पर सबसे ज्यादा वन)

1. प्रशासनिक आधार पर

2. जनवायु के आधार पर

1. प्रशासनिक आधार पर :- वन विभाग के द्वारा प्रशासनिक आधार पर वनों के तीन प्रकार हैं

(i) आरक्षित वन / संरक्षित वन :- यह राजस्थान में कुल वन क्षेत्र के 38.02% पर स्थित हैं

→ ये वन सर्वाधिक उदयपुर जिले में पाये जाते हैं। इन वनों पर पूरी तरह से सरकार का अधिकार होता है अतः इन वनों में लकड़ी काटना एवं पशु चारण पूरी तरह से वर्जित है।

→ जनवायु की दृष्टि से ये वन राजस्थान में अति महत्वपूर्ण हैं।

(ii) रक्षित वन / सुरक्षित वन :- यह राज्य के कुल वन क्षेत्र के 53.48% भू-भाग पर स्थित हैं। जो कि सर्वाधिक बारां जिले में पाये जाते हैं।

→ इन वनों पर भी सरकार का नियंत्रण होता है लेकिन सरकार की आज्ञा के आधार पर सीमित क्षेत्र में लकड़ी काटना एवं पशु चराने का काम किया जाता है।

→ ये वन भी राजस्थान में जनवायु की दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं।

(iii) अवर्गीकृत वन :-

→ ये वन राज्य के कुल वन क्षेत्र के 8.50% भू-भाग पर स्थित हैं। ये वन सर्वाधिक बीकानेर जिले में पाये जाते हैं। इन वनों में लकड़ी काटना व पशु चराने पर कोई

प्रतिबंध नहीं हैं। लेकिन इन वनों में लकड़ी काटने के लिए सरकार की अनुमति जरूरी है।

2- जलवायु के आधार पर वनों का वर्गीकरण :- जलवायु के आधार पर वनों को पांच भागों में बांटा गया है।

- (i) शुष्क सागवान वन
- (ii) उष्ण-करिबन्धीय शुष्क एवं धोंक वन
- (iii) उष्ण-करिबन्धीय करियदार वन
- (iv) उष्ण करिबन्धीय मिश्रित पतझड़ वन
- (v) अर्द्धआर्द्र सदाबहार वन

(i) शुष्क सागवान वन :- ये वन राजस्थान में मुख्य रूप से उदयपुर, डुंगरपुर, बांसवाड़ा, अलावा, बांरा एवं चित्तौड़ में पाये जाते हैं।
प्रतापगढ़

→ ये वन कुल वन क्षेत्र के 6.87% (नर.) भाग पर हैं

→ इन वनों के क्षेत्रों में वर्षा 70-110 cm. तक होती है। इन वनों की ऊंचाई 10-21 meter तक होती है। इन वनों में मुख्य रूप से आम, सागवान, महुआ, बंस, बरगद आदि पाये जाते हैं।

→ प्रतापगढ़ के सीमा भाग अभ्यारण्य में ये वन सर्वाधिक पाये जाते हैं।

(ii) उष्ण करिबन्धीय शुष्क एवं धोंक वन :- ये वन मुख्य रूप से अर्द्धशुष्क जलवायु प्रदेश के क्षेत्रों में पाये जाते हैं।

→ ये वन राज्य के कुल वन क्षेत्र का 58.19% हैं। इन वनों में मुख्य रूप से काँटेदार वृक्ष पाये जाते हैं। खैर, कैर, बैर, रोहिडा, आक आदि पाये जाते हैं।

→ इन वनों के क्षेत्रों में वर्षा 25-50 cm. तक होती है।

(iii) उष्ण कटिबंधीय काँटेदार वन :- यह मुख्य रूप से शुष्क जलवायु प्रदेशों में पाये जाते हैं जो कि कुल वन क्षेत्र का 6.53% हैं। इन वनों में मुख्य रूप से मरुदण्डि वनस्पति पायी जाती है।

→ इस क्षेत्र में वर्षा 0-20/25 cm. तक होती है।

(iv) उष्ण कटिबंधीय मिश्रित पत्रपाद वन :- ये वन राजस्थान के पूर्वी मैदानी प्रदेशों में अधिक पाये जाते हैं जो कि राज्य के कुल वन क्षेत्र के 28.42% हैं। इन वनों में

→ मुख्य रूप से शिशम, साल, सागवान, नीम, पीपल, शहदू, खैर आदि आते हैं। वर्षा - 50-80 cm.

(v) अर्द्ध आर्द्र सदाबहार वन :- ये वन राजस्थान में सिरोही के भांडा भाग क्षेत्रों में अधिक ऊँचाई पर पाये जाते हैं जहाँ पर वर्षा 150 cm. तक होती है। ये वन राज्य के कुल वन क्षेत्र का 0.38% हैं। ये वन सदा हरे-भरे रहने के कारण सदाबहार कहलाते हैं। जिसमें मुख्य रूप से आम, जाफन, बरगद के वृक्ष पाये जाते हैं।

Ques
Ans

राजस्थान में कितने राष्ट्रीय उद्यान हैं उनका विस्तार से वर्णन कीजिए-

* उ- राष्ट्रीय उद्यान

(i) रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान :- सवाई माधोपुर → 392 वर्ग किमी

→ यह राजस्थान का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान है जिसे 1 नवम्बर 1980 को राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा दिया गया।

→ विश्व वन्य जीव कोष के द्वारा चलाये गये राजगुरु प्रोजेक्ट (1973) में इसे 1973-1974 में शामिल किया गया। ह जो कि राजस्थान की प्रथम बाघ परियोजना मानी जाती है यह देश की सबसे छोटी बाघ परियोजना है जिसे भारतीय बाघों का घर कहा जाता है।

→ इस राष्ट्रीय उद्यान में त्रिनेत्र गणेश जी का मंदिर, जोगी मठ एवं न्याय की छतरी (32 खंभों की छतरी) स्थित है।

→ इस अभ्यारण्य में मुख्य रूप से बाघ, शेर, बघेर, लकड़बग्गा, दिरा, नील गाय आदि वन्य जीव पाये जाते हैं।

(ii) कैवलीदेव घना पत्ती विहार :- भरतपुर, NH-11, 29km²

→ इसे अभ्यारण्य का दर्जा 1956 में एवं राष्ट्रीय उद्यान 26 Aug. 1981 को घोषित किया गया जो कि राजस्थान का दूसरा राष्ट्रीय उद्यान है।

→ UNESCO के द्वारा 1985 A.D. में इसे विश्व प्राकृतिक धरोहर की सूची में शामिल किया गया।

NOTE :- विश्व प्राकृतिक धरोहर की सूची में शामिल स्थान

- (i) मानस (Assam)
- (ii) काजीरंगा (Assam)
- (iii) सुन्दर बन (W.B.)
- (iv) गन्दादेवी (उत्तराखण्ड)
- (v) केवलादेव (Raj. - Bhurtpur)
- (vi) भित्तकनिका (Odisha)

* → इस राष्ट्रीय उद्यान को पक्षियों का स्वर्ग एवं एशिया की सबसे बड़ी पक्षी प्रजनन स्थली के नाम से जाना जाता है।

→ यहां मुख्य आकर्षण का केंद्र साइबेरियन सांस एवं पामथन पोश्च पर मिलने वाला अजगर है।

→ यह राष्ट्रीय उद्यान Dr. Saleem ali की कार्यस्थली रहा है। इसमें राजस्थान की प्रथम वन्यजीव प्रयोगशाला एवं इसरा सर्प उद्यान विकसित किया जा रहा है।

1st Snake park - कोरा

3. मुकुन्दरा हिल्स या दरी अभ्यारण्य :-

→ कोरा - आनावाड

↓ proper place - कोरा

→ 275 वर्ग किमी

अजगर इस अभ्यारण्य में कोरा के महाराव मुकुन्द सिंह के द्वारा अचली भीनी महलो का निर्माण करवाया गया है जिसे राजस्थान का इसरा राजमहल कहा जाता है।

→ इस अभ्यारण्य में सर्वाधिक हिरामन तोते / गागरौली तोते /

छिन्दुओं का आकारा लोचन पाये जाते हैं।

→ इसे राजस्थान का तीसरा राष्ट्रीय उद्यान 9 जून, 2012 को एवं तीसरी बाघ परियोजना 10 April 2013 को घोषित किया गया।

→ इस अभ्यारण्य में सर्वाधिक देववन पाये जाते हैं।

राजस्थान के अभ्यारण्य

1. सरिस्का :- अलवर, 492 वर्ग किमी.

→ इसे 1955 में अभ्यारण्य का दर्जा एवं 1978 में बाघ परियोजना में शामिल किया गया। यह राजस्थान की सबसे बड़ी एवं इसरी बाघ परियोजना है।

→ इस अभ्यारण्य में Hotel Jangal Sw का संचालन RT&C (राज. पर्यटन विकास निगम) के द्वारा किया जाता है।

→ इस अभ्यारण्य में 4 धार्मिक स्थान हैं

* तालवृस → माण्डव्य ऋषि की तपो स्थली

* भर्तृहरि का मंदिर → कनफेड नाथ की शरण स्थली

* पाण्डुपोल → सोते डुर / शयन सुग्रा में हनुमानजी

* कीर्तिकुंड → नृत्यरत गणेश की प्रतिमा

→ राजस्थान में सबसे अधिक हरे कबूतर सरिस्का अभ्यारण्य में पाये जाते हैं।

→ इस अभ्यारण्य में सबसे अधिक मोर पाये जाते हैं।

* राष्ट्रीय पक्षी - मोर - 1963 A.S. में घोषित

2. राष्ट्रीय पक्षी उद्यान :- जैसलमेर - बाड़मेर
 $1900 \text{ km}^2 + 1262 \text{ km}^2 \rightarrow 3162 \text{ km}^2$

→ यह राजस्थान का सबसे बड़ा उच्च अभ्यारण्य है जिसे

8 May 1981 को अभ्यारण्य का दर्जा दिया गया।

→ इस अभ्यारण्य में मुख्य आकर्षण का केंद्र पवित्रा सर्प एवं गोडावाण पक्षी हैं।

→ इस अभ्यारण्य में आकल बुड फॉसिल्स पार्क एवं भागी सिरीज स्थित हैं।

3. सीता माता अभ्यारण्य :- प्रतापगढ़, 326 km²

→ चित्तल की मातृभूमि

→ सर्वाधिक सागवान के वृक्ष

→ यहां एंटीलोप प्रजाति का चौसिंगा पाया जाता है।

→ राजस्थान में सबसे अधिक औषधि

→ विश्व प्रसिद्ध उडन मिलहरियां जिन्हें स्थानीय भाषा में

मशोवा कहा जाता है।

* → कर्म मोचिनी नदी का उद्गम स्थल

→ ठंडे व गर्म जल के दो स्रोत → लव-कुश

→ इस अभ्यारण्य से जाखम नदी गुजरती है।

4. कुम्भलगढ़ अभ्यारण्य :- उदयपुर - राजसमंद - पानी

→ यह अभ्यारण्य भेड़िए के प्रजनन के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

→ इस अभ्यारण्य में पानी के प्रसिद्ध रणकपुर जैन मंदिर (1444 खंभो का) स्थित हैं। जो मवाई नदी के किनारे स्थित है जिसका निर्माण देपाऊ ने कराया

5. तालछापर अभ्यारण्य : चुरु

→ यह अभ्यारण्य काले हिरणों के लिए प्रसिद्ध है। इस अभ्यारण्य में मोबिया साइप्रस रोटबडस नामक नरम धास पायी जाती है।

6. सज्जाद अभ्यारण्य :- 5.2 km² → सबसे छोटा अभ्यारण्य

→ इस अभ्यारण्य में राजस्थान का दूसरा जैविक पार्क विकसित किया गया है।

1st Biological park - नाहरगढ़ (जयपुर)
अभ्यारण्य

राज्य का प्रथम भालू बचाव केंद्र स्थापित किया गया है।

- | अभयारण्य | स्थान |
|---|---------------------------|
| 7. बस्सी अभयारण्य | — चित्तौड़गढ़ |
| 8. भैंसरोड़गढ़ " " | — चित्तौड़गढ़ |
| 9. रावली रॉटरगढ़ " " | — अजमेर, पानी, राजसमंद |
| ↓
यह राजस्थान के <u>तीन</u> <u>संभागों</u> में स्थित है। | |
| 10. चम्बल घाटियाँ " " | — कोटा (राजस्थान, UP, MP) |
| ↓
देश का एकमात्र नदी पर स्थित है।
अभयारण्य एवं <u>अंतर्राज्यीय अभयारण्य</u> है। | |
| 11. गजमेर अभयारण्य | — Bikaner |
| यह <u>रेत के तीर</u> के लिए प्रसिद्ध है।
↓
It is also called <u>वरक पक्षी</u> | |
| 12. जसवंत रामगढ़ अभयारण्य | — Jaipur |
| 13. कुलवारी की नाल अभयारण्य | — उदयपुर |
| 14. रामसागर वन विहार अभयारण्य | — धौलपुर |
| 15. केसरबाग अभयारण्य | — धौलपुर |

राजस्थान के प्रमुख मृग वन :- 7

1. दुर्ग मृग वन - 1969 A.D. - चित्तौड़गढ़
2. सज्जनगढ़ मृग वन - 1984 A.D. - Udaipur
3. मचकुंड गुफकर मृग वन - 1985 A.D. - Ajmer
4. माचिया सफरी पार्क मृग वन - 1985 A.D. - Jodhpur
5. अशोक विहार मृग वन - 1986 A.D. - Jaipur
6. संजय उद्यान मृग वन - 1986 A.D. - Jaipur
7. अमृतादेवी मृग वन - 1994 A.D. - Jodhpur

TRICK 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. जु से मुमा आकर संजय को आम दिया

राजस्थान के प्रमुख जलु आलय - 5

1. जयपुर जलु आलय :- यह राजस्थान का सबसे बड़ा एवं प्रथम जलु आलय है। जिसकी स्थापना 1876 में जयपुर के महाराज रामसिंह द्वितीय के द्वारा रामनिवास बाग में की गई है।
→ यह जलु आलय भगरमच्छी के हनुमि प्रजनन के लिए प्रसिद्ध है।
2. उदयपुर जलु आलय :- इसकी स्थापना मेवाड़ के महाराज स्वरूप कृसिंह के द्वारा 1878 में उदयपुर के गुलाब बाग में की गई।

3. बीकानेर जलु आलय :- 1922

4. जोधपुर जलु आलय :- 1921

4. जोधपुर जन्तुआलय - 1934

→ यह गोडाका पक्षी के कृत्रिम प्रजनन के लिए प्रसिद्ध है।

5. कोरा जन्तुआलय - 1954.4.8.

(33) - राजस्थान के प्रमुख शिकार निषिद्ध क्षेत्र / अखिर निषिद्ध क्षेत्र

1. राजस्थान का सबसे बड़ा शिकार निषिद्ध क्षेत्र → फौरसर

संवत्सर - चुरु

2. सबसे छोटा - सैंथल सागर - जयपुर

NOTE :- राजस्थान में सबसे अधिक शिकार निषिद्ध क्षेत्र

बकिनेर में हैं। (7)

जोधपुर में - 5

अजमेर - 3

राजस्थान के वनमंडल - 13

1. जोधपुर → (3 जिले)

2. जयपुर वनमंडल - जयपुर, दोसा, शिकर, सुंमुनु

3. भरतपुर वनमंडल - अलवर - भरतपुर, धौलपुर, करौली

4. अजमेर वनमंडल -

5. रोक वनमंडल - भीलवाड़ा - रोक

6. कोरा "

7. बूंदी "

8. बांरा "

9. झांझावाड़ वनमंडल
10. चित्तौड़ वनमंडल
11. बांसवाड़ा वनमंडल
12. उदयपुर वनमंडल - उदयपुर-राजसमंद
13. सिरौही वनमंडल - सिरौही

राजस्थान की प्रमुख वनस्पतियों के प्रकार

सिंजर

1. खैजड़ी :- इसे राजस्थानी भाषा में "सीमलो" तथा इसे धार्मिक ग्रंथों में "शमी", राजस्थान का कल्प वृक्ष, भरुखन का सागवान, सिंघ्र कीकर, राजस्थान का राज्य वृक्ष [डि.एच. 1983 A.B.] आदि उपनामों से जाना जाता है।

Scientific Name - *Prosopis cineraria* (प्रोसोपिस सिनेरेरिया)

- सिंधी भाषा में इसे "धोकड़ा" कहते हैं।
- राजस्थान में कराहरे के पर्व पर इस वृक्ष की पूजा की जाती है।
- इस वृक्ष से संबंधित "रुख भायना" एवं "खैजड़ा ऑपरेशन (1951 A.B.) संबंधित है।

2. पलाश / धौंक :- इसे स्थानीय भाषा में "खारखरा" कहा जाता है।

- इस वृक्ष पर फाल्गुन के माह में लाल व पीले रंग के फूल खिलते हैं इसी कारण इसे जंगल की आग / Flame of the forest कहा जाता है।

- इस वृक्ष की लकड़ी अधिक मजबूत होती है जिससे फर्नीचर वृषि के भोजार्, एवं ६ इंचम के लिए लकड़ी प्राप्त होती है।
- यह वृक्ष मुख्य रूप से चित्तौड़, उदयपुर, डुंगरपुर, बांसवाडा-
बारा, आनावाडा, कोटा आदि स्थानों पर पाया जाता है।

3. सागवान :- सागवान का वृक्ष राजस्थान में बांसवाडा चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, आनावाडा आदि स्थानों पर पाया जाता है जो कि राज्य के कुल वन क्षेत्र का 7% है।

- इस वृक्ष की लकड़ी अत्यधिक मजबूत होती है जिससे अनेक उपयोगी वस्तुएं बनायी जाती हैं।

खेजडली गांव :- जोधपुर में ग्रहणों के निर्माण के लिए चूना पकाने के लिए ईंधन की आवश्यकता पड़ने पर जोधपुर के राजा अभयसिंह राठौर के द्वारा वनों से लकड़ी काटने का आदेश दिया गया तब हकीम दास गिरधर भण्डारी के द्वारा जानियावाडा नामक स्थान से वृक्ष काटना प्रारम्भ किया गया। वृक्षों के कटने की आवाज सुनकर अमृता देवी (इमरती देवी) ^{आठ} वृक्ष से लिपट जाती हैं।

१८ Aug 1730 A.D. को वृक्षों के रक्षार्थ 363 लोगों के द्वारा अपना बलिदान किया गया। उसी की याद में प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल दशमी को एक विशाल मेला लगता है जो कि विश्व का सबसे बड़ा वृक्ष मेला है।

NOTE :- वृक्षों को बचाने के लिए पहला बक़िदास 1604 में जीधपुर के रामासड़ी गांव के कर्मा एवं गोरा के द्वारा किया गया।

वन नीति - 2010 :- राजस्थान में वनों के संरक्षण एवं सर्वहन के लिए 17 Feb. 2010 को राजस्थान की प्रथम वन नीति को लागू किया गया।

बांस :- आदिवासियों के "हरा सोना" के नाम से प्रसिद्ध यह वृक्ष राजस्थान में बांसवाड़ा, डुंगरपुर, सिरोही, उदयपुर आदि जिलों में पाया जाता है।

इसका उपयोग मुख्यतः चारपाई बनाने, झीपरी बनाने में आदि के रूप में किया जाता है।

महुआ :- यह आदिवासियों का कल्प वृक्ष कहलाता है।

इसका फल खाने एवं तेल बनाने के काम आता है एवं आदिवासियों के द्वारा इसे "मावड़ी" नामक शराब बनायी जाती है। यह वृक्ष मुख्यतः बांसवाड़ा, सिरोही, आन्नावाड़, बांसवाड़ा आदि जिलों में पाया जाता है।

खस बांस :- इसका उत्पादन सर्दारि माधोपुर, अंक, भरतपुर में होता है एवं इस बांस से सुगाधित तेल, जत्र एवं शर्वित बनायी जाती है।

बुर बांस :- यह मुख्य रूप से भरतपुर जिले में पायी जाती है।

सेवण धास :- यह धास मुख्य रूप से जैसलमेर जिले में लाठी सिरीज पर पायी जाती है।

→ इस धास पर गोजवण वही अण्डे देता है इसी कारण इसे गोजवण की शरण स्थली कहा जाता है।

→ जैसलमेर में इस धास का सर्वाधिक उपयोग भेड़ों के लिए किया जाता है।

Scientific Name - लसियुकस सिडीकुस

बूर :- रेगिस्तान में पायी जाने वाली सुगंधित धास जो मुख्य रूप से बीकानेर के कोलायत, देगनोक, जोधा आदि स्थानों पर पायी जाती है।

पचकूड़ा :- राजस्थान में पांच प्रकार के फल एवं बीजों से पचकूड़ा नामक सत्री तैयार की जाती है। यह मुख्यतः शीतलाण्टमी को बनायी जाती है। इसमें मुख्य रूप से सांगरी, केर, काचरी, कूमर के बीज, गूदा के फल होते हैं।

केसर-घास :- दक्षिणी राजस्थान में जब ग्रामीण जन किसी वन क्षेत्र की खुरसा ऐत, संकल्प लेते हैं तो वही किसी मंदिर में जाकर केसर एकत्रित करते हैं। एवं निर्धारित दिन पर दोन वजाते हुए वन क्षेत्र में जाकर हरे पेड़ों पर केसर छिड़कते हैं। एवं उनकी रक्षा के लिए एक व्यक्ति को नियुक्त किया जाता है।

खैर वृक्ष काटे गये व्यक्ति को सजा का प्रावधान होता है

* होहीबा-जौजोबा :- पीले सोने के माप से प्रसिद्ध
इसका उत्पादन अमेरिका के मरुस्थलीय प्रदेश में किया
जाता है। राजस्थान में इसे इजराइल की सहायता से
गंगानगर, जौधपुर, गुरु व जयपुर में उत्पादित किया जा
रहा है।

इसके बीजों में 40-45% तेल की मात्रा होती है।

बीड़ :- शेखावाटी क्षेत्र में चारागाह एवं घास के मैदानों
की स्थानीय भाषा में बीड़ कहा जाता है।

तेंदू / टिमरु :- तेंदू के पत्ते से बीड़ी बनायी जाती है
इसका उत्पादन उदयपुर, चित्तौड़, झानवाड़, बांसवाड़ा एवं बांरा
में होता है। लेकिन राजस्थान में बीड़ी के प्रमुख केंद्र
अजमेर, डिशागढ़, ब्यावर, पाली, भीलवाड़ा, कोरा एवं, रेंक
व नसीरवाड़ में स्थित हैं।

→ तेंदू पत्ते का राष्ट्रीयकरण 1974 में किया गया है।

कत्था :- खैर वृक्ष के तने के आंतरिक भाग को
उबालकर हांडी प्रणाली से कत्था बनाया जाता है।

राजस्थान में कत्थे का वार्षिक उत्पादन 400-500 टन तक
होता है। इसके राजस्थान में प्रमुख केंद्र उदयपुर, चित्तौड़
झानवाड़, बूंदी, कोरा, भरतपुर, जयपुर में हैं।

टसर :- राज्य में टसर या कृत्रिम रेशे का विकास कोय
उदयपुर, बांसवाड़ा में किया गया। जिसमें अर्जुन के वृक्ष
लगाकर रासायनिक विधि से कृत्रिम रेशम बनाया जाता है।

अम्बरतरी :- यह उपोष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन
क्षेत्र में आबू पर्वत क्षेत्र में पाया जाता है।

→ इसका वैज्ञानिक नाम दिक्लिन परेरा आबू एरिंस है।

→ यह विश्व में केवल सिरोही के मांडर आबू क्षेत्र में
पायी जाती है।

चौहरन क्षेत्र :- बाड़मेर के चौहरन क्षेत्र में गोंद का
सर्वाधिक उत्पादन होता है इसके अलावा यहाँ पर सुईयों
का भेला प्रसिद्ध है। इसे भारत का सूडान कहा जाता है।

धोक / धोकड़ा :- राजस्थान में सबसे अधिक लगभग
60% धोक का वृक्ष पाया जाता है।

यह शुष्क गर्म प्रदेश का वृक्ष है। इसका उपयोग मुख्य रूप
से कोयला बनाने में किया जाता है।

रोहिडा :- इसे भरतखल का सागवान, ~~मरवाड़ी~~

भारवाड़ टीक, एवं इसका वैज्ञानिक नाम टिकोमेला एण्डुलेरा
है। रोहिडा इमारती लकड़ी के लिए प्रसिद्ध है।

इस पर खिलने वाले फूल केसरिया एवं पीले रंग के

रेगिस्तान में सुंदरा को बगोते हैं।

वांगड का कल्प हुआ :- वांगड में बांसवाड़ा शहर से रतलाम मार्ग पर वाई तलाब क्षेत्र पर एक प्राचीन कुंज में राजा व रानी कल्प हुआ है।

→ रानी पर बैंगन के भाकार के पुष्प एवं राजा पर पुष्प नहीं खिलते।

देववन :- प्राचीन समय में कन प्रबंधन के लिए चलाई गई पद्धति को देववन के नाम से जाना जाता है।

* → कोटा के समीप टांड देवी व क्षेत्र में स्थित देववन क्षेत्र राज्य में सर्वाधिक जैव-विविधता वाला क्षेत्र है।

* → रामगढ़ विषधारी व खण्ड का धोंक वृक्ष व क्षेत्र प्रसिद्ध देववन है।

* → छीपाबडोड़ ^{द्वारा} के समीप देव नारायण में स्थित व क्षेत्र देववन के लिए प्रसिद्ध है।

* → सोरसन ^{द्वारा} में ब्राह्मणी माता का देववन प्रसिद्ध है।

→ उदयपुर व मण्डल द्वारा 1992 में देव वन संरक्षण अभियान चलाया गया।

राजस्थान में वनो/वन संवर्धन से संबंधित पुरस्कार

1. अमृता देवी स्मृति पुरस्कार :- यह पर्यावरण से संबंधित राज्य का सर्वोच्च पुरस्कार है।

→ इसकी शुरुआत 1994 में किया गया। यह पुरस्कार पांच बारों प्रथम व्यक्ति श्री गंगा राम किशोई है।

→ यह पुरस्कार संस्थागत श्रेणी में एवं व्यक्तिगत श्रेणी में प्रदान किया जाता है।

संस्थागत श्रेणी - 50,000/-

व्यक्तिगत - 25,000/-

→ 2013 का संस्थागत श्रेणी में दिया गया पुरस्कार दुडकी

ग्राम पंचायत जिना दौसा को दिया गया।

→ 2014 का व्यक्तिगत 3 स्वर्गीय श्री शैलम सिंह को दिया गया।

2. वानिकी पंडित पुरस्कार :- राजस्थान का यह दूसरा सर्वोच्च पुरस्कार है।

3. इंदिरा प्रिचरिणी वृक्ष मित्र पुरस्कार :- यह पुरस्कार वृक्षारोपण एवं परती भूमि के विकास हेतु दिया जाता है। यह पुरस्कार उदयपुर जिले की शानु खेड़ा वन समिति द्वारा दिया जाता है।

अब इस पुरस्कार का नाम बदलकर "पत्ताधाय वृक्ष मित्र पुरस्कार" कर दिया गया है।

NOTE :- इन पुरस्कारों के अलावा राजस्थान में

- * वनपाल पुरस्कार
- * वन रक्षक पुरस्कार
- * कैलाश सांखला वन्य जीव संरक्षण पुरस्कार आदि दिये जाते हैं।

राजस्थान में वानिकी विकास से संबंधित योजनाएं

1. अरावली वृक्षारोपण योजना :- यह कार्यक्रम 1992 को राजस्थान के 10 जिलों में प्रारंभ किया गया।

जयपुर, अजमेर, सीकर, अजमेर, नागौर, पाली, बांसवाड़ा, सिरोही, उदयपुर, चित्तौड़

→ अरावली क्षेत्र के नष्ट हुए पारिस्थितिकी तंत्र को मूल

अवस्था में लाने के लिए जापान की एक संस्था OECD

(ओवरसीज इकॉनॉमिक कॉर्पोरेशन फंड) के सहयोग से

इस प्रियोजना को प्रारंभ किया गया।

वर्तमान समय में OECF का नाम बदलकर JBIC
(Japan Bank^{for} International Co-operation) रखा गया है।

2. पंचवटी अभियान :- यह अभियान 1 April 2007 को प्रारम्भ किया गया। इस अभियान को प्रारम्भ करने का मुख्य उद्देश्य आधुनिकीकरण के सभी संस्थाओं के द्वारा कम से कम पांच पौधे लगाना अनिवार्य था।

3. वानिकी विकास परियोजना :- 1995 A.D.

→ जापान की प्रमुख संस्था OECF के सहयोग से 15 गैर-मरुस्थलीय जिलों में यह परियोजना प्रारम्भ की गई। जिसमें जन सहभागिता से बुना रोपा एवं चरागाहों का विकास करके पारिस्थितिकी की पुनः स्थापना की गई।

4. राज्य वानिकी कार्य योजना :- 1996-2016 A.D. तक राज्य वन विभाग ने राज्य के संकर ग्रास वनों की स्थिति और निपटारे के लिए एक 20 वर्षीय कार्य योजना तैयार की गई।

* NOTE :- राजस्थान वन-विभाग की स्थापना - 1950 A.D.

5. एकीकृत बंजर भूमि विकास परियोजना :- / पटल योजना

→ 1991 A.D.

→ इंगरपुर जिले में SISA (Swedish सिडमूस इंटरनेशनल डबलप
एजेंसी) के सहयोग से यह योजना प्रारम्भ की गई।

जिसमें वन-विकास, सिंचाई, पशुपालन एवं वन संरक्षण को बढ़ावा दिया जा रहा है।

NOTE - DDA के सहयोग से इसी भूमि विकास परियोजना दुर्गापुरा जयपुर में चलाई जा रही है।

6. सामाजिक वानिकी योजना :- 1985-86 A.D.

→ वृक्षारोपण का कार्य * जन सहभागिता, पंचायतों तथा स्थानीय लोगों के सहयोग से करने के लिए विश्व बैंक की सहायता से यह योजना शुरू की गई। एव राज्य में सर्वाधिक वानिकी का विकास इसी योजना से हुआ है।

→ यह 3 की पंचवर्षीय योजना में चलाई गई है।
[1985-1990 A.D.]

खनिज - संसाधन

* ऐसे खनिज जिन पर राजस्थान का स्वधिकार है

1. पत्था
2. जास्पर
3. तामड़ा (Jarnet) / रक्त मणि
4. बेलेस्टेनाइट

* वे खनिज जिनके उत्पादन में राजस्थान प्रथम स्थान पर है

1. जस्ता (97%)
2. फ्लोराइट (96%)
3. एस्बेस्टॉस (96%)
4. रॉक फॉस्फेट (95%)
5. जिप्सम (94%)
6. चूना-पत्थर (93%)
7. खड़िया मिट्टी / स्लेट (92%)
8. धीया पत्थर / ~~loop~~ ^{loop} stone (90%)
9. चांदी (80%)
10. मकराना (मार्बल) - 75%
11. शीसा - 75%
12. फेल्स्पार - 75%
13. शंगरुम - 75%
14. कैल्साइट - 70%
15. फायर क्ले - 65%
16. इमारती पत्थर - 60%
17. बेलेनाइट - 60%
18. कैडमियम - 60%

* वे खनिज जिनकी राजस्थान में कमी है।

लोहा, कोयला, मैंगनीज, खनिज-तेल, ग्रेफाइट

भूमिका :- वर्तमान समय में खनिज अर्थ व्यवस्था का आधार स्तम्भ एवं रीढ़ है। इनके बिना वर्तमान विज्ञान एवं प्रगति के क्षेत्र में विकास की संभावना नहीं की जा सकती। इसी कारण भारत जैसे विकासशील देशों में खनिज सम्पदा का महत्वपूर्ण योगदान है।

खनिज :- भूमि को खोदकर निकाले गये प्राकृतिक, रासायनिक तत्व जो कि अजैविक क्रियाओं के द्वारा बनते हैं खनिज कहलाते हैं।

जिन स्थानों से खोदकर खनिज निकाले जाते हैं उन स्थानों को खान कहा जाता है।

राजस्थान में खनिज से संबंधित महत्वपूर्ण संस्थाएँ

1. राजस्थान राज्य खनिज विकास निगम :- इसकी स्थापना कम्पनी अधिनियम 1956 के अंतर्गत 27 Sept. 1959 को की गई। बाद में 20 Feb. 2003 को इसका राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड में विलय कर दिया गया।

2. राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड :- इसकी स्थापना

1948 में बीकानेर जिल्हाम लिमिटेड के नाम से की गई।

लेकिन 1974 के बाद में इसका नाम राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड कर दिया गया।

इसके प्रमुख कार्य :-

- (i) अजमेर के झामड़-कोयू नामक खान पर रॉक फास्फेट का कार्य इसी संस्था के द्वारा किया जाता है।
- (ii) गिरल बाड़मेर में 125 MW का विद्युत संयंत्र इसी के द्वारा स्थापित किया गया है।
- (iii) जैसलमेर के बडाबाग नामक खान पर 106.3 MW की विद्युत स्काईयां इसी के द्वारा स्थापित की गई हैं।

- 2001 - 4.9 MW

- 2006 -

- 2002 - 4.9 MW

- 2007-08 - 22.5

- 2004 - 5 MW

- 2008-09 - 15 MW

- 2004-05 - 7.5 MW

- 2009-10 - 31.5

- 2005-2006 - 15 MW

- (iv) राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड, राष्ट्रीय केमिकल एंड फर्टिलाइजर लिमिटेड कोमो के द्वारा 425 करोड़ रु. की लागत से राजस्थान राष्ट्रीय केमिकल एंड फर्टिलाइजर

लिमिटेड के नाम से DAP का कारखाना चित्तौड़गढ़ में

DAP → Diammonium Phosphate

(खाद)

स्थापित किया गया है।

→ जिसकी प्रतिवर्ष उत्पादन क्षमता 2.55 लाख टन है।

3. हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड :- खेड़ी (संझुं) - 1967
4. हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड - देवारी (अदयपुर) - 1966
5. भारतीय खनिज क्यूरो - 1948 नागपुर (बारा)
6. खनिज अन्वेषण निगम लि. - नागपुर - 1972

खनिजों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

* खनिज मूल्य की दृष्टि से - बिहार ^(13.1) > MP > गुजरात > Assam > Rajasthan ^(5.7)

* खनिज उत्पादन " → Jharkhand > Rāj.

→ राजस्थान का भारत में खनिज उत्पादन की दृष्टि से 22% योगदान है। जिसमें से 15% धात्विक खनिजों का तथा 25% अधात्विक खनिजों का एवं 26% लघु खनिजों का योगदान है।

→ राजस्थान का भारत में उत्पादन की दृष्टि से आरखंड के बाद दूसरा स्थान है।

→ राजस्थान का भारत में मूल्य की दृष्टि से 5 वां स्थान है। (5.7%)
प्रथम स्थान - बिहार - (13.1) , MP

→ राजस्थान का अधात्विक खनिजों की दृष्टि से भारत में प्रथम स्थान है। एवं धात्विक खनिजों की दृष्टि से 4 स्थान है।

→ राजस्थान में 67 प्रकार के खनिज पाए जाते हैं। इसी कारण इसे "खनिजों का अजायबगाना" कहा गया है।

→ लेकिन खनिजों का दोहन अवैज्ञानिक दृष्टि से होने के कारण राजस्थान मूल्य की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है।

राज. में खनिजों के प्रकार

1. धात्विक खनिज :- वे खनिज जो रासायनिक क्रिया के द्वारा अन्य खनिजों से अलग कर दिये जाते हैं एवं यह अयस्क के रूप में पाये जाते हैं।

NOTE :- जिन खनिजों के पीछे UM/यम/अम आता हो वे सभी खनिज धात्विक खनिज होते हैं।

जैसे लोहा, तांबा, सीसा, जस्ता, जंगहन, मैंगनीज
सोना, चांदी, यूरेनियम, लैटिनम, कॅडमियम, आदि

2. अधात्विक खनिज :- वे खनिज जिन्हें रासायनिक क्रिया के द्वारा अन्य खनिजों से अलग नहीं किया जा सके अधात्विक खनिज कहलाते हैं।

→ इन खनिजों को औद्योगिक खनिज के नाम से भी जाना जाता है।

ए- अन्नक, जिप्सम, रॉक फॉस्फेट, चूना पत्थर, संगमरमर,
धीमा पत्थर, फेल्सपार, आदि

3. ईंधन खनिज :- ये खनिज ऊर्जा के प्रमुख स्रोत होते हैं इन खनिजों में मुख्य रूप से प्राकृतिक, तैल, प्राकृतिक गैस एवं कोयला आता है।

→ इन खनिजों से मुख्य रूप से ऊर्जा प्राप्त की जाती है।

धात्विक खनिज

1. लौहा :- राजस्थान में लौहा मुख्य रूप से अरावली के उत्तर पूर्व एवं दक्षिण-पूर्व में पाया जाता है।

लौहा अयस्क चार प्रकार का होता है।

- (i) मैग्नेटाइट - 74%
- (ii) हेमेटाइट - 64%
- (iii) लिमोनैटाइट - 50%
- (iv) सिडेराइट - 40%

→ राजस्थान में मुख्य रूप से लौहे का उत्पादन निम्न स्थानों पर होता है एवं राजस्थान में हेमेटाइट व लिमोनैटाइट लौहा अयस्क पाया जाता है।

प्रमुख खान

- * मोरीजा - बानील - जयपुर
- * नीमना - रायसेला - दौसा
- * सिंघाना डाबला - झुंझुनूं
- * नीम का धाना - सीकर
- * धूर डुंडेर - उदयपुर
- * नाथरा की पाल - उदयपुर

→ राजस्थान में सबसे अधिक लौहे का उत्पादन जयपुर जिले से होता है। यह हेमैराइट प्रकार का है।

2. सीसा-जस्ता :- सीसे जस्ते के अयस्क को गैलेना (PbS) कहा जाता है। यह अयस्क मिश्रित रूप में मिलने के कारण इसे जुड़ा खनिज भी कहते हैं।

→ राजस्थान में जिन स्थानों पर सीसे जस्ते का उत्खनन होता है उन्हीं स्थानों से चांदी व तांबा का उत्खनन होता है।

प्रमुख खान

* जावर खान :- उदयपुर

→ यह देश की सबसे बड़ी जस्ते की खान है।

* राजपुर-दरीबा :- राजसमंद

* पुर-दरीबा - भलिवाड़ा

* रामपुरा - आगूचा - भनिवाड़ा

* गुडा किशोरी वास - अलवर

* चौथ का बरवाड़ा - सवाई माधोपुर

* सोचिया भगवा - उदयपुर

* रेल - मगरा - राजसमंद

* रघुनाथगढ़ - सीकर

→ राजस्थान में जस्ते के उत्खनन के लिए दो संयंत्र स्थापित किये गये हैं।

(i) हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड - उदयपुर → इसकी स्थापना केन्द्र सरकार के द्वारा की गई जो मुख्य रूप से देवारी नामक खान पर उत्खनन का कार्य करता है।

(ii) चर्नैरिया - सुमेल्टर स्मेल्टर - चित्तौड़गढ़

→ इसकी स्थापना ब्रिटेन के सहयोग से की गई जो मुख्य रूप से जस्ते का उत्खनन कार्य करता है।

→ राजस्थान में सीसा गलाने का संयंत्र ना होने के कारण सीसे के अयस्क को टुंडू बिहार भेजा जाता है।

→ राजसमंद के दरीबा नामक खान पर सीसा गलाने का संयंत्र स्थापित किया गया है लेकिन इसकी क्षमता कम होने के कारण सीसे के बचे हुए अयस्क को बिहार भेजा जाता है।

3. चांदी :- देश में सबसे अधिक चांदी का उत्पादन राजस्थान में होता है।

चांदी की प्रमुख खान

* राजपुर - दरीबा - राजसमंद

* रामपुरा - आगूचा - भीलवाड़ा

4. सोना :- राजस्थान में सबसे अधिक सोने के भण्डार बांसवाड़ा जिले में पाये जाते हैं।

→ उसके भन्वरा दौसा जिले में भी सोने के क्षेत्रों का पता लगाया गया है।

बांसवाड़ा के प्रमुख स्थान

* आनन्दपुर - भूकिया क्षेत्र

* जगतपुरा क्षेत्र

NOTE आनन्दपुर भूकिया बांसवाड़ा में हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड के द्वारा सोने की खोज का कार्य किया जा रहा है।

5. तांबा :- तांबा राजस्थान में सबसे अधिक खेड़ी नामक स्थान से निकला जाता है।

→ तांबे के उत्पादन में राजस्थान का उड़ीसा के बाद इसरा स्थान है। एवं भंडार की दृष्टि से उड़ीसा, आंध्र प्रदेश के बाद तीसरा स्थान है।

→ राजस्थान में तांबा परिशोधन शाला खेड़ी कस्बे में स्थापित की गयी है।

→ राजस्थान में तांबे के उत्पादन का कार्य हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड के द्वारा किया जाता है।

→ हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड की राजस्थान में 3 परियोजनाएँ चला रही है।

- (i) HCL - Hindustan copper Lt. → खेडी (जुंझुनु)
- (ii) चांदमारी - कॉपर लि. → जुंझुनु
- (iii) नीम का थाना → सीकर
कॉपर लिमि.

तांबे के प्रमुख उत्खनन क्षेत्र

- * खेडी - जुंझुनु
 - * खो-दरीवा - अलवर
 - * नीम का थाना - सीकर
 - * पुर-दरीवा - भीलवाड़ा
 - * भगोली - अलवर
 - * बनौ वानी की टाणी - सीकर
 - * राजपुर - दरीवा - राजसमंद
- { तांबा तीनों चट्टानों में पाया जाता है अग्नेय, अवसादी तथा कायांतरित

NOTE राजस्थान में सबसे अधिक तांबे के क्षेत्रों का नीम का थाना सीकर में पता लगाया गया है।

6. मैंगनीज

राजस्थान में सबसे अधिक मैंगनीज का उत्पादन बांसवाड़ा जिले में होता है।

न. संगमरमर

→ संगमरमर मुख्य रूप से अवसादी चट्टानों में पाये जाते हैं।

→ चूना-पत्थर पर अत्यधिक दब, ताप एवं भूतंत्रिक क्रियाओं के द्वारा जो चट्टानें फूटने लगी हैं उन अवसादी चट्टानों को मार्बल (संगमरमर) कहा जाता है।

* राजनगर - राजसमंद

→ राजस्थान में सबसे अधिक मार्बल का उत्पादन राजसमंद जिले से होता है। एवं राजस्थान में सबसे अधिक खनन के पड़े मार्बल के हैं।

* किशनगढ़ - अजमेर

→ राजस्थान के किशनगढ़ में देश की सबसे बड़ी संगमरमर मण्डी है। या संगमरमर परिशोधन शाला है।

* मकराना - नागौर

→ राजस्थान में श्वेद संगमरमर का उत्पादन मकराना की खान से होता है।

→ मकराना के संगमरमर से आगरा का ताजमहल, जोधपुर का जसवंत धड़ा, सिरोंही के देववाड़ा के जैन मंदिर एवं कन्नड़ का विक्रोत्थि भवन निर्मित है।

NOTE:- विश्व में सबसे अधिक प्रसिद्ध संगमरमर इटली देश में पाया जाता है। - इटालियन मार्बल

* सफेद संगमरमर :- भकराना नागौर

* गुलाबी - भरतपुर

* पीला एवं हीटदार - जैसलमेर

* बादाभी - जौहपुर

* काला - भैंसनामा (जयपुर)

* हरा - उदयपुर

* गुलाबी लहरदार - राजसमंद

* लाल - धौलपुर, करौली

NOTE :- धौलपुर के लाल संगमरमर से राष्ट्रपति भवन का निर्माण किया गया है।

NOTE :- भकराना के सफेद संगमरमर को कैल्साइट के नाम से जाना जाता है।

खेरवाड़ा - उदयपुर :- राज. सरकार के द्वारा हाल ही में

खेरवाड़ा उदयपुर की खान की प्रदूषण मुक्त खान का प्रमाण पत्र जारी किया गया है।

B. टंगस्टन :- इस खनिज का उपयोग विद्युत उपकरणों, रक्षा उपकरणों एवं बसुओं को कठिन आदि में किया जाता है।

इसके अयस्क को तुलकोमाइट कहा जाता है।

L. उगाना - भाकरी :- यह देश की सबसे बड़ी टंगस्टन परियोजना है (सबसे बड़ी खान) नागौर के उगाना नामक

स्थान पर खेत की पहाड़ियां में स्थित हैं।

2. वालदा × क्षेत्र :- सिरोही - राज. राज्य टंगस्म विभाग के द्वारा वालदा में भी टंगस्म का खनन प्रारम्भ कर दिया गया है।

आबू रेवदर - सिरोही

सेवरिया - पाली

पीपल्डिया - पाली

9. जिप्सम :- हरसौंड / कैल्शियम सल्फेट

इसका खेदार रूप सैलेनाइट कहलाता है एवं इसको खनन पर P.O.P (Plaster of Paris) की प्राप्ति होती है एवं राज. में क्षारीय भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए जिप्सम का उपयोग किया जाता है। इसके अलावा रासायनिक उद्, रंग रोगन एवं गंधक का तैजाव के निर्माण में भी इसका उपयोग किया जाता है।

→ इसका सर्वाधिक उत्पादन नागौर जिले में होता है

प्रमुख क्षेत्र

* गौंड - मांगलोद - नागौर (सर्वाधिक)

* भदवासी - नागौर

* बिरसासर - राज्य की सबसे बड़ी खान - बीकानेर

* जामसर - राज्य का सबसे बड़ा जमाव - बीकानेर

4/11/14

* खैरवाड़ा → [ठह्यपुर] →

राज्य सरकार के द्वारा हाल ही में

खैरवाड़ा (ठह्यपुर) की खान को प्रदूषण मुक्त खान का प्रमाण पत्र जारी किया गया है।

* टंगरून *

इस खनिज का उपयोग विद्युत

उपकरणों, रक्षा उपकरणों एवं वस्तुओं को बनाने आदि में किया जाता है।

- इसको अयस्क को तुलक्रीमाइट कहा जाता है।

① * डैगाना - भाखरी →

यह देश की सबसे बड़ी टंगरून

परियोजना है। (सबसे बड़ी खान) जो कि नागौर

के डैगाना नामक स्थान पर श्वेत की पहाड़ियों में स्थित है।

② * वाल्हा क्षेत्र (सिरौही) →

राजस्थान राज्य टंगरून विभाग

के द्वारा वाल्हा में भी टंगरून का प्रारंभ कर

रिपोर्ट किया गया है।

(i) आवु रैवदर (सिरीही) *

(ii) सैवरिया एवं पीपलिया (पाली)

* जिप्सम / हरसोड / कैल्सियम सल्फेट *

- इसका रैवदर रूप सैलेनाइट कहलाता है। एवं इसमें मुख्यतः पर POP (प्लास्टर ऑफ पैरिस) की प्राप्ति होती है। एवं राजस्थान की क्षारीय भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए जिप्सम का उपयोग किया जाता है।
- इसके अलावा रासायनिक खाद, रंग रौंगन एवं गन्धक के तैजाब के निर्माण में भी इसका उपयोग किया जाता है।
- इसका सर्वाधिक उत्पादन नागौर जिले में होता है।

* प्रमुख खान / क्षेत्र =>

(i) गोठ / मांगलौद (नागौर) =>

सर्वाधिक जिप्सम

(ii) भदवारनी (नागौर)

(iii) बिरसासर → राज्पी की सबसे बड़ी खान (बीकानेर)

(iv) जामसर → राज्य का सबसे बड़ा जमाव (बीकानेर)

- इसके अलावा जैसलमेर, बाडमेर एवं श्रीगंगानगर में भी पाया जाता है।

चूना पत्थर

यह मुख्य रूप से अवसादी चट्टानों में पाया जाता है।

- चूना पत्थर की खानों में अगर 45% से अधिक मैग्नीशियम हो तो वह डोलोमाइट कहा जाता है।

* स्टील ग्रेट चूना पत्थर → जैसलमेर के शानु क्षेत्र में

* सीमेंट ग्रेट चूना पत्थर → चित्तौड़गढ़

* केमिकल ग्रेट चूना पत्थर → जौद्यपुर व नागौर

Note
मोटन (नागौर) में खुरज फार्मा मार्की चूना पत्थर पाया जाता है।

अभ्रक

→ अभ्रक आग्नेय एवं कायान्तरित चट्टानों में झुंडों के रूप में पाया जाता है।

- इसका उपयोग विद्युत उद्योगों में, सजावटी सामग्री में एवं ताप भट्टियों में किया जाता है।

- यह ताप एवं ध्वनि का कुचालक होता है।

→ माइकेलाइट उद्योग → अभ्रक के चूरे से ईंट तथा चादरें बनाने वाले उद्योग को माइकेलाइट उद्योग कहा जाता है।

- इस उद्योग के सर्वाधिक कारखाने भीलवाडा जिले में पाये जाते हैं।

* रूबी अभ्रक → सफेद अभ्रक को रूबी अभ्रक कहा जाता है।

* बायोराइट अभ्रक → गुलाबी अभ्रक को बायोराइट अभ्रक कहा जाता है।

- इसका उपयोग दवाइयाँ, सजावटी सामान, वायुमण्डल एवं ताप भट्टियों में किया जाता है।

* प्रमुख क्षेत्र →

↓ भीलवाडा →

शाहपुरा, कोरला, फुलिया,

नट की खेड़ी।

- अभ्रक का सर्वाधिक उत्पादन भीलवाडा में होता है।

२. अजमेर →

ड्यावर, जालिया, मिनाथ

३. उदयपुर

४. जयपुर → बंजारी खान

→ राजस्थान का उत्पादन की दृष्टि से तीसरा स्थान है।

राँक फॉस्फेट

जिन चट्टानों में हाई कैल्शियम फॉस्फेट का प्रतिशत अधिक पाया जाता है, उन्हें राँक फॉस्फेट चट्टान कहा जाता है।

- इनका उपयोग रासायनिक खाद के उत्पादन में अत्यधिक किया जाता है।

* क्षेत्र →

1. झामर कौटडा (उदयपुर) →

देश की सबसे

बड़ी राँक फॉस्फेट खान।

- इसके अलावा उदयपुर के मारौन, कानपुरा, नीमच आदि से भी इनका उत्पादन होता है।

२. जैसलमेर → लाडी सीरिज, विरमानिया क्षेत्र, फतेहगढ़

3. जयपुर → अचरोल

4. सीकर → करपुरा

एस्बेस्टॉस (90%) (मिनरल सिलिक)

* उपयोग → सीमेंट, चाकर, रेल के डिब्बे, नहान, राइफल, ।

* एस्बेस्टॉस के दो प्रकार के होते हैं →

(I) क्राइसोलाइट

(II) इम्फीबॉल → यह बरिया किरम का एस्बेस्टॉस शजरस्थान में पाया जाता है ।

* प्रमुख क्षेत्र →

1. उदयपुर → खैरवाडा, ऋषभदेव, सबूमबर

2. राजसमन्द → तिरवी

3. डूंगरपुर → कैवल, खैमारु, नलवा

4. भीलवाडा

5. पाली

6. अजमेर

फैल्सपार

→ यह एक ऐसा खनिज है, जो स्वतंत्र रूप से प्राप्त नहीं होता है।

- इसके साथ पौराणिक व स्त्रोटाइब्रियर पर पाया जाता है।

* प्रमुख क्षेत्र →

1. अजमेर → मकरेरा

↓
सर्वाधिक फैल्सपार → 96%

2. भीलवाड़ा →

माण्डल व आसीदि

3. पाली → चनौदिया

4. अलवर → खैरतल

* उपयोग →

चीनी मिट्टी के बर्तनों में उपयोग।

कॉच बालूका

* U.P. के बाद राज. का दूसरा स्थान है।

* प्रमुख क्षेत्र →

1. जयपुर → झर, मनौता, बांस्की

↓
सबसे अधिक उत्पादन

2. बूंदी → बारौदिया

चीनी मिट्टी

इसका उपयोग खर उद्योग, पेंट्स, सीमेंट आदि में किया जाता है।

* उत्पादन क्षेत्र →

1. सवाई माधोपुर → बायु रायसीना, चौब
का बरवाडा

↓
सबसे अधिक चीनी मिट्टी

2. सीकर → गौवर्द्धनपुरा, टोरडा, झुचरा

Note चीनी मिट्टी का उचित उपयोग करने के लिए इसकी धुलाई अनिवार्य है।

- इसकी धुलाई का कारखाना नीमकाणना (सीकर) में स्थापित किया गया है।

डोलोमाइट

पाइडर एवं चूना बनाने में उपयोग किया जाता है।

- राज. में सबसे अधिक उत्पादन जयपुर जिले (48%) में, अलवर (23%), सीकर (15%) में होता है।

Note

हाल ही में राजसमन्द जिले के मरुश्वर क्षेत्र में डोलोमाइट के भण्डारों का पता चलता है।

वोल्टेजोमाइट (100%)

* उपयोग → इंग रौंगन, कागज उद्योग, रासायनिक उद्योग।

→ राजस्थान में सर्वाधिक उत्पादन खिरौही जिले में होता है।

* प्रमुख क्षेत्र →

1. खिरौही → फिल्ला, बेल्ला

2. डक्यपुर → बडा ऊपरला खंडा, आथरा

3. डूंगरपुर

4. अजमेर

यूरेनियम

* उपयोग → परमाणु विखण्डन में

→ यूरेनियम का सर्वाधिक उत्पादन डक्यपुर जिले से होता है। इसके अलावा भीलवाडा, सीकर व टोंक जिले से इसका उत्पादन होता है।

पन्ना

- यह आभूषण बनाने के काम आता है।

- यह हरे रंग का मखमल के समान पदुमूल्य पत्थर है।

- इसे हरी अग्नि भी कहा जाता है।

→ पन्ना बैरिलियम एल्युमिनियम का मिश्रण होता है

* पन्ना मण्डी व पन्ना नगरी → जयपुर

- 1943 में सर्वप्रथम इसे काला गुमान क्षेत्र (उदयपुर) में खोजा गया।

* उत्पादन क्षेत्र →

1. उदयपुर → काला गुमान क्षेत्र

2. राजसमन्त → टिक्की

Note

हाल ही में ब्रिटेन की कंपनी माइस मैनेजमेंट लिमिटेड ने अजमेर से नाथद्वारा तक पन्ने की पट्टी की खोज की है।

तामडा → 100%

- इसे गारनेट, रक्त मणि व लाल मणि भी कहते हैं।

- यह लौहा व एल्युमिनियम का मिश्रण होता है।

- यह दो प्रकार का होता है →

1. अर्ब्रेसिव

2. जैम → राजस्थान में

* उत्पादन क्षेत्र →

1. रॉक → राजमहल, जनकपुरा

2. अजमेर → सरवाड, खरखरी

हीरा

चित्तौड़गढ़ जिले के केदारपुरा क्षेत्र में हीरे के भण्डार प्राप्त हुए हैं।

धीया पत्थर

सर्वाधिक उत्पादन उदयपुर से होता है।

- उदयपुर में देवपुरा की खान सबसे बड़ी धीया पत्थर की खान है।

बेन्टोनाइट

इसका उपयोग वनस्पति व खनिज तैलों को साफ करने के लिए किया जाता है।

- राज. में इसके सबसे अधिक भण्डार बाड़मेर जिले में स्थित हैं।

मुल्तानी मिट्टी

↓
बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर

ग्रेनाइट

राजस्थान में सबसे अधिक ग्रेनाइट का उत्पादन जालौर जिले में होता है, इसीलिए जालौर को ग्रेनाइट सिटी कहा जाता है।

ग्रेनाइट प्रोसेसिंग केंद्र → जालौर
→ विश्व में सबसे महंगा पत्थर ग्रेनाइट पत्थर
होता है।

* स्लैट पत्थर *

↓
भलवर → सबसे अधिक

* क्वार्ट्ज *

↓
सीकर → सर्वाधिक

3. राजस्थान के ईंधन खनिज →

(i) **कौयला** → राजस्थान में कौयले के कुल भण्डार 105 करोड़ टन है।

- राजस्थान में लिग्नाइट कौयले का उत्पादन होता है, जिसे भूरा कौयला भी कहते हैं।

* प्रमुख उत्पादन क्षेत्र →

1. बाडमेर →



60 करोड़ टन भण्डार

कपूरडी, जालिफ़ा, गिरल, भादका

2. बीकानेर → 23 करोड़ टन



पलाना, जापासर, बिथनोक, गुरहा (गुढा)

3. नागौर → 20 करोड़ टन



बरसिंहपुरा

Note

सर्वाधिक कौयले का उत्पादन कपूरडी (बाडमेर) से एवं सबसे इतम किस्म का कौयला पलाना (बीकानेर) से प्राप्त होता है।

(ii) खनिज तेल व प्राकृतिक गैस →

राज. में सर्वप्रथम

जैसलमेर खोराक नामक स्थान पर 1933 में गैस

के भण्डार प्राप्त हुए।

* मानिहारी टिंडवा → जैसलमेर

Note

डॉटारु नामक स्थान पर हीमियम व मीथेन गैसों के भण्डार पाये जाते हैं।

* गौडा मलाडी → बाड़मेर

- यह विश्व के सबसे कम गहराई पर उत्तम श्रेणी के पेट्रोल के भण्डार हैं।

- इसके अलावा बाड़मेर में कौसलू, कवास क्षेत्र, सादा झुण्ड आदि क्षेत्रों पर तैल के भण्डार पाये जाते हैं।

→ बीकानेर के बाधे वाला से तवारी वाला तक 13 K.M. क्षेत्र में तैल के भण्डार पाये गये हैं।

* बाड़मेर के तैल व गैस क्षेत्र →

(A) मंगला → 5 Feb. 2004 A. S. को कवास क्षेत्र में नौगाश्नर गाँव में प्राप्त हुआ। (बाड़मेर)

(B) कामेश्वरी → अडेल गाँव (बाड़मेर)

(C) एश्वर्या → वायतु गाँव (बाड़मेर)

(D) सरस्वती → कौसलू गाँव (बाड़मेर)

(E) विजया, भाग्यम → बीधिया गाँव (बाड़मेर)

(F) राजेश्वरी → बाड़मेर

(G) गदा → बाड़मेर

कंपनी

Note

1. जैसलमैर नागौर बेसिन → IOC
2. वाडमैर सांचौर बेसिन → कियर्न एनर्जी
3. डीगंगानगर बेसिन → एस्सार कम्पनी
4. जैसलमैर → ONGC
5. जैसलमैर बेसिन → फिनिक्स इन्टरनेशनल कंपनी

* तेल व प्राकृतिक गैस की पाइप लाइन ⇒

1. HBJ ⇒ हजारी, बीजापुर, जगदीशपुर
↓ ↓ ↓
(गुजरात) (M.P.) (U.P.)

इस पाइप लाइन के द्वारा अन्ता (बारां) गैस विद्युत गृह, गंडेपान खाद्य संयंत्र (कोरा), सिमकोर ग्लारस कैंद्री (कोरा), धौलपुर विद्युत गृह आदि को इस पाइप लाइन से गैस की पूर्ति कराई जाती है।

* राजधानी की खनिज नीति

राज. में प्रथम खनिज नीति

1978 A. D. में श्री शंखावर के मुख्यमंत्री काल में घोषित की गई।

* 1978 की खनिज नीति → इसमें खनिज पदार्थों की

खोज हेतु सर्वेक्षण पर जोर दिया गया। एवं छोटे पट्टे धारियों को रिडि उपलब्ध कराया गया तथा 80 व 31 के लिए सँगमरुत के खनन पट्टे दिलाये गये।

* खनिज नीति 1994 → मशीनीकृत एवं वैज्ञानिक खनन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राज्य में खनन नीति 16 Aug. 1994 को जारी की गई।

→ प्रमुख उद्देश्य →
① आधुनिक तकनीक को अपनाकर नवीन खनन क्षेत्रों की खोज करना।

② शक्ति एवं वैज्ञानिक विधि से खनन कार्य करना।

③ खनिज आधारित उद्योगों की स्थापना हेतु प्रोत्साहन देना।

④ खनिज के उत्पादन व निर्यात में वृद्धि करना।

⑤ नियम व प्रक्रिया को सरल बनाकर उत्पादन में वृद्धि करना।

⑥ खनन क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की वृद्धि करना।

⑦ खनिज उद्योगों के लिए मानवीय साधनों का विकास करना।

5/08/14

खनिज मीति के उद्देश्यों को प्राप्त करने

के लिए सरकार के प्रमुख कदम →

1. निर्यात में वृद्धि एवं प्रोत्साहन हेतु सेमिनार, मेले व प्रदर्शनियों का आयोजन करना ।
2. स्वदेशी व विदेशी निवेशकों व उद्यमियों को खनिज पदार्थों की खोज में वृद्धि करने व निर्यात के लिए अवधि ऋण उपलब्ध करवाना ।
3. उद्योग लगाने वालों को खनन फूटे, आवंटन की प्राथमिकता दी गई ।
4. खनन उद्योगों को आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई गई । →
यथा - (i) खनन क्षेत्रों को सड़क से जोड़ना
(ii) ग्रामिक, खानों में कार्यरत कामियों के बच्चों को स्कूल व अस्पताल की सुविधा, खनन क्षेत्रों में वनों का विकास ।
5. अजमेर में प्रयोगशाला को परिष्करण एवं रसायन विश्लेषण हेतु बृद्धि करना ।
6. उदयपुर में विभागीय प्रयोगशाला तथा खान ब्यूरो परिष्करण प्रयोगशाला स्थापित करना ।

इस खनन

* इस खनन में प्रमुख सरकार की

नीति →

1. खनन पट्टों की अवधि 10 वर्ष से 30 वर्ष

करना ।

2. खादान लाइसेन्स की अवधि एक वर्ष से बढ़ाकर 5 वर्ष की गई ।
3. खान पट्टों का नवीनीकरण 30 वर्षों के लिए कर दिया गया ।
4. खनन के निर्धारित क्षेत्र 0.5 से बढ़ाकर 1 हेक्टेयर तक कर दिया गया ।
5. संगमरमर व ग्रेनाइट प्लॉटों का आकार 1 हेक्टेयर से बढ़ाकर 2.25 हेक्टेयर कर दिया गया ।
6. अवैध खनन को रोकने के लिए नियमों को अधिक कठोर बनाया गया ।
7. क्षेत्रीय कार्यालयों की स्थापना की गई ताकि बेहतर प्रशासन दिया जा सके ।
8. खानों का निरीक्षण करने वाले सहायक खनन अभियंता के ऊपर प्रथम श्रेणी के अधिकारियों को नियुक्त किया गया ।

* निष्कर्ष →

यह कहा जा सकता है, कि अगर 1994 की खनिज नीति के नियमों एवं प्रावधानों को राज्य सरकार लागू करे और उनका कठोरता से पालन से तो खनिज के क्षेत्र में क्रांति लाई जा सकती है।

गैनाइट व मार्बल नीति 2002

- * प्रथम गैनाइट नीति 1991
- * दूसरी गैनाइट नीति \Rightarrow January 1995
- * प्रथम मार्बल नीति - Oct. 1994

* 8 January 2002 को राज्य सरकार ने नवीनतम मार्बल व गैनाइट नीति घोषित की, जिसके प्रमुख प्रावधान इस प्रकार हैं \Rightarrow

1. पट्टे जारी करने से पूर्व पत्थर की उपलब्धता सुनिश्चित की जायेगी।
2. खनिजों का पता लगाने के लिए लाइसेंस दिये जायेंगे।
3. गैनाइट पट्टों का क्षेत्र 2.25 हेक्टेयर से बढ़ाकर 3 हेक्टेयर एवं अधिकतम 9 हेक्टेयर भूमि आवंटित की जायेगी।
4. मार्बल पट्टों पर 2.25 से बढ़ाकर 4 हेक्टेयर कर दिया जायेगा।
5. दोनों नीतियों में SC व ST को 10%, OBC को 5% बेरोजगार स्नातकों को 3% एवं भूतपूर्व सैनिकों को 2% आरक्षण दिया जायेगा।

* विजन 2020 →

खनन उद्योग को गति प्रदान करें
इसलिए खनिज विभाग द्वारा खनन क्षेत्र की दीर्घ
कालीन योजना विजन 2020 को 15 August
1999 को जारी लागू किया गया

* उद्देश्य →

1. राजस्थान की खनिज सम्पदा का पूर्ण
वैज्ञानिक दौहन
2. खनिज प्रधान क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाएँ
आवश्यक करना।
3. खनिज सम्पदा से प्राप्त राजस्व में वृद्धि करना।

Q: राजस्थान में खनन उद्योग की विशेषता, समस्या
एवं उनके समाधान का इल्लेख कीजिए।

Ans

1. राजस्थान में अनेक खनिज पाये जाते
हैं, लेकिन इनका क्षेत्रीय वितरण असमान है।
जैसे - दक्षिणी एवं दक्षिणी पूर्वी भाग खनिजों के
धनी क्षेत्र हैं, लेकिन उत्तरी भाग में खनिज कम
पाये जाते हैं।
- कुछ महत्वपूर्ण खनिज पश्चिमी राजस्थान में भी
पाये जाते हैं।

2. शहरस्थान में ईंधन व लौह धात्विक खनिजों की कमी है।
3. शहरस्थान में कुछ धात्विक खनिजों के पर्याप्त भण्डार हैं, लेकिन उनका असमान वितरण है।
4. शहरस्थान में परिवहन के अभाव में कुछ खनिजों का दौहन उचित तरीके से नहीं होता है। अतः परिवहन के साधनों का विकास करना अहिवाय है।
5. राज्य में खनन कार्य आर्थिक दृष्टि से मजबूत व्यक्तियों के पास नहीं है। इसी कारण नवीन तकनीकों का प्रयोग पुराने तरीके से किया जाता है।
6. ऊर्जा आपूर्ति की कमी तथा खानों में मशीनों के द्वारा खनन न होना। इन दोनों समस्याओं के कारण अन्नक का खनन प्रभावित होता है।
7. ऊँची दर पर रेल द्वारा भाड़ा (किराया) वसूल करना जिससे खनन प्रभावित होता है।
8. श्रमिकों का अभाव है, अतः प्रशिक्षण प्राप्त श्रमिकों की आवश्यकता है।
9. खनन क्षेत्रों में पानी की कमी के साथ अत्यधिक गहराई में खनन कार्यों से जो पानी निकलता है, इससे निम्न की उचित व्यवस्था नहीं है।
10. खनिजों के उपयोग में विविधता नहीं है, परिणाम-स्वरूप अनुसंधान कार्य आवश्यक है। जिससे अन्य उपयोग की जानकारी प्राप्त हो सके।

11. खनिजों की बहुत सी खानें बंदी हैं, जिससे
उनमें सफलतापूर्वक कार्य नहीं किया जा सकता।

12. राज्य में खनन उत्पादन लागत अधिक है, जिसके
कारण अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में खसरे बानि होती हैं।

13. अधिक लागत के कारण →

(i) अकुशल श्रमिक

(ii) अकुशल प्रबन्ध

(iii) खनन के दौरान व अकिरसित

तरिके

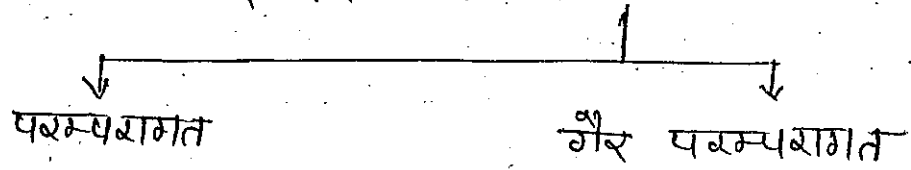
(iv) यंत्रिकरण व आधुनिक तकनीकों का अभाव

(v) परिवहन के पर्याप्त साधनों का अभाव

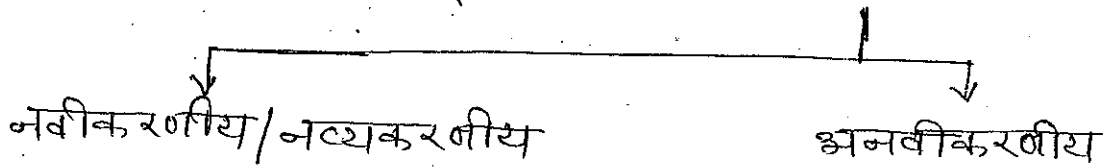
14. राज्य में खनिज के विकास की विपुल संभावनाएँ
हैं, लेकिन राज्य सरकार के पास उचित धन
न होने के कारण खनन का विकास नहीं हो
पा रहा है। अतः खनन कार्य के लिए उचित
धन राशि की आवश्यकता है।

* ऊर्जा के परम्परागत एवं गैर परम्परागत स्रोत *

* उपयोगिता के आधार पर ऊर्जा के स्रोत



* समाप्ति के आधार पर ऊर्जा के स्रोत



* परम्परागत ऊर्जा संसाधन →

वे ऊर्जा संसाधन जिनका उपयोग लम्बे समय से किया जा रहा है। और इनसे ऊर्जा प्राप्त करने के लिए तकनीकी आवश्यकता नहीं होती है, परम्परागत ऊर्जा संसाधन कहलाते हैं।

जैसे → कौसला, लकड़ी, गोबर आदि

* गैर परम्परागत ऊर्जा संसाधन →

वे ऊर्जा स्रोत जो मानव ने अपने विकास क्रम में खोजे तथा इनसे ऊर्जा प्राप्त करने के लिए उन्नत या उच्च तकनीक की आवश्यकता है, गैर परम्परागत ऊर्जा के संसाधन कहलाते हैं।

जैसे →

वायु गैस, पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, समुद्री तरंग ऊर्जा, समुद्री पवन ऊर्जा।

* नवीकरणीय ऊर्जा संसाधन \Rightarrow
इन्हें चक्रीय ऊर्जा संसाधन
भी कहते हैं।

- वे ऊर्जा स्रोत जो कभी समाप्त नहीं होते और
उचित समय पर जिनका प्रतिस्थापन प्राकृतिक
क्रिया द्वारा किया जा सकता है, इन्हें नवीकर-
णीय ऊर्जा स्रोत कहते हैं।

जैसे \rightarrow सौर (सूर्य), जल, पवन, लकड़ी, गोबर आदि

* अनवीकरणीय ऊर्जा स्रोत \Rightarrow
इन्हें अचक्रीय ऊर्जा संसाधन
भी कहते हैं।

- वे ऊर्जा स्रोत जिनका एक बार उपयोग करने
से समाप्त हो जाते हैं, तथा प्राकृतिक क्रियाओं
द्वारा उचित समय पर प्रतिस्थापित नहीं किया
जाता है, इन्हें अनवीकरणीय ऊर्जा संसाधन कहते हैं।

जैसे \rightarrow

कोयला, पेट्रोल, गैस आदि

Q :- राजस्थान में विद्युत स्टेशनों के प्रकारों का वर्णन कीजिए ।

Ans राजस्थान में विद्युत स्टेशन पाये जाते हैं -

1. STPP →

↓ Super Thermal Power Plant

यदि किसी प्लांट की कुल क्षमता 1000 मेगावाट या इससे अधिक हो, तो उसे STPP कहते हैं ।

जैसे →

सुरतगढ़, कोटा
(गंगानगर)

2. SCPP →

सुपर क्लिटीकल पावर प्लांट

↓

यदि किसी प्लांट की एक इकाई की क्षमता 500 मेगावाट या इससे अधिक हो, तो उसे SCPP कहते हैं ।

जैसे →

झबड़ा (बारा)

Q:- राजस्थान में विद्युत क्षेत्रों में सुधारों पर
लिखिए।

Ans विद्युत संविधान में समवर्ती सूचिका
विषय है।

→ भारत में प्रथम विद्युत ब्लाक 1897 में बानीलिंग (पं
बंगाल) में जल विद्युत गृह के रूप में स्थापित की
गई।

- कुसरा

राजस्थान में स्वतंत्रता से पूर्व 15 छोटे-
छोटे विद्युत गृह थे। जिनकी कुल उत्पादन क्षमता
1226 मैगावाट थी, जिससे प्रदेश के कुल 26 शहर
एवं गाँवों को विद्युत की पूर्ति कराई जाती थी।

स्वतंत्रता के बाद इस स्थिति को देखते हुए
राजस्थान में विद्युत सुधार प्रारंभ किये गये, जो
निम्नांकित है।

1957 में राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल
की जयपुर में स्थापना की गई, जिसका मुख्य
उद्देश्य नियोजित रूप से विकास एवं वितरण
का उत्पादन पर ध्यान देना था।

→ राजस्थान विद्युत निगम अध्यायोग 2000 → राजस्थान
विद्युत निगम अधिनियम 1998 के आधार पर
इसका शठम क्रिया गया।

- इसने सुझाव दिया कि उत्पादन प्रसारण एवं

वितरण की इकाइयों को अलग-अलग रखा जाये और इन तीनों कंपनियों को लाइसेंस जारी करने के लिए अधिकार दिये जायें।

कुछ समय पूर्व 1999 में राजस्थान विद्युत क्षेत्र अधिनियम पारित करके विद्युत क्षेत्र के सुधारों को संरचनात्मक रूप में लागू किया गया। यह अधिनियम सन् 2000 में लागू हुआ, तथा 2000 में राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल का विभाजन करके 5 कंपनियों का गठन किया गया →

1. राजस्थान राज्य

विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड → जयपुर

2. राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लि. → जयपुर

3. जयपुर विद्युत वितरण नि. लि.

4. जोधपुर विद्युत वितरण नि. लि.

5. अजमेर विद्युत वितरण नि. लि.

1. राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड →

यह राजस्थान में

विद्युत उत्पादन के लिए उत्तरदायी है।

- राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल के नियंत्रण में सभी परियोजनाएँ हरे स्थानान्तरित कर ली गई हैं।

2. राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड

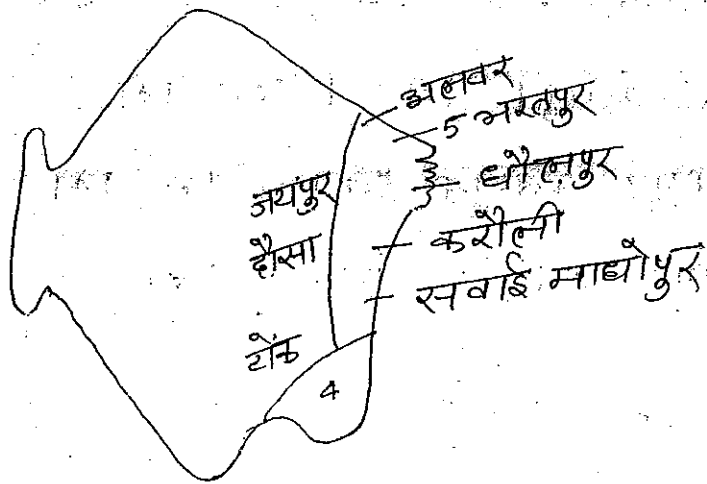
इस प्रमुख कार्य 400 K.V., 220 K.V.

विद्युत प्रसारण एवं सब-स्टेशनों का निर्माण,
परिचालन एवं संचालन संबंधी कार्य।

- विद्युत संबंधी योजना एवं आंकड़ों का संकलन,
अध्ययन एवं आधुनिकीकरण के द्वारा सुधारालु
कार्यों को लागू करना।

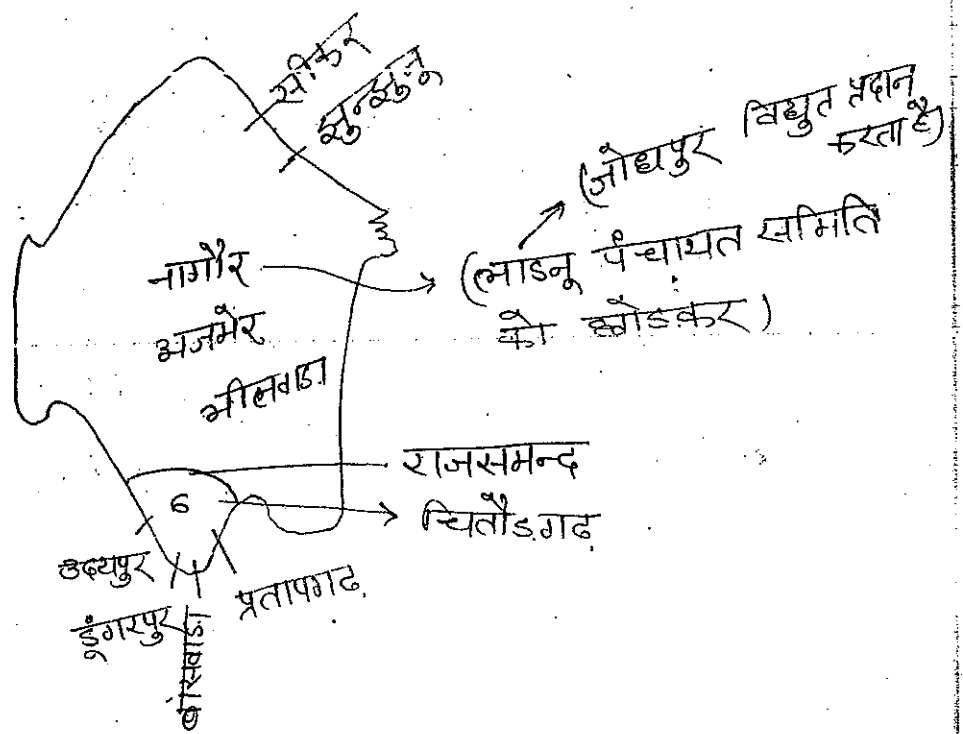
3. जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड

यह निगम राज्य के 12 जिलों में
विद्युत वितरण का कार्य करता है।



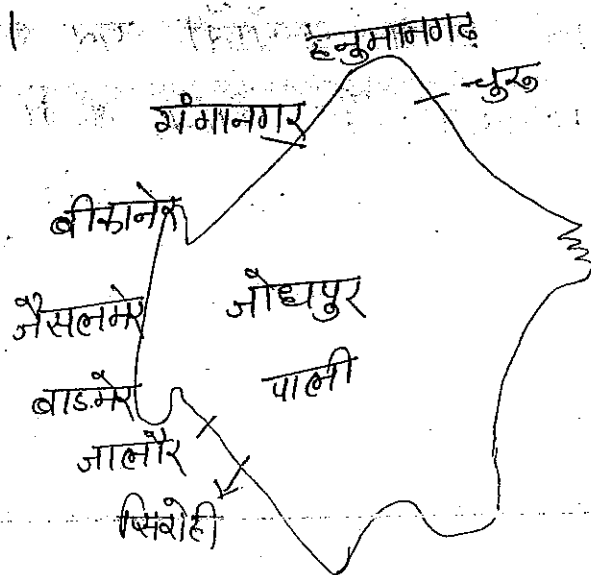
4. अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड

यह राज्य के 11 जिलों में विद्युत
वितरण का कार्य करता है।



4. जौधपुर विद्युत

यह राज्य के उत्तरी व पश्चिमी क्षेत्र के 10 जिलों में विद्युत की सेवाएँ प्रदान करता है।



सन् २००५ में वर्ल्ड बैंक की सहायता से उत्पादन, प्रसारण एवं वितरण के क्षेत्र में

इन सभी प्रयासों के फलस्वरूप विद्युत धीजत में कमी आई। तथा विद्युत चोरी काफी हद तक रुकी है, जिसके कारण प्रत्येक क्षेत्र में सही समय पर गुणवत्तापूर्ण एवं मुक्ति युक्त विद्युत की आपूर्ति सुनिश्चित हुई है।

विद्युत उत्पादन की लागत में काफी कमी आई है, तथा उत्पादन बढ़ा है।

- इसी के अन्तर्गत परम्परागत संसाधनों के अतिरिक्त गैर परम्परागत स्रोतों के विकास की संभावना तलबी जा रही है।

* निष्कर्ष ⇒

आज भी ऊर्जा सुधार पर्याप्त नहीं है, अतः गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोतों पर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है, ताकि ऊर्जा सुरक्षा एवं ऊर्जा स्वतंत्रता सुनिश्चित की जा सके।

06/04
Q → गैर परम्परागत ऊर्जा संसाधन किसे कहते हैं? और इससे संबंधित राजस्थान में कांचा प्रारूप क्या है?

अथवा

गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोतों का अर्थ स्पष्ट करते हुए इससे संबंधित संस्थाओं को विस्तार से बताइये।

Ans

ऊर्जा के गैर परम्परागत स्रोत जो नये हैं, तथा इनसे ऊर्जा प्राप्त करने के लिए तकनीकी आवश्यकता होती है, गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत कहलाते हैं।

राजस्थान में गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोतों से संबंधित प्रमुख संस्थाएँ →

1. राजस्थान ऊर्जा विकास एजेंसी (REDA) → 1985

↓

वर्तमान में इसका विषय

अक्षय ऊर्जा निगम में कर दिया है।

- यह पूर्व में ~~जयपुर~~ जयपुर में था, जिसका मुख्य इद्देश्य गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोतों का विकास करना तथा उपयोग को बढ़ावा देना था।

2. राजस्थान राज्य ऊर्जा निगम लिमिटेड (RSPCL) 1995

↓

इसका विषय भी अक्षय ऊर्जा

निगम में कर दिया है।

- यह भी जयपुर में था, इसका प्रमुख कार्य गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोतों की स्थापना करना था।

छ. राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम (RREC) ⇒ इसकी स्थापना 2002 में की गई।

- इसका मुख्यालय जयपुर में स्थित है।
- यह गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोतों के विकास, उत्पादन, प्रसारण एवं विद्युत उत्पादन यंत्रों की स्थापना से संबंधित कार्यों को देखता है।

* राजस्थान सरकार की विद्युत परियोजनाएँ

परम्परागत

गैर परम्परागत

1. तापीय परियोजनाएँ

1. सौर ऊर्जा

2. जल परियोजनाएँ

2. पवन ऊर्जा

3. गैस परियोजनाएँ

3. बायोमास

1. तापीय परियोजनाएँ ⇒

सूरतगढ़

कौटा

छबड़ा (बारा)

बरसिंगसर (बीकानेर)

गिरल (बाडमेर) ⇒ 125 ~~मेगावाट~~ मेगावाट

2. जल विद्युत परियोजनाएँ ⇒

साही, आखम, चम्बल आदि

3. गैस विद्युत परियोजनाएँ ⇒

1. धौलपुर,

2. आमरकौटडा (ठक्यपुर)

3. रामगढ़ आदि
(जैसलमेर)

सौर ऊर्जा की परियोजनाएँ ⇒

खीवंसर (नागौर)

फागी (जयपुर)

धुनिया (जोधपुर)

बूढसर (जैसलमेर)

2. पवन ऊर्जा के संयंत्र ⇒

अमरसागर (जैसलमेर)

देवगढ़ (प्रतापगढ़)

सोदा बंधन (जैसलमेर)

बीडडी (जोधपुर)

बडा बाग (जैसलमेर)

3. वायोमास ऊर्जा संयंत्र ⇒

पद्मपुर (धर्मगानगर)

निशाग (लौक)

रंगपुर (लौक)

पचार (बारा)

मोटपुतली (जयपुर)

सांगरिया (हनुमानगढ़)

...

~~अर्थव्यवस्था~~

राजस्थान में पशुधन

* भूमिका ⇒

शुष्क एवं मरुस्थलीय क्षेत्र के कारण वर्षा की कमी और कृषि का पर्याप्त विकास नहीं होने के कारण पशुधन राजस्थान की अर्थव्यवस्था में आधार स्तम्भ का काम करता है।

Note

डॉ. हार्विन के अनुसार,

पशुधन के बिना खेत बिना जुते रहते, खेत खलिहान खाद्यों के अभाव में खाली पड़े रहते तथा एक शाकाहारी देश में इससे अधिक दु:स्वभावी बात क्या हो सकती है, कि यहाँ पशुधन के अभाव में दूध, घी, पनीर आदि पौष्टिक पदार्थों का अभाव हो जाता।

* पशुधन ⇒

पशु या पशुधन का समूह जिसे कृषि कार्यों में, भ्रम, खाद्य उत्पाद एवं अन्य कार्यों हेतु पालतू बनाया जाता है, तो उसे पशुधन कहते हैं।

* निष्कर्ष → कृषि की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए पशुओं की नस्ल सुधार, वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन एवं पशु प्रतिरूप को कृषि जलवायु के अनुरूप करने की आवश्यकता है, जिससे पशुधन का सतत विकास किया जा सके।

* राजस्थान में पशुपालन से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य →

भारत में खानील के बाद विश्व का सर्वाधिक पशुधन पाया जाता है, जो कि विश्व का कुल 16% है।

- राजस्थान में भारत के लगभग 11% पशु 10% दूध 40% ऊन, 30% मांस, पाया जाता है।
- राजस्थान में पशु संपदा के आकलन के लिए राजस्व मण्डल अजमेर प्रत्येक 5 वर्ष के अंतराल में पशु गणना करवाता है।
- राजस्थान व भारत में प्रथम पशु गणना दिसम्बर 1919 से April 1920 के मध्य हुई थी।
- 2007 की पशु गणना राजस्थान की 18 वीं पशु गणना थी, जो कि पहली ऐसी पशु गणना है, जो नस्ल के आधार पर की गई है।
- राजस्थान की 19 वीं पशु गणना 2012 में करवाई गई है, जिसके प्रमुख अधिकारी श्री भीरू लाल हैं।

→ वर्ष 2007 की पशु गणना में राज्य के कुल पशु ⇒ 5.79 करोड़, 50 लाख मूंगियाँ ।

→ 2007 का पशु घनत्व ⇒ 166 प्रति वर्ग K.M.

→ 2008 का पशु घनत्व ⇒ 144 प्रति वर्ग K.M.

2008 की तुलना में 2007 की पशु गणना में 88 लाख पशुओं की वृद्धि हुई है।

→ 2007 की पशु गणना के अनुसार ⇒

1. बकरियाँ ⇒

218.82 लाख (37.79%)

बाड़मेर में सर्वाधिक

2. गाय ⇒ 124.11

115.82 लाख (21.43%)

उदयपुर में सर्वाधिक

3. भैंस ⇒

115.42 लाख (19.93%)

भलवर में सर्वाधिक

4. भैड़ ⇒

112.84 लाख (19.49%)

बाड़मेर में सर्वाधिक

- 2008 की तुलना में 2007 में सर्वाधिक वृद्धि दर

30.18% बकरियों में हुई ।

✓ - राजस्थान में सर्वाधिक पशुधन → बाड़मेर

Umd → जोधपुर

✓ - सबसे कम पशुधन → धौलपुर

→ सर्वाधिक घनत्व → डूंगरपुर → 309

→ सबसे कम घनत्व → जैसलमेर → 74

Q:→ राजस्थान सरकार द्वारा पशुधन के लिए क्या-क्या प्रयास किये जा रहे हैं? विस्तार से लिखो।

Ans राजस्थान प्रदेश पशुधन को बनाये रखने तथा इसके विकास व स्वास्थ्य की सुरक्षा की दृष्टि से राजस्थान सरकार द्वारा 1957 में पशुपालन विभाग की स्थापना एवं 1968-64 ई. में भेड़ व ऊन विभाग की स्थापना की गई।

- 2000-2001 में दोनों विभागों का विलय कर पशुपालन डेयरी विकास विभाग के नाम से स्थापना की गई। लेकिन वर्तमान में इसे पशुपालन विभाग के नाम से भी जाना जाता है।

* सरकार के प्रमुख प्रयास ⇒

1. चिकित्सा सुविधाएँ ⇒

राजस्थान में

वर्तमान में 1537 पशु चिकित्सालय, 249 प्रथम

श्रेणी के पशु चिकित्सालय, 1880 उप पशु स्वास्थ्य

केन्द्र, राज्य स्तरीय रोग निदान केन्द्र, जयपुर, क्षेत्रीय

रोग निदान केन्द्र, अजमेर, कोटा, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर

एवं 27 जिला स्तरीय रोग निदान प्रयोगशालाएँ हैं।

Note रोग निरोधक टीका के उत्पादन हेतु प्रादेशिक

पशु चिकित्सा वैदिक इकाई →

जामडौली (जयपुर)

राज्य स्तरीय रेडियोलाजी इकाई →

अजमेर

जयपुर

~~वैदिक~~
→ क्षय रोग इकाईयाँ → जयपुर, कोटा, उदयपुर

→ रेबीज नियंत्रण इकाई → अजमेर, जयपुर

- वर्तमान राज्य में 14,865 गाँवों वंश इकाईयों पर एक पशु चिकित्सा संस्था कार्यरत है।

३. प्रशिक्षण केन्द्र →

निजी क्षेत्र में पशुधन सहायक प्रशिक्षण

केन्द्र →

1. बरमही (जयपुर)
2. ठाबर बम्होरी (कोटा)
3. झरपुर (जीधपुर)
4. बसैडी (धौलपुर)
5. उदयपुर

४. सहायक प्रशिक्षण विद्यालय

अजमेर, जयपुर, रूपवास, जीधपुर

राजस्थान राज्य पशुधन प्रबंध एवं प्रशिक्षण

संस्थान →
जामडौली (जयपुर)

→ पशु पोषाहार संस्थान → पशुओं व पक्षियों को सस्ता-
संतुलित व पोषित्वक आहार उपलब्ध कराने तथा
पशुओं की पोषाहार संबंधी समस्याओं के समाधान
के लिये जामडौली (जयपुर) में 1991 में पशु पोषाहार
संस्थान की स्थापना की गई।

4. राजस्थान पशुधन विकास बोर्ड →

इसकी स्थापना 25 March

1998 को जामडौली (जयपुर) में राजस्थान सारकारी अधि.
के तहत की गई।

→ प्रमुख उद्देश्य →

(i) पशुधन संसाधनों का सम्पूर्ण दोहन

(ii) पशुधन का संवर्धन एवं विकास

(iii) पशुपालकों के आर्थिक स्तर में वृद्धि

(iv) पशु उत्पादों में वृद्धि करना

5. राज्य गौ सेवा आयोग →

इसकी स्थापना राजस्थान गौ-

सेवा आयोग अधिनियम 1995 के तहत 23 March

1995 को जयपुर में की गई।

6. गौशाला विकास कार्यक्रम \Rightarrow

राज्य में वर्तमान में लगभग 192 पंजीकृत गौशालाएँ हैं, एवं दो गो खदान हैं।

↓
(i) दोसा

(ii) कोठमदेसर (बीकानेर)

एक शीर्ष खंरुया राजस्थान गौशाला पिंजरापोल (जयपुर) में स्थित है।

- राजस्थान की सभी गौशालाओं में पशुओं के इलाज, कृत्रिम गर्भाधान, टीकाकरण, चारा उत्पादन आदि कार्य किये जाते हैं।

7. एडमास योजना \Rightarrow

यह योजना भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा गाय व बैस के पशु रोगों की पहचान व निदान करने के उद्देश्य से 1 April 1999 में प्रारंभ की गई।

8. पशु चिकित्सा महाविद्यालय \Rightarrow

कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अधीन राज्य का एकमात्र पशु निदान व चिकित्सा महाविद्यालय बीकानेर में 16 August 1954 से संचालित है।

Note - राजस्थान में अन्य पशु चिकित्सा महाविद्यालय नाथदारा में खोला जायेगा।

Note

निजी क्षेत्र में राज्य का पहला पशु विज्ञान व चिकित्सा महाविद्यालय ⇒

अपॉलो कॉलेज ऑफ वेटनरी मेडिसिन, जयपुर 2002-03

Q:2. राजस्थान में भैंस व ऊन विकास को विस्तार से लिखो।

Ans. भारत में राजस्थान का भैंस व ऊन उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान है।

- राज्य में शुष्क एवं ~~धूमिल~~ अर्द्धशुष्क क्षेत्र भैंसपालन के लिए उपयुक्त हैं।
- प्रतिवर्ष राज्य को ऊन उत्पादन से 20 करोड़ रुपये तथा भैंसों के मांस से 100 करोड़ रुपये की आय होती है।
- राज्य में लगभग 2 लाख परिवारों के 20 लाख व्यक्ति भैंस पालन से जुड़े हुए हैं।
- 2007 की पशु गणना के अनुसार भैंसों की कुल संख्या 112.84 लाख है, जो देश की कुल भैंसों का 16.31% है।
- इस दृष्टि से राज्य का देश में दूसरा स्थान है।
- इस स्थान - आन्ध्र प्रदेश

* सरकार के निम्न प्रयास →

1. भंड. प्रजनन केन्द्रों की स्थापना
2. केन्द्रीय भंड. व ऊन अनुसंधान केन्द्र
3. केन्द्रीय ऊन विकास बोर्ड
4. भंड. व ऊन प्रशिक्षण संस्थान
5. संकर प्रजनन कार्य
6. केन्द्रीय ऊन विश्लेषण प्रयोगशाला
7. भंड. पालन प्रशिक्षण द्विविध कार्यक्रम

Q: → राजस्थान को त्रिदिशिक वितरण के आधार पर कितने पशु क्षेत्रों में बांटा गया है?

10 भागों में बांटा गया है →

Ans

1. उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र →

राठी → गाय की नस्ल

↓

जैसलमेर

बीकानेर

गंगानगर

2. दक्षिणी पश्चिमी क्षेत्र →

कांकरेज → गाय की नस्ल

↓

सिरोही

जालौर

पाली

3. पश्चिमी क्षेत्र \Rightarrow

थारपारकर

\Downarrow

जैसलमेर

वाडमेर

जौद्यपुर

4. उत्तरी नक्षी सिंचित भू-भाग \Rightarrow

गंगानगर

5. मह्यवती नागौर क्षेत्र \Rightarrow

नागौर, जौद्यपुर

नागौरी नरल (गाथ)

6. उत्तरी पूर्वी व पूर्वी क्षेत्र \Rightarrow

शेखावाटी क्षेत्र, जयपुर

गंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर

- मैवाती नरल

7. मैवात प्रदेश \Rightarrow

अलवर, भरतपुर, धौलपुर

8. रथ क्षेत्र \Rightarrow

अलवर, भरतपुर, धौलपुर

9. द. पूर्वी एवं दक्षिणी क्षेत्र \Rightarrow

मालवी नरल

10. द. पूर्वी मह्यवती क्षेत्र \Rightarrow

गीर / गिर नरल

1. गाय/ गौ वंश →

प्रमुख नस्लें →



मैव हरि का सारा माल गिरना था

- (i) मैवाली
- (ii) हरियाणवी
- (iii) कांकरज /]
- (iv) खांचौरी
- (v) राठी
- (vi) मालवी
- (vii) गीर / गिर
- (viii) नागौरी
- (ix) धारपाकर

Q: → गाय की द्विप्रयोजनीय नस्लें बताइये ।

Ans

बढ़ नस्लें जो दुग्ध उत्पादन व भार बहन दोनों की दृष्टि से उपयुक्त हो इसे द्विप्रयोजनीय नस्ल कहते हैं ।

- राजस्थान की प्रमुख द्विप्रयोजनीय नस्लें →

(i) गीर

(ii) कांकरज

(हरि G.K. दो बार पढ़ो)

(iii) हरियाणवी

Q:- राजस्थान की अधिक दुध देने वाली नस्लें?

Ans राजस्थान में मुख्यतः भागवाहक नस्ल पाई जाती है, किन्तु फिर भी कुछ देशी व विदेशी गौवंश की नस्लें दुग्ध उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं।

(i) राठी → राजस्थान की कामधेनु
↳ सर्वाधिक दुध

(ii) सांचीरी / कांकरेज

(iii) थारपारकर

(iv) हरियाणवी

इनके अलावा कुछ विदेशी नस्लें दुग्ध उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं →

जर्सी → अमेरिका

सेडडेन → अमेरिका

डॉलररीन → हॉलैंड की

Q:- राजस्थान में भार बहन की दृष्टि से गौवंश की सर्वश्रेष्ठ नस्लें कौनसी हैं?

Ans. नागौरी, मालवी, मैवाती, हरियाणवी, गीर, कांकरेज आदि गौवंश की नस्लें भार बहन एवं कृषि कार्यों के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं।

- इनमें से हरियाणवी गीर तथा कांकरेज द्विप्रयोगनीय हैं, अर्थात् भार बहन व दुग्ध उत्पादन दोनों के लिए प्रसिद्ध हैं।

1/08/14

✓ 2007 की पशु गणना के अनुसार देश में प्रथम स्थान M.P का है। एवं राजस्थान का गौ-सम्पदा की दृष्टि से देश में 7वां स्थान है।

1. धारपाशकर (धारी) ⇒ यह मूल स्थान पाकिस्तान के सिन्ध क्षेत्र व बाडमेर के मालानी क्षेत्र की है, लेकिन राज. में बाडमेर, जैसलमेर, जोधपुर, जालौर जिलों में पाई जाती है।

- यह मरुत, दुग्ध उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है, जो 11 से 12 लीटर दूध देती है।

- धारपाशकर गाय विकास एवं प्रजनन केन्द्र →
किसानगढ़
अजमेर

- प्रजनन केन्द्र → चाँदन गाँव (जैसलमेर)

- इसके लिए 'मल्लीनाथ पशुमेला' तिलवाड़ा (बाडमेर) प्रसिद्ध है।

2. जागीरी ⇒ इसकी उत्पत्ति जागीर के सुहालक क्षेत्र में मानी जाती है।

- यह मुख्यतः जागीर, पूर्वी जोधपुर एवं नाँखा (बीकानेर) में पाई जाती है।

- इस किसम के बैल दौड़ने में मुस्त, फुर्तीले, मजबूत एवं बेहतर भारवाहक व कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त होते हैं।

→ प्रसिद्ध मेला → परवतसर (नागौर)

→ प्रजनन केन्द्र → नागौर

→ बादवास गाँव (नागौर) नागौरी बिल के लिए प्रसिद्ध है।

3. मेवाती →

इसका उत्पत्ति क्षेत्र मेवाड़ क्षेत्र (अलवर) को माना जाता है।

- यह अलवर व भरतपुर में अधिक मिलती है।

- इस नस्ल के बिल भी आरवाहक होते हैं, लेकिन इस नस्ल की गाय कम दूध देती है।

→ प्रजनन केन्द्र → बरसी (जयपुर)

→ प्रसिद्ध मेला → जसवन्त पशुमेला (भरतपुर)

4. गिर / रेंडा / भजमेरा →

द्विप्रयोजनीय नस्ल

- मूल स्थान → सौराष्ट्र (गुजरात)

- यह राजस्थान में भजमेर, भीलवाड़ा, चित्तौड़, पाली व बीकानेर में पाई जाती है।

- यह दूध अधिक देती है, एवं इसके बिल भी प्रसिद्ध हैं।

→ प्रजनन केन्द्र → डुबा (झालावाड़)

5. राही →

राजस्थान की कामधेनु

- यह लाल सिंधी एवं साहिवाल नस्ल का मिश्रित रूप है।
- यह झींगानगर, बीकानेर, चुरु, जैसलमेर में पाई जाती है।
- यह राजस्थान की बगाय की सर्वश्रेष्ठ नस्ल है।
- इसका प्रजनन केन्द्र मीर (हनुमानगढ़) में है।

6. मालवी →

मूल स्थान → M.P. का मालवा क्षेत्र

- राजस्थान में कौरा, झालावाड, बांसवाडा, डूंगरपुर

उदयपुर

- प्रजनन केन्द्र → डग (झालावाड)
- प्रसिद्ध मैले → चन्द्रभागा (झालरापालन)
गौमती सागर (झालावाड)

5. ठरियाजवी →

मूल स्थान → शैतक, गुडगाँव, हिस्सार

- यह राजस्थान में सबसे अधिक क्षेत्र पर पाई जाती है, जो झींगानगर, हनुमानगढ़, चुरु, सीकर, लौक, जयपुर एवं पूर्वी बीकानेर में मिलती है।

→ प्रजनन केन्द्र → कुम्हेर (भरतपुर)

→ प्रसिद्ध मेले → जसवन्त पशु मेला (भरतपुर)

गौगाँमडी पशु मेला (रनुमानगढ़)

6. **कांकरज** →

इसकी उत्पाति गुजरात के कच्छ के खेत में मानी जाती है।

- यह पाखी, सिरोही, बाडमेर में मिलती है, एवं द्विप्रयोजनीय मरुत है।

→ प्रजनन केन्द्र → चौहलन (बाडमेर)

7. **सांचौरी** →

उत्पाति खयल → सांचौर (जालौर)

* गौवंडा से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य →

1. **गोपाल योजना** →

1989 - 90 में 10 जिलों में प्रारंभ की गई।

2. **कामधेनु योजना** →

1997 - 98

3. **गौरसेवा संघ** → अजमेर

4. **गौ अभयारण्य** → अजमेर संभाग प्रस्तावित है।

5. **गौमुत्र बैंक** → सांचौर (जालौर)

→ गाय का प्रथम संबर्द्धन फार्म/वीर्य बैंक → बरसी (जयपुर)

→ दूसरा गौवंश संबर्द्धन फार्म → जोधपुर

Note
गाय के अस्थि रूप से ३० एवं स्थि रूप से ३२
कांत होते हैं।

→ गाय का मांस → वीफ

भैंस

→ देश में प्रथम स्थान U.P. का, दूसरा आन्ध्रप्रदेश
का तथा तीसरा स्थान राजस्थान का है →
२००७ की जनगणना

- राजस्थान में सर्वाधिक भैंस → अलवर, जयपुर

- न्यूनतम → जैसलमेर

→ भैंस की सर्वोत्तम नस्ल → मुरी

→ परा व मुना बजा शूर में ^{Prises} → मैहसाना

- पण्डरपुरी बदावरी

राबी जाफरावादी

मुरी शूरती

नागपुरी रथ

१. मुरी (खुंडी) → यह राजस्थान में अलवर, भरतपुर,

जयपुर, दौसा, बीरगंजानगर, सवाईमाधोपुर

- प्रजनन केन्द्र → कुम्हेर (भरतपुर)
- प्रसिद्ध मेला → बहरौड पशु मेला (अलवर)
- दूध में बसा की मात्रा ⇒ 7.8 %

३. जाफरावादी →

मूल स्थान → काठियावाड (गुजरात)

- यह सर्वाधिक अकितशाही मरुल है, एवं राजस्थान में गुजरात के सीमावर्ती जिलों में पाई जाती है।

३. बदावरी →

मूल स्थान → U.P.

- इसके दूध में सर्वाधिक बसा की मात्रा होती है।

Note

केन्द्रीय और प्रजनन एवं अनुसंधान केन्द्र →

वल्लभनगर (इंदौर)

→ मुरी अनुसंधान व प्रजनन केन्द्र → कुम्हेर (भरतपुर)

भैंस

- देश में प्रथम स्थान → झारखण्ड
दूसरा स्थान → राजस्थान

→ सर्वाधिक भैंस → बाड़मेर

न्यूनतम भैंस → छौलपुर

→ भैंस व ऊन विभाग की स्थापना → 1963

* जरूल →

मामा बाग में शौना है चौखे पूजे
↓
मारवाडी बागडी सौनाडी चौकला बगल
मालपुरी मगरा नाली जैसलमेरी

1. मालपुरी →

जयपुर, टोंक, करौली, सवाईमाधोपुर
भजमेर, भीलवाडा ।

- इसकी ऊन सर्वाधिक बारीक व मुलायम होती है। यह गल्मिचे व जमड़े बनाने में प्रयुक्त होती है।

- इसका प्रजनन व अनुसंधान केंद्र जयपुर में है, एवं यह प्रतिवर्ष 0 1/2 Kg. ऊन देती है।

2. मगरा ⇒

इसे बिकानेरी चौकला भी कहा जाता है।

- यह माँस के लिए प्रसिद्ध है।

3. चौकला ⇒

ढोखावाली क्षेत्र

- इसे भारत की मैरिनो कहा जाता है।

- यह भेड़ की सर्वोत्तम नस्ल है।

→ मैरिनो → ऑस्ट्रेलिया

- यह भेड़ सर्वोत्तम किरम की छन

- इसका प्रजनन व अनुसंधान केन्द्र → कोडमदेसर
बिकानेर

4. पूगल →

बिकानेर

- प्रजनन व अनुसंधान केन्द्र → बिकानेर

5. सौनाडी →

द्वि प्रयोजनीय नस्ल

- बांसवाडा, भीलवाडा, चित्तौड़, डूंगरपुर, राजसमंद

उदयपुर

- इसके कान बहुत लम्बे होते हैं, जो थकते

समय जमीन को स्पष्ट करते हैं।

प्रजनन व अनुसंधान केंद्र → चितौड़गढ़

6. जैसलमेरी →

राजस्थान में सबसे अधिक ऊन देने वाली नस्ल है।

- प्रतिवर्ष 4 Kg. ऊन देती है।

- प्रजनन व अनुसंधान केंद्र → पौकरण (जैसलमेर)
मण्डौर (जोधपुर)

7. नाली →

गंगानगर, हनुमानगढ़

- इसकी ऊन का रेशा सर्वाधिक लम्बा होता है।

- प्रजनन व अनुसंधान केंद्र → हनुमानगढ़

8. मारवाड़ी →

कुल भेड़ों का 50% है।

- इस भेड़ की सबसे अधिक रंग प्रतिरोधक क्षमता होती है। एवं सबसे अधिक डूबी तय करने वाली नस्ल है।

- प्रजनन व अनुसंधान केंद्र → जोधपुर

* भेड़ सम्पदा या भेड़ों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य →

→ भेड़ का मांस → मटन

→ केंद्रीय भेड़ एवं अनुसंधान संस्थान → अठिकानगर
↓
1962 (एक)

→ केंद्रीय ऊन विकास बोर्ड → जोधपुर (1987A.P.)

→ केन्द्रीय ऊन विश्लेषण प्रयोगशाला → बीकानेर

→ भेड़ प्रजनन फार्म → झुजानगढ़ (चुरु)

अविकानगर (टोंक)

→ सर्वाधिक ठन उत्पादन जिले → नौदपुर
बीकानेर
नागौर

न्यूनतम → इनाहावाड

→ ऊन की एशिया की सबसे बड़ी मण्डी → बीकानेर

- देश में ऊन उत्पादन में राजस्थान का प्रथम स्थान है
(40%)

- राजस्थान में सर्वाधिक पीली ऊन का उत्पादन होता है।

बकरी

- देश में सर्वाधिक बकरी राजस्थान में पड़ी जाती है,
एवं राजस्थान में सबसे अधिक पाया जाने वाला
पशु है।

- सर्वाधिक बकरी → बाड़मेर

न्यूनतम बकरी → धौलपुर

* उपनाम → गरीब की गाय

शेगिस्तान का चलता - फिरता फ्रिज

जब स्त्री मार डौली पर
 अलवरी \rightarrow सिरोही शैखावाडी परबतसरी
 जमनापरी मारवाडी लौही
 वरवरी

1. मारवाडी \rightarrow

द्विप्रयोजनीय जस्त

\downarrow

दूध + मांस

- राजस्थान के बीकानेर, चुरु, जैसलमेर, बाडमेर,

जालौर, पाली, गंगानगर, हनुमानगढ़

- राजस्थान में इत जस्त की बकरी सर्वाधिक
 मानी जाती हैं।

2. शैखावाली \rightarrow

स्तीकर, झुन्झुनु

- बिना सिंग एकमात्र बकरी

3. जखराना \rightarrow

बहरौड (अलवर)

- राजस्थान में सबसे अधिक दूध के लिए प्रसिद्ध

\rightarrow 6-8 लीटर

4. वरवरी \rightarrow

सर्वाधिक सुन्दर बकरी, सर्वाधिक प्रजनन

क्षमता वाली जस्त।

खवाई माधौपुर, करौली, धौलपुर, भरतपुर

ह. खिरौली →

खिरौली, जालौर, छदयपुर, भजमेर

- मांस उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।

Note

केन्द्रीय बकरी अनुसंधान व प्रजनन केन्द्र →

भविनगर (झुंझ)

- बकरी प्रजनन फार्म व चारा विकास केन्द्र →
रामसर (भजमेर)

ऊँट

- देश में सर्वाधिक ऊँट → राजस्थान (81.6%)

- सर्वाधिक ऊँट → बाड़मेर

न्यूनतम ऊँट → धौलपुर

→ शेरिस्तान का जहाज

(गौबी देना जी)

गौमह

नाचना

बीकानेरी

जैसलमेरी

1. जैसलमेरी \Rightarrow सर्वोत्तम नरुल

- जैसलमेर, बाडमेर, जोधपुर

- यह मरुस्थल में तेज दौड़ने व सवारी के लिए प्रसिद्ध है।

2. बीकानेरी \Rightarrow

सबसे भारी नरुल

- राजस्थान में 50% ऊँट इतनी नरुल के पाये जाते हैं।

- यह भार वहन करने, गाड़ी चराने एवं हल चलाने में सर्वाधिक उपयुक्त है।

3. गौमठ \Rightarrow

फलोंदी (जोधपुर)

- सवारी के लिए प्रसिद्ध

4. नाचना \Rightarrow

जैसलमेर

- सुन्दरता के लिए पूरे भारत में प्रसिद्ध है।

Note \rightarrow ऊँट के दूध का उपयोग \rightarrow मधुमेह (डायबिटीज)
छत्तीहा रोग

* ऊँट का रोग \Rightarrow सररी

तिबरनी

\rightarrow ऊँट का बच्चा \rightarrow लौरड़ी

\rightarrow ऊँट पालक जाति \Rightarrow शइका / रैंबारी

\rightarrow ऊँटों का देवता \rightarrow पावुजी

→ राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केन्द्र → जोड़बीड़
(बीकानेर)

5 July 1984

- भारत की प्रथम डेयरी निलंब डेयरी → जोड़बीड़
बीकानेर

अश्व सम्पदा / घोड़े

→ भारत में सर्वाधिक → जम्मू कश्मीर

- राजस्थान में सर्वाधिक → बाड़मेर

- यूनतम → बांसवाड़ा

* मालाणी → घोड़े की सर्वोत्तम नस्ल, जो मुख्य रूप से सिवाना व गौडा मालाणी (बाड़मेर) में पाई जाती है।

- ये घोड़े कलावाजियों के लिए दैरा में प्रसिद्ध हैं।

* मारवाडी →

बीकानेर, जोधपुर, जालौर

- तेज दौड़ने के लिए प्रसिद्ध

* काठियावाडी →

राज्य के सीमावर्ती जिलों में

(पाकिस्तान की सीमा)

→ राज्य में गधों का अभयारण्य →
झुन्झुनू में प्रस्तावित

कुक्कुट सन्पत्ति

- सर्वाधिक → अजमेर
- न्यूनतम → धौलपुर
- मूर्गे का मांस → चिकन
- राष्ट्रीय मूर्गी बीज उत्पादन फार्म → भीमपुर (बांसवाड़ा)

शुभर

- शुभर का मांस → गोष्ठ
- देश में सबसे अधिक शुभर → असम
- राज्य में सबसे अधिक → भरतपुर
- सबसे कम → खिरौली

* पशुओं से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

→ अमूल डेयरी संघ → गुजरात

→ राजस्थान के चार पशु आहार संयंत्र →

झोताडा (जयपुर)

नदवई (भरतपुर)

तबीजी (अजमेर)

जोधपुर

* राजस्थान की सबसे पुरानी डेयरी → पद्मा डेयरी 1910
(ब्यावर, धजमेर)

- राज्य की सबसे बड़ी डेयरी → शनीबाड़ा डेयरी (जालौर)

→ दुग्ध विज्ञान महाविद्यालय → महाबाणा प्रताप कृषि महा-
विद्यालय, उदयपुर

→ राज्य का सबसे बड़ा दुग्ध पैकिंग केन्द्र → जयपुर

→ श्वेत क्रांति | भौंपरेशान फ्लड ⇒
दुग्ध उत्पादन से संबंधित



जनक → वर्गीज कुरियन

→ पशु पौधाहार संस्थान → जामडौली (जयपुर)

- प्रदेश का पहला मत्स्य अभयाश्रय → बड़ी तालाब
(उदयपुर)

- राज्य का एकमात्र पक्षी चिकित्सालय → जौहरी बाजार
(जयपुर)

* पशुओं के प्रमुख रोग ⇒

1. बकरी → गॉट पाँक्स

2. भैंस → ब्लू रंग

फडकिया

3. सूअर → स्टाइन फीवर

4. भूगी → शनीखेत

5. गाय व भैंस → मुँह पका, खुरपका

Note →
बर्डफ्लू नामक रोग मूर्गियों से फैलता है।

↓
Virus → H₅ N₁

स्वाइन फ्लू नामक रोग सूअरों से फैलता है।

↓
Virus → H₁ N₁

② राजस्थान में ऊर्जा संरक्षण 4/8/14 ①

→ 14 दिसम्बर

* देश का प्रथम बल विद्युत गृह → 1897 को दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल)

* दूसरा बल विद्युत गृह → 1902 में शिवसमुद्र (कनक) कबिरी नदी पर)

* विद्युत आपूर्ति अधि. → 1948 (स्वतंत्रता के बाद)

* विद्युत/ऊर्जा को समवर्ती सूची में शामिल किया गया है

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय राज्य में 15 विद्युत गृह थे। (कुल उत्पादन - 1227 मेघावाट)

↓ 26 शहरों और 16 गाँवों को विद्युत प्रदत्त

1 जुलाई 1957 को " राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल (RSEB) स्थापना

* राज्य में विद्युत उत्पादन में निजी सहभागिता 1991 से प्रारम्भ हुई।

* विद्युत नियामक आयोग अधिनियम - 1998

* विद्युत वितरण निगम → 16 जुलाई 1986

* राजस्थान विद्युत नियामक आयोग → 2 जनवरी 2000

↓ प्रथम अध्यक्ष - श्री अरुण कुमार

NOTE → 19 जुलाई 2000 को राजस्थान विद्युत क्षेत्र
(Rajasthan power Sector Reforms Transfer
Scheme) - 2000 जारी की गई

जिसके तहत राज्य विद्युत मण्डल को विभाजित कर 5 कंपनियों
के रूप में गठित कर दिया गया।

① राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड → जयपुर

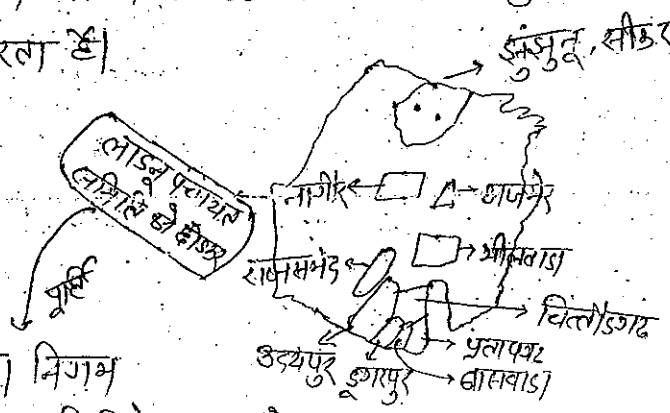
↓ कार्य → राज्य विद्युत मण्डल द्वारा टरन्समिशन समी परि. पर
नियंत्रण रखना और राज्य में विद्युत उत्पादन के लिए
उत्तरदायी है।

② राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड → जयपुर

↓ इस निगम द्वारा 400 k.v, 220 के.वी, 132 के.वी.
विद्युत प्रसारण संबंधी लाइनों, सब स्टेशनों का निर्माण

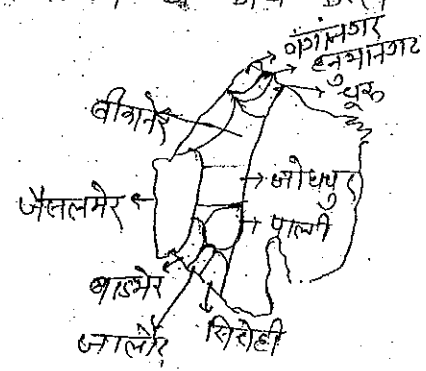
③ अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड → अजमेर

↓ यह निगम राज्य के 11 जिलों में विद्युत वितरण का कार्य करता है।



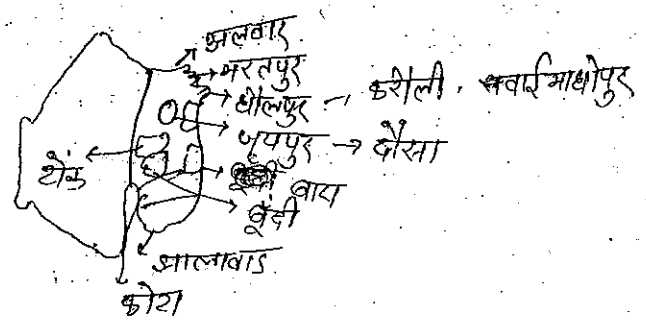
④ जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड → जोधपुर

↓ इस निगम के माध्यम से राज्य उत्तरी व पश्चिमी क्षेत्र के 10 जिलों में विद्युत वितरण का कार्य करता है।



⑤ जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड → जयपुर

↓ यह निगम राज्य के 12 जिलों को विद्युत आपूर्ति करता है।



Note → विद्युत दुर्घटना में किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर 25 हजार रुपये से वरकर 2 लाख 50 हजार कर दी है।

* ऊर्जा के मुख्य स्रोत *

↓ ऊर्जा प्राप्ति के मुख्यतः दो स्रोत माने जाते हैं।

① परम्परागत ऊर्जा स्रोत → ऊर्जा के वे स्रोत जिनका एक बार उपयोग करने के बाद पुनः उपयोग नही ले सकते

① जल विद्युत

② तापीय विद्युत

↳ कोयला, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस

③ आणविक ऊर्जा → इनके भण्डार सीमित होते हैं।

② नवीन परम्परागत ऊर्जा स्रोत / नवीकरणीय स्रोत

↓ ऊर्जा के वे स्रोत जिनका एक बार उपयोग करने के बाद पुनः उपयोग ले सकते और पुनः उनसे ऊर्जा प्राप्त की जा सके। इनके भण्डार असिमित होते हैं।

① सौर ऊर्जा → सूर्य के प्रकाश से

② पवन ऊर्जा →

③ वायोर्गेस ऊर्जा → जानवरों के अवशिष्ट पदार्थों के अपघटन से

④ बायोमास ऊर्जा → कचरा, धान की भूसी एवं सरसो की भूसी से

⑤ ज्वारीय तरंग ऊर्जा → समुद्री तरंगों एवं ज्वारभाटे से उत्पन्न

⑥ भू तापीय ऊर्जा →

↳ सर्वाधिक संभावना - माउण्ट आबू

- ① तापीय ऊर्जा → 5138.88 MV
- ② जल विद्युत → 1498.66 MV
- ③ जैसीय ऊर्जा → 664.60 MV
- ④ परमाणु ऊर्जा → 556.74 MV
- ⑤ पवन ऊर्जा → 1825.99 M.V
- ⑥ वायोमास ऊर्जा → 91.30 M.V
- ⑦ सौर ऊर्जा → 54.30 M.V

NOTE → राज्य की सर्वाधिक ऊर्जा तापीय ऊर्जा के स्रोतों से प्राप्त होती है।

राजस्थान की ऊर्जा परियोजनाएँ

① राज्य की जल विद्युत परियोजनाएँ →

1974 → राष्ट्रीय जल विद्युत ऊर्जा निगम → 1975

② भांझा नांगल परियोजना

↓
राजस्थान, पंजाब, हरियाणा की मिश्रित परि०
कुल उत्पादन → 1493 MV
राजस्थान को → 227.3 MV (15.2% हिस्सा)

③ व्यास परियोजना

↓
पंजाब, राजस्थान, हरियाणा (व्यास नदी पर)
इस परि० से राज० को सर्वाधिक (433.64 MV) विद्युत प्राप्त होगी।
पंडोह व पोंग बांध

2 विद्युत कृष्ट

- ① 384 MV → राज्य का हिस्सा 69%
- ② 990 MV → " " 20%

④

माही परियोजना

↓
राजस्थान, गुजरात (1 नव 1983 को प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी द्वारा प्रारंभ)
140 MV → राजस्थान का हिस्सा 100%

$$23 \times 5 = 115$$

$$43 \times 4 = 172$$

$$33 \times 3 = 99$$

$$\underline{386}$$

⑤

धन्वल परियोजना

↓
राजस्थान व MP
50 : 50
कुल विद्युत उत्पादन → 386 MV

$$\text{गाँधीसागर बाँध} - 35 \times 5 = 175$$

$$\text{राणा प्रताप सागर} - 43 \times 4 = 172$$

$$\text{जवाहर सागर बाँध} - 33 \times 3 = 99$$

$$\underline{386}$$

193

राज०

193

MP

$$35 \times 5 = 175$$

$$43 \times 4 = 172$$

$$33 \times 3 = 99$$

$$\underline{403}$$

$$35$$

$$\underline{368}$$

⑥

इन्दिरा गाँधी नहर परि०

↓
पंजाब, हरियाणा, राजस्थान
अनूपगढ व सुरतगढ

28.85 MV विद्युत

⑥ डरी अल विद्युत परि० → जम्मू कश्मीर के वारामूला क्षेत्र में

↓ कुल उत्पादन → 480 MV

↓ 43.008 (8.96%) राज्य का हिस्सा

⑦ सलाल अल विद्युत परि० → जम्मू कश्मीर के उधमपुर नामक स्थान पर संचालित

↓ कुल विद्युत उत्पादन

690 → राज० का हिस्सा 8.96%

⑧ पुलखस्ती अल विद्युत परि० → जम्मू कश्मीर के डोड़ा नामक स्थान पर

↓ कुल विद्युत उत्पादन

390 MV - 18.88% (42.42 MV) राजस्थान का हिस्सा

⑨ थनकपुर अल विद्युत परि० → उत्तराखण्ड के वम्बाशा नामक स्थान पर

↓ कुल क्षमता → 94 MV

↓ 10.861 MV राज० का हिस्सा (11.53%)

⑩ टिहरी अल विद्युत परि० → राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड (सुसुडेजब्योग)

↓ कुल क्षमता - 2400 MV

↓ 7.5% (75 MV) राज्य का हिस्सा

⑪ धोलीगंगा अल विद्युत परि०

↓ → उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ में संचालित

↓ कुल उत्पादन - 280 MV

↓ 27 MV राजस्थान को प्राप्त (9.64%)

⑫ कोल बाँध अल विद्युत परि०

↓ → हिमाचल प्रदेश, राज० श्री शांसेवासी

↓ कुल विद्युत उत्पादन क्षमता → 800 MV

⑬ चमेरा अल विद्युत परि० → हिमाचल प्रदेश के चंका नामक स्थान पर

↓ कुल क्षमता → 840 MV

↓ 134.85 MV राजस्थान को प्राप्त (8.60%)

- (14) पार्वती पन जल विद्युत परि० → हिमाचल प्रदेश के कुल्लू में
↓ कुल क्षमता → 2051 MW → 282 मेघावाट राजस्थान को प्राप्त
- (15) जाखम बांध लघु पन जल विद्युत परि० → प्रतापगढ़ जिले में जाखम बांध पर
↓ 275 मेघावाट की दो लघु पन विद्युत परि०
- (16) अनास जल विद्युत परि० → वाँसवाड़ा जिले में अनास व हरण नदियों पर बांध काटने
↓ कुल क्षमता → 45 मेघावाट
- (17) राहुघाट जल विद्युत परि० → राजस्थान व मध्य प्रदेश
↓ 50 : 50
कुल क्षमता = 270 मेघावाट
- (18) नाथपा - झाकरी जल विद्युत परि० → सतलज नदी पर (हिमाचल प्रदेश)
↓ कुल क्षमता - 1500 MW
↓ 112 मेघावाट (7.47%) राजस्थान
- (9) तालापन जल विद्युत परि० → राजस्थान और भूटान की संयुक्त परि०
↓ 57.685 MW विलियम यूनिट विद्युत प्राप्त होती है

(3) राज्य की ताप विद्युत परियोजनाएँ

* राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम → 1975

तीन भागों में बाँटा गया है।

- ① जल एवं जलवाष्प पर आधारित
- ② कोयले पर आधारित
- ③ गैस व खनिज तेल पर आधारित परि०

(A) जल एवं जलवाष्प पर आधारित योजनाएँ

1) सिंगरौली परियोजना → राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम (NTPC) द्वारा
उत्तर प्रदेश में प्रारंभ की गई थी 1989 में पूर्ण
↓
कुल विद्युत उत्पादन → 2000 MW
↓ 300 MW राज्य को आपूर्ति

2) कोटा सुपर तापीय विद्युत परि०

राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा थर्मल पावर स्टेशन
↓ 1240 मेघावाट क्षमता वाला परि० की स्थापना 1978
चम्बल नदी पर

NOTE 31 अगस्त 2009 को इस परि० की 195 मेघावाट क्षमता वाली
7 वी इकाई से उत्पादन कार्य प्रारंभ

3) रिहंद परियोजना

→ NTPC द्वारा UP के पीपरी नामक स्थान पर
↓ इससे राजस्थान को प्रथम चरण → 95 मेघावाट
द्वितीय चरण → 100 मेघावाट

4) सतपुड़ा परि०

→ मध्य प्रदेश
कुल उत्पादन = 312.5 मेघावाट
राज्य का अंश = 40 प्रतिशत (125 मेघावाट)

5) ऊंचाहार ताप विद्युत परि० = उत्तर प्रदेश

कुल क्षमता = 1010 MW
↓ 81 मेघावाट राजस्थान को

6) सूरतगढ़ सुपर ताप विद्युत परि०

↓ यह राजस्थान का प्रथम सुपर थर्मल पावर स्टेशन है।
राजस्थान को सर्वाधिक विद्युत आपूर्ति इसी से होती है।
कुल इकाई = 250 x 6 = 1500 मेघावाट

7 वी, 8 वी - 660-660 = 1320 मेघावाट स्थापित होने के बाद

विद्युत उत्पादन क्षमता = 2820 मेघावाट हो जायेगी

⑧ कोयले पर आधारित विद्युत परि०

राज्य में सर्वाधिक लिग्नाइट किस्म का कोयला पाया जाता है।

राज्य में सर्वाधिक लिग्नाइट कोयला → ① कूपरडी (वाडनैर)

② गुदा (वीडनैर)

③ मेड़ता क्षेत्र (नागौर)

④ पलाना (वीडनैर)

राज्य का सर्वोत्कृष्ट लिग्नाइट कोयला है।

① छक्का सुपर क्रिटिकल थर्मल पावर प्रोजेक्ट

→ मोतीपुरा ग्राम (छक्का तह. वारा)

प्रथम चरण → 8 दिसम्बर 2005 मुख्यमंत्री श्रीमती कमलेश्वरी राजे

↓ दो इकाईयाँ - 250 - 250 MW

* NOTE → यह राज्य का तीसरा सुपर तापीय विद्युत गृह है।

कुल विद्युत उत्पादन - 2320 मेगावाट

② कालीसिंधु तापीय विद्युत परियोजना

→ उड्डेल ग्राम (झालावाड)

3 सितम्बर 2008 परमेश्वरी राजे

③ गिरल थर्मल पावर स्टेशन

→ गिरल के समीप धुम्कली (वाडनैर)

भारत के सहयोग से "राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम"

के द्वारा राज्य व देश का पहला लिग्नाइट जेनरीकरण तकनीक

पर आधारित 1000 मेगावाट का विद्युत गृह

④ बरसिंहसर थर्मल पावर परियोजना

→ बरसिंहसर (वीडनैर)

↳ स्थापना = 1987

⑤ कूपरडी व जालिया थर्मल पावर परियोजना

→ वाडनैर

कूपरडी

जालिया

250 x 2

250 x 4

= 500 MW

= 1000 MW

(vi) भादेसर लिग्नाइट सुपर थर्मल पावर योजना → भादेसर (वाडमेर) ⑤

वाडमेर लिग्नाइट माइनिंग कम्पनी लिमिटेड (राज० की प्रथम ऊर्जा उत्पादन कम्पनी)

द्वारा भादेसर (वाडमेर) में 1000 मेगावाट का प्लांट लगाया गया

(c) गैस व तरल ईंधन पर आधारित परि०

राज० में देश का पहला भूमिगत गैस विजलीघर - मेडला रोड (नगौर)

(i) रामगढ़ गैस परियोजना → जैसलमेर

यह राजस्थान की प्रथम गैस आधारित परि० है।

(ii) अन्तर्गैस विद्युत परियोजना → वाराणसी

राजस्थान में स्थापित
प्रथम गैस परि० है।

राष्ट्रीय ताप विद्युत ग्रह (NTPC) द्वारा संचालित उद्देश्य परियोजना है।

इसे गैस आपूर्ति - हजीरा - जयपुर - वीणापुर - जगदीशपुर (H-B-J) लाइन द्वारा की जाती है।

(iii) केशोरगढ़ गैस विद्युत परि० → वृद्धी

1000 मेगावाट वाला निजी क्षेत्र में

(iv) आमर कोट गैस परि० → उदयपुर

(v) औरैया गैस विद्युत परि० → उत्तर प्रदेश

राजस्थान को 9.2% प्रदान होगा है।

(vi) धौलपुर गैस क्वांटड साइक्लिक पावर प्लांट - धौलपुर

③ राज्य की आर्थिक विद्युत परियोजना

① राजस्थान परमाणु शक्ति गृह | शकलभाट एटोमिड पावर प्लाण्ट
→ शकलभाट (चित्तौड़गढ़)

↳ संचालन → नाभिकीय ऊर्जा निगम द्वारा (NPC)

सहयोग → कनाडा के सहयोग से 1965 में स्थापित देश का दूसरा एवं राज्य का पहला परमाणु विद्युत गृह है। उत्पादन 1972 को प्रारंभ हुआ।

NOTE → देश का प्रथम परमाणु विद्युत गृह → तारापुर (महाराष्ट्र)

कुल उत्पादन क्षमता → 1280 मेगावाट (30% राज्य की प्राप्ति)

NOTE → यह विद्युत गृह भारी पानी (D₂O) किस्म के रिक्टरों की श्रृंखला में देश में प्रथम स्थान रखता है।

* यहाँ देश का न्यूक्लियर पार्क बनाया जायेगा।

NOTE → भारत में भारी पानी के अन्तर्गत → एस. फरीदुद्दीन (पश्चिमी)

② नरौरा परमाणु शक्ति गृह → उत्तरप्रदेश (नरौरा)

कुल क्षमता → 400 मेगावाट (9.2% राज्य की हिस्सा)

देश का चौथा परमाणु विद्युत गृह

राज्य में ऊर्जा के जैव परम्परागत स्रोत

6

राज्य में जैव परम्परागत ऊर्जा स्रोतों के विकास की प्रमुख एजेंसी

① राजस्थान स्टेट पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड → (RSPCL)

↓ स्थापना - 1995

२००२ में इस संस्था का विलय "राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम" में कर दिया गया

② राजस्थान ऊर्जा विकास अभिकरण (REDA)

↓ स्थापना - 21 जनवरी 1985 को

२००२ में राज. ऊर्जा अक्षय ऊर्जा निगम में विलय

③ राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम

→ RSPCL और REDA को मिलाकर

अगस्त २००२ में स्थापना की गई

NOTE → इस निगम द्वारा 1 मेगावाट की सौर ऊर्जा परि. फाजी (जयपुर) में स्थापित की जा रही है।

सौर ऊर्जा नीति

प्रथम सौर ऊर्जा नीति - 13 अप्रैल 2011

* राज. देश का प्रथम राज्य है जहाँ सौर ऊर्जा नीति को मंजूरी दी गई है।

① राज्य का पहला सौर ऊर्जा पर आधारित फ्रिज → कालेसर (जोधपुर)

② राज्य में पहला खारे पानी से मीठे पानी में बदलने के लिए सौर ऊर्जा पर आधारित संयंत्र → भालेरी गाँव (चूरु)

③ राज्य का पहला पूर्णतया सौर ऊर्जा से संचालित टी.वी. रिले केन्द्र

→ रावतभावा (चित्तौड़)

④ राज्य का पहला पूर्ण रूप से सौर ऊर्जा से विद्युतीकृत गाँव

→ नयागाँव (जयपुर)

⑤ राज्य में सौर ऊर्जा से संचालित सबसे बड़ा वाटर हीटर बिस्स

- ⑦ राज्य का पहला पूर्णतया सौर ऊर्जा से संचालित रेल्वे स्टेशन
→ गौरमघाट (रेल्वे स्टेशन)
अजमेर अण्डाल
- ⑧ राज्य का पहला सौर ऊर्जा पर आधारित मिल्ड चिलिंग प्लांट
→ भरतपुर
- ⑨ राज्य का पहला सौर ऊर्जा से संचालित ए. टी. एम
→ मनोहरपुरा (जयपुर)
- ⑩ राज्य का पहला सौर ऊर्जा पर आधारित विद्युत संयंत्र
→ मथानिया (जोधपुर)
- ⑪ अवाधरलाल नेहरू राष्ट्रीय सौर ऊर्जा मिशन के तहत सौर बाई
कक्षां स्थापित किये जायेंगे → जोधपुर, जैसलमेर
- ⑫ सौर ऊर्जा से सम्बन्धित शोध का विकास के लिए सबसे बृहत्तर जिला
→ जोधपुर
↓
आई. आर. टी. को फ़ाय के सहयोग से
"सौर ऊर्जा शोध केन्द्र" के रूप में विकसित
किया गया है।

पवन ऊर्जा

- * पवन ऊर्जा उत्पादन हेतु न्यूनतम 20 Km घंटा की गति से चलने वाली हवा की आवश्यकता होती है।
- ① भारत में सर्वाधिक पवन ऊर्जा का उत्पादन तमिलनाडु में जवदि राज्य का देश में चौथा स्थान है।
 - ② राजस्थान में पहला पवन ऊर्जा संयंत्र अमर सागर (जैसलमेर) में "राज. स्टेट पावर कॉर्पोरेशन" द्वारा निर्मित है। जहाँ 2 मेगावाट विद्युत का उत्पादन किया जाता है।
लोकार्षण → 21 अक्टूबर 1999
 - ③ राज्य सबसे बड़ा पवन ऊर्जा संयंत्र → रनोदा बंधन (जैसलमेर) 25 मेगावाट
दूसरा बड़ा → हर्ष पर्वत (सीकर) 12 मेगावाट

3

वायोमास

26 फरवरी 2010 को घोषित इस नीति में राज्य में 360 मेगावाट से अधिक उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है।

1) राज्य का पहला वायोमास आधारित संयंत्र → पद्मपुर (गंगानगर)
7 मेगावाट

2) हाड़ौती में पहला वायोमास संयंत्र → रंगपुर (कोटा)

3) ऊँचरे से विजली बनाने का पहला संयंत्र → जयपुर

4) विलायती बकुल से विजली बनाने का संयंत्र → जोला वाँस (अजमेर)

5) राज्य में सबसे पहले अजमेर जिले में सम्पूर्ण ग्राम विद्युतीकृत हुए।

6) राज्य में विजली उत्पादन में प्रथम स्थान → बीकानेर

7) 2009 का आइमा पावर अवार्ड → राज. अक्षय ऊर्जा निगम

8) राज्य का दूसरा परमाणु विजलीघर कहां बनाया जा रहा है → रवींस्वर (नगौर)

9) राज्य में प्रथम सरलों की रोल पर आधारित विजलीघर → श्वेडली (जलवर)

10) राज्य का आधुनिक तीर्थ स्थल → सूरतगढ़ सुपर थर्मल पावर संयंत्र

11) राजस्थान में वर्तमान में चार क्रिटिकल सुपर थर्मल पावर प्लांट

क्रिटिकल = 500 मेगावाट

9) सूरतगढ़ → गंगानगर 3) हवड़ा → बाँरा

8) वांसवाड़ा

4) कालीसिंध - झालावाड़

12) राज्य में प्रथम सौर ऊर्जा-चालित नाँव → पिछोला झील में

13) सबसे बड़ी सौर वैद्यशाला → फतेह सागर झील (उदयपुर)

↓
नवीनतम सौर वैद्यशाला → मथानिया (जोधपुर)

14) प्रदेश में प्रथम कम्प्यूटरीकृत 400 किलोवाट ग्रिड सब-स्टेशन

→ हिम्मतसागर गाँव (बीकानेर)

15) प्रदेश में पहले मानव रहित स्वयंचालित 33/11 के.वी. ग्रिड सब स्टेशन का

→ 16 अक्टूबर 2009 जोधपुर

प्रा. ध्य

16) SEEZ जिले → भैंसलमेर - वाडमेर - जोधपुर
(Solar Energy Enterprising Zone)

17) राष्ट्रीय का सबसे ऊँचा टी. वी टावर → रामगढ़ (भैंसलमेर)

18) राज्य में सौर ऊर्जा का सर्वाधिक उत्पादन → जोधपुर
पवन ऊर्जा का सर्वाधिक उत्पादन → भैंसलमेर
वायोगैस का सर्वाधिक उत्पादन → उदयपुर